ISSN 2349-6614

फरवरी 2021

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

ट्रम्प की जिद से लोकतंत्र शर्मसार

बाइडेन ने सत्ता संभालते ही पलटे ट्रम्प के कई फैसले

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 18 अंक 10 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-2023 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI NO. RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Chetak Circle, Udaipur

अर्थ डायग्नोस्टिक्स
Meaningful Authentic & Dedicated

No. 1 क्वालिटी में सर्वोत्तम

राजस्थान में
पहली बार अत्याधुनिक
INBORE TECHNOLOGY
द्वारा MRI
3D, डिजिटल, साइलेंट एवं
हाई रेज़ूलूशन MRI

MRI With Artificial Intelligence

एडवांस तकनीक उच्च क्वालिटी तथा पूर्णतया सुरक्षित

क्या है INBORE TECHNOLOGY ?
- MRI की घुटन, आवाज तथा डर से छुटकारा (No claustrophobia)
- MRI के समय देख सकते है- मूवी, गाने, कार्टून इत्यादि
- MRI With Entertainment
- कम समय में हाई क्वालिटी रिपोर्ट

अत्याधुनिक तकनीक से सुसज्जित लेब | अनुभवी समर्पित विशेषज्ञों की टीम

3 डी / 4 डी सोनोग्राफी
रंगीन अल्ट्रासाउंड एवं
लेटेस्ट एडवांस टेक्नोलॉजी

- सभी प्रकार की जटिल सोनोग्राफी के लिये उपयोगी
- गर्भवती महिलाओं के लिए पूर्णतया सुरक्षित
- बेस्ट क्वालिटी इमेज

- सभी प्रकार की रक्त जाँचे
- डिजिटल एक्स - रे
- एडवांस्ड CT स्केन

एडवांस तकनीक उच्च क्वालिटी तथा पूर्णतया सुरक्षित

घर से सेम्पल लाने व ले जाने की सुविधा उपलब्ध है।

4-सी, एपेक्स चेम्बर, भारतीय लोक कला मण्डल के पीछे, मधुबन, उदयपुर
Ph. 70733-08880, 70738-18880, 74109-70970, 74109-80980 | www.arthdiagnostics.com

फरवरी
2021
वर्ष 18, अंक 10

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहाल्का

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

अंदर के पृष्ठों पर...

ध्यानाकर्षण
अभी तो सूरज उगा है, दिन चढ़ने दो
10

वसंतोत्सव
सरस्वती की आराधना का पर्व
12

कवच
निवेश का बेहतर विकल्प है एक और घर
18

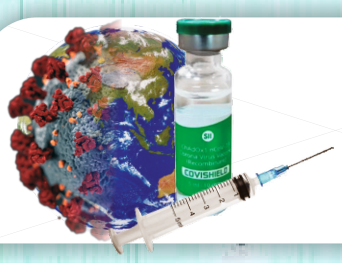

आगाज
कोरोना पर जीत का निर्णायक सफर
26

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-[illegible]37
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

With Best Compliments

MEWAR POLYTEX LIMITED

Office Address :
A-207, Road No. 11, Mewar Industrial Area, Madri,
Udaipur (Raj.), India-313003
Tel: +91-8875054444, 8875064444
Fax: +91-294-2490709

कोरोना ने उतारी पटरी से अर्थव्यवस्था

भारत जैसे विशाल देश में 16 जनवरी 21 से कोरोना टीकाकरण की शुरुआत सुखद और ऐतिहासिक है। यह विश्व का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान है। इसे चुनौतीपूर्ण तो कहा ही जा सकता है, किन्तु यहां के चिकित्साकर्मियों के पास खसरा, डिप्थीरिया, पोलियो आदि के देशव्यापी टीकाकरण का लम्बा अनुभव है। हालांकि यह टीकाकरण उक्त से कुछ अलग तरह का है, इसीलिए इसमें उसे निर्माता कम्पनी से लाने से लेकर बूथ तक पहुंचाने में ही नहीं टीका लगाने और उसके बाद भी विशेष एहतियात बरता जा रहा है। भारत की यह बड़ी उपलब्धि है कि वैज्ञानिकों ने इतने कम समय में कारगर टीके से कोरोना पर सटीक प्रहार का मार्ग प्रशस्त किया। यह अवसर किसी उत्सव से कम नहीं है। प्रथम चरण में टीके का खर्च पूरी तरह से केन्द्र सरकार उठा रही है। इस चरण में करीब तीन करोड़ अग्रिम पंक्ति के कोरोना योद्धाओं को टीका लगाने का अभियान 16 जनवरी से निरन्तर जारी है। अब तक 6 राज्यों ने अपने यहां के लोगों को मुफ्त टीका लगाने का वादा किया है। चूंकि टीका महंगा है, इसलिए कुछ राज्य सरकारें मुफ्त टीकाकरण की घोषणा से बच रही हैं। कोरोना से जब देश निर्णायक जीत की ओर अग्रसर है, उसी बीच बर्ड फ्लू और ब्रिटेन की ओर से आने वाले 'स्ट्रेन' ने चिन्ताओं को बढ़ा दिया है। जहां तक बर्ड फ्लू का सवाल है, उसका संक्रमण विदेशी पक्षियों के जरिए ही देश में हुआ है। सर्दियों में बड़ी संख्या में विदेशी पक्षी भारत के ताल, तालाबों, खेतों में समय बिताने आते हैं। कुछ पक्षी तो यहां सर्दियों के समय से चार से पांच माह तक रहते हैं। ऐसे में यह बहुत ज़रूरी है कि विदेशी पक्षियों की खास तौर पर निगरानी की जाए।

सन् 2021 के नववर्ष की सबसे बड़ी चिंता ही कोरोना की मार और बर्ड फ्लू के भय से तबाह होती अर्थव्यवस्था को संभालने की है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि केन्द्र और राज्य सरकारों के समक्ष डांवाडोल होते आर्थिक हालातों को संभालने की पहाड़ सी चुनौती है। मार्च 2020 के अन्तिम सप्ताह से ही देश में डेढ़-दो माह की सख्त पूर्णबंदी(लॉकडाउन) की गई थी, ताकि कोरोना संक्रमण के प्रसार को नियंत्रित किया जा सके, इसमें काफी हद तक सफलता तो मिली, लेकिन साथ ही अर्थव्यवस्था का पटरी से उतरने का परिणाम भी सामने आया। लॉकडाउन के दौरान देश की सभी छोटी-बड़ी औद्योगिक और व्यावसायिक गतिविधियां ठप हो गई। प्रमुख आर्थिक स्रोतों जैसे - कोयला, बिजली, इस्पात, सीमेंट, उर्वरक, रिफाइनरी उत्पाद, कच्चा तेल और प्राकृतिक गैस तक के उत्पादन पर पूर्णविराम लग गया। औद्योगिक गतिविधियां बंद रहने से बिजली के उत्पादन में भारी गिरावट आई। बिजली उत्पादन न होने का असर कोयले के उत्पादन पर पड़ा। छोटे उद्योग और कारखाने बंद रहने से इस्पात कारखानों में भी उत्पादन नहीं हो सका। पेट्रोलियम पदार्थों की मांग भी लगभग शून्य रही। ऐसी स्थिति में अर्थव्यवस्था में जड़ता आना स्वाभाविक ही था। पहली तिमाही में जीडीपी शून्य से चौबीस फीसद नीचे चली गई थी। रेटिंग एजेन्सी फिच के अनुसार भारत की अर्थव्यवस्था पर कोरोना का असर लम्बे समय तक रहेगा। पिछले एक वर्ष में देश की आर्थिक वृद्धि को लेकर अन्य रेटिंग एजेन्सियों का भी लगभग ऐसा ही अनुमान है। फिच का कहना है कि वर्ष 2021-22 में भारत की अर्थव्यवस्था में ग्यारह फीसद की वृद्धि दृष्टिगत हो सकती है, लेकिन उसके बाद अगले चार साल तक देश की जीडीपी साढ़े छह फीसद के आसपास ही रहेगी। इसमें कोई संदेह नहीं कि कोरोना की मार से भारतीय अर्थव्यवस्था तो प्रभावित हुई ही है, लेकिन दुनिया की अन्य विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाएं भी भयानक मंदी के दौर में हैं। यह सभी के लिए भारी चुनौती है। इस संकट से वही निकल पाएगा जो तात्कालिक कदमों के साथ दूरगामी परिणाम देने वाली नीतियों का निर्माण और उन पर अमल करेगा। हालांकि भारत ने लॉकडाउन और उसके बाद के हालात को संभालने के लिए अब तक राहत के कई पैकेज जारी किए हैं, ताकि मंदी की मार झेल रहे छोटे-बड़े उद्योग फिर से खड़े हो सकें। उन्हें करो में रियायत भी दी गई है। देश में इस समय जो सबसे बड़ा संकट महसूस किया जा रहा है, वह बाजार में मांग का है। इसके मूल में महंगाई और बेरोजगारी जैसे कारण हैं। पिछले कुछ महीनों में रोजमर्रा की ज़रूरत से जुड़े उत्पादों के दाम जिस तेजी से बढ़े हैं, उससे भी मांग कमजोर पड़ी है। दूसरा बड़ा संकट लोगों के पास काम धंधों का न होना है। असंगठित क्षेत्र के हालात भी ठीक नहीं है। बढ़ते एनपीए के कारण बैंकिंग क्षेत्र कठिन दौर से गुजर ही रहा है। ऐसे में सबकी निगाहें आगामी बजट पर है। सरकार को ऐसे उपायों की घोषणा करनी होगी कि आम आदमी अपने घर को संभाल सके और साथ ही देश के विकास को भी सुनिश्चित किया जा सके।

बाइडेन और कमला ने ली शपथ

निवर्तमान राष्ट्रपति ट्रम्प और समर्थकों ने अमरीकी लोकतंत्र को किया शर्मसार

मनीष उपाध्याय

जिस अमेरीका की कमान बाइडेन को मिली है, उसका जनमानस आज बंटा हुआ है। दुनिया की नजरें उन पर रहेंगी कि वह अपने विभाजित राष्ट्र को कैसे फिर से यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका बनाते हैं।

आखिरकार तमाम-उतार चढ़ावों के बाद जो बाइडेन ने 20 जनवरी को अमेरिका के 46वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ ले ली। उनके साथ भारतीय मूल की कमला हैरिस ने भी 49वें उपराष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। वे देश की पहली महिला उपराष्ट्रपति है। अमरीका की राजधानी वाशिंगटन स्थित संसद भवन 'कैपिटल हिल' में भव्य शपथ समारोह हुआ। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस जॉन रॉबर्टस् बाइडेन ने राष्ट्रपति को और जज सोनिया सोटोमेयर ने उपराष्ट्रपति को शपथ दिलाई। समारोह में निवर्तमान राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प शामिल नहीं हुए। इससे पूर्व 19 जनवरी को अमरीका की फर्स्ट लेडी मेलेनिया ट्रम्प ने व्हाइट हाउस में अपने विदाई भाषण में कहा कि हिंसा को किसी मायने में सही नहीं ठहराया जा सकता। समारोह स्थल व आसपास सुरक्षा की दृष्टि से नेशनल गार्ड के करीब 25 हजार जवान तैनात किए गए। सत्ता संभालते ही बाइडेन ने ट्रम्प सरकार के कई फैसले उलट दिए। चुनाव से लेकर श्पथ ग्रहण के सफर में जो घटनाएं हुई, उससे पूरे विश्व में लोकतांत्रिक प्रक्रिया को स्थापित करने की दिशा में सक्रिय देश के रूप में अमरीका की मजबूत छवि को गहरा धक्का भी लगा। 7 जनवरी को जब अमेरिकी संसद नए निर्वाचित राष्ट्रपति जो बाइडेन की जीत की पुष्टि करने वाली थी, तभी वहां पहुंची ट्रम्प समर्थकों की भीड़ ने जिस तरह की अराजकता

दिखाई, उससे पूरे विश्व के सामने उसे शर्मसार होना पड़ा। ट्रम्प समर्थक हथियार लेकर संसद में घुस गए, मजबूरन पुलिस को ट्रम्प समर्थकों पर काबू पाने के लिए गोली चलानी पड़ी, जिसमें 4 लोग मारे गए तथा वॉशिंगटन डीसी में आपातकाल लगाना पड़ा। इस पूरे घटनाक्रम के बावजूद संसद दोबारा चली और जो बाइडेन को बतौर राष्ट्रपति सत्यापित किया गया। हंगामे की शुरुआत अमेरिका के विभिन्न राज्यों से आ रहे चुनाव परिणामों के साथ ही हो चुकी थी। विभिन्न राज्यों से आ रहे चुनाव परिणामों में जब जो बाइडेन का पलड़ा भारी होने लगा तो ट्रम्प और उनके समर्थकों में गहरी निराशा छाने लगी। चुनाव परिणामों पर असहमति जताते हुए ट्रम्प ने बाइडेन की जीत को चुनावों में धांधली का नतीजा बताया। उन्होंने कई राज्यों में वोटों की गिनती रूकवाने की मांग की। लेकिन जब अमेरिका के सुप्रीम कोर्ट ने टेक्सास में दायर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के समर्थन वाले उस मुकदमे को संविधान के अनुच्छेद 3 के तहत खारिज कर दिया, जिसमें जॉर्जिया, मिशिगन, पेंसिलवेनिया और विस्कॉन्सिन राज्यों में 3 नवम्बर के राष्ट्रपति चुनाव परिणामों को पलटने की मांग की गई थी। कोर्ट ने कहा कि टेक्सस ने न्यायिक रूप से संज्ञानात्मक हित का प्रदर्शन नहीं किया है, जिस तरह से राज्य अपने यहां चुनाव का संचालन करता है। अब सभी लंबित मामलों को खारिज किया जाता है। इससे पूर्व पेंसिलवेनिया रिपब्लिकन की एक अपील को भी ठुकरा दिया था। राज्य चुनाव अधिकारियों का कहना था कि उन्हें इस तरह की धोखाधड़ी का कोई सबूत नहीं मिला है। दूसरी ओर उनके सहयोगियों के वकील भी धोखाधड़ी के सबूत पेश करने में विफल रहे। सत्ता से लगातार दूर होती स्थिति को लेकर ट्रम्प और उनके गुस्साएं समर्थकों ने ट्रम्प के समर्थन में सोशल मीडिया पर अभियान छेड़ दिया। ट्रम्प ने 6 जनवरी को अपने समर्थकों को भड़काते हुए संसद पहुंचने का आह्वान किया। इसके नतीजे में कैपिटल हिल में लगभग 4 घंटे तक अराजकता का माहौल रहा। इस पूरे घटनाक्रम को निर्वाचित राष्ट्रपति जो बाइडेन ने राजद्रोह करार दिया। उन्होंने कहा कि यह कोई विरोध नहीं है। यह एक विद्रोह है। बहरहाल इस पूरे घटनाक्रम के कारण अमेरिका को पूरे विश्व के सामने शर्मसार होना पड़ा। अनेक देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने भी इस पूरे घटनाक्रम की आलोचना की।

...इंडिया इज द बेस्ट

राष्ट्रपति जो बाइडेन की प्रशासनिक टीम में भारतीयों को सर्वाधिक और महत्वपूर्ण स्थान दिए गए हैं। बजट निदेशक से लेकर सलाहकार तक सब भारतीय हैं। यहां तक कि व्हाइट हाउस की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में भी भारतीय मूल के लोगों को बिठाया गया है। राष्ट्रपति ने अब तक 21 भारतीय-अमरीकियों को अपने प्रशासनिक अमले में नामित किया है। जिनमें से 17 को व्हाइट हाउस में अहम जिम्मेदारी दी गई है। नामितों में 13 महिलाएं है। नामितों में नारी टंडन, डॉ. विवेक मूर्ति, माला अडिगा, उजरा जेया, वनिता गुप्ता, आयशा शाह, समीरा फाजली, तरूण छाबड़ा, सुमोना गुहा, शांति कलाथिल, सबरीना सिंह, गरिमा वर्मा, नेहा गुप्ता, भारत राममूर्ति, सोनिया अग्रवाल, गौतम राघवन, रीमा शाह, विनय रेड्डी, विदुर शर्मा, वेदांत पटेल और रोहित चौपडा शामिल हैं। अंतराष्ट्रीय पटल पर भारतीयों का नई ताकत के साथ उभरना भारत की बढ़ती मजबूती का भी परिचायक है। यह प्रवासी भारतीयों की गतिशीलता ही है कि हमारी प्राचीन परम्परा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना सारी दुनिया में साकार हो रही है।

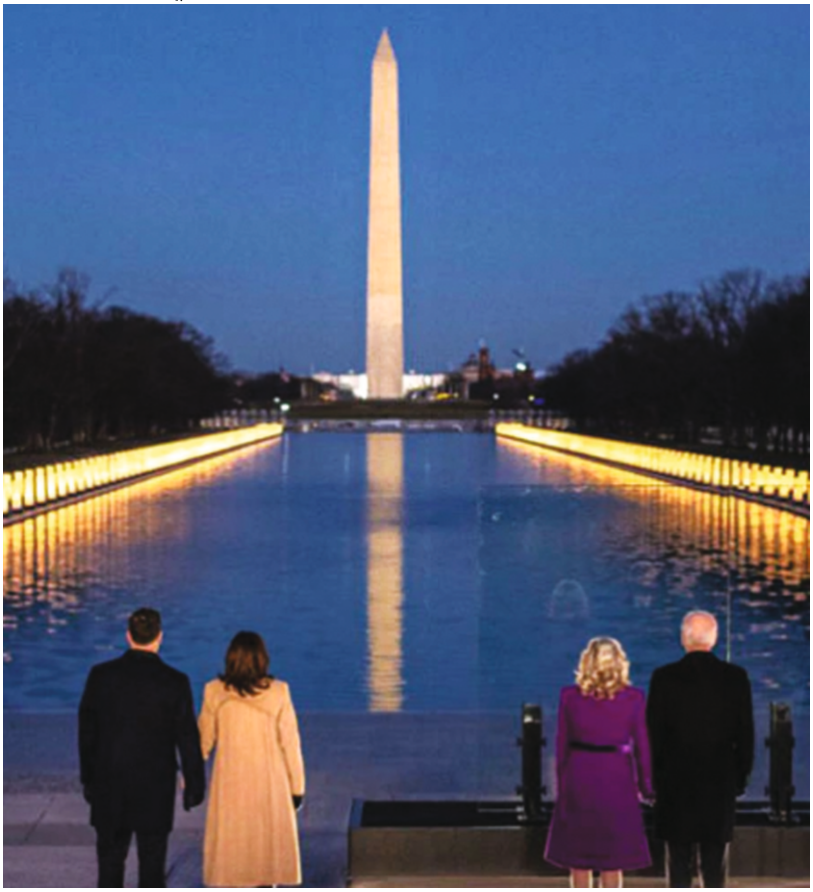

उ. कोरिया बन सकता है चुनौती

अमरीका में नए राष्ट्रपति जो बाइडन और उनकी टीम को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। सबसे बड़ी चुनौती कोरोना संकट, अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाना और अंतरराष्ट्रीय द्विपक्षीय संबंध होंगे। कोविड का टीका आ चुका है। लेकिन उसको सभी नागरिकों तक जल्द से जल्द पहुंचाना भी एक बड़ी चुनौती होगी। इतिहास गवाह है कि उत्तर कोरिया नवनियुक्त राष्ट्रपति का ध्यान खींचने की कवायद में जुट जाता है। अतीत में भी, किम ने मिसाइलों और परमाणु परीक्षणों के जरिए उत्तेजना फैलाई थी, 2021 में भी यह संभव है। उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग उन ने इसी माह के आरंभ में सत्ताधारी वर्कर्स पार्टी कांग्रेस की बैठक में बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है कि परमाणु निरस्त्रीकरण बाइडन प्रशासन के लिए उनकी प्राथमिकताओं में नहीं है। इसके विपरीत किम ने हथियारों के आधुनिकीकरण के लिए अति महत्वाकांक्षी एजेण्डा रखा, जिसमें हाइपरसोनिक मिसाइल, ठोस ईंधन वाली इंटरकांटिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल (आइसीबीएम), मानव रहित एरियल व्हीकल्स, परमाणु-चालित पनडुब्बी जो बैलिस्टिक मिसाइलों और सामरिक परमाणु हथियारों को लॉन्च करने में सक्षम है, शामिल है। किम ने यह भी कहा कि वह लगभग 10,000 मील तक सटीक लक्ष्य वाली आइसीबीएम का विकास करना चाहते हैं, जो संयुक्त राज्य अमरीका को भी अपनी जद में ले लेगी। यदि किम अपनी योजना पर पहले अमल करना शुरू कर देते हैं तो बाइडन भी जल्द ही खुद को मिसाइल उकसावे से जूझते हुए पाएंगे- जैसा कि तब हुआ था जब वे उपराष्ट्रपति थे। उत्तर कोरिया ने बराक ओबामा के राष्ट्रपति पद संभालने के बाद काफी कम समय में एक रॉकेट लॉन्च और परमाणु अस्त्र परीक्षण किया था।

शी जिनपिंग व किम जोंग की जोड़ी

स्पर्द्धा में चीन खड़ा

अमरीका का वर्चस्व मुख्य रूप से चार स्तंभों पर आधारित है। पहला अर्थव्यवस्था, दूसरा सैन्य शक्ति, तीसरा लोकतंत्र और चौथा नैतिक अधिकार। अर्थव्यवस्था के मामले में आज भी वह महाशक्ति है, पर चीन अब उसके काफी करीब पहुंच चुका है। ऐसी स्थिति में बाइडेन को रणनीति बनानी होगी। जहां तक सैन्य शक्ति की बात है, चीन क्या, कोई भी देश उसके आगे नहीं टिकता।

बच्चों पर ज्यादा सख्ती ठीक नहीं

माता-पिता के लिए बच्चों का बेहतर पालन-पोषण सबसे अहम जिम्मेदारी होती है। उनकी पूरी कोशिश रहती है कि बच्चों में अच्छे व्यक्तित्व के गुणों का विकास किया जाए। बच्चों का पालन-पोषण सही ढंग से नहीं होने पर बड़े होने पर न केवल खुद के लिए अपितु परिवार एवं समाज के लिए परेशानी का कारण बन सकते है।

चयनिका निगम

बच्चे के साथ बात-बात में कुछ ज्यादा ही सख्त हो जाना ठीक नहीं। बच्चे को सख्ती से ज्यादा आपके प्यार की जरूरत है। विशेषज्ञ मानते हैं कि सख्ती और प्यार के बीच 20-80 का अनुपात होना चाहिए। इस बात को समय रहते आपको भी समझ लेना होगा। यह समझिए कि सख्ती ही हर परेशानी का हल नहीं। ठीक वैसे ही जैसे बच्चे के आपसे डरने और दिल से इज्जत करने में अंतर होता है। दरअसल बच्चे आपको बाकी पूरी दुनिया से अलग सिर्फ प्यार की मूर्ति के तौर पर देखते हैं। पर आपकी हद से ज्यादा सख्ती उनके सामने आपकी छवि एक उत्पीड़क या कहें तानाशाह की बना देती है, जबकि आप तो माता-पिता हैं। आपके सामने भी बच्चे ज़िंदगी की कसौटियों पर खरे उतरने की कोशिश करते रहेंगे, तो फिर सामान्य जिंदगी कहां जिएंगे? बच्चे की बेहतर परवरिश के लिए जरूरी है कि आप तानाशाह वाली छवि से बाहर आ जाएं और सिर्फ माता-पिता बनने की सोचें।

बच्चे को हो आप पर विश्वास

बच्चों के सामने आपकी छवि हमेशा ऐसी होनी चाहिए कि उनको आपके साथ की अपेक्षा करनी ही न पड़े, बल्कि उन्हें पता हो कि जब भी वो अपनी समस्या लेकर आपके सामने आएंगे, आप उनका साथ जरूर देंगी। ऐसे वक्त में आप उन्हें सबसे अच्छा वाला सुझाव भी जरूर देंगे। अगर आप ऐसा नहीं करेंगी तो बच्चे आपसे झूठ बोलेंगे और बहुत सारे काम आपसे छुप कर भी करेंगे। अतएव आपको उनकी जिंदगी में थोड़ी रुचि लेनी होगी। जैसे माता-पिता चाहते हैं कि बच्चे उनकी बात को अहमियत दें, ठीक वैसे ही बच्चे भी चाहते हैं कि माता-पिता उनकी बात को अहमियत दें।

सख्ती का डोज़

प्राय: देखा गया है कि आजकल के माता-पिता छुटपन में तो बच्चों के प्रति खूब प्यार-दुलार जताते हैं और फिर जैसे ही वे थोड़े बड़े होते हैं, उन पर एकदम से दबाव बनाने लगते हैं। दूसरे बच्चों के साथ उनकी तुलना शुरू कर देते हैं। इस बदलाव के कारण सामाजिक होते हैं। पेरेंट्स सामाजिक दायरों के हिसाब से बच्चों को ढालने की कोशिश करने लगते हैं, जबकि इसकी वजह से बच्चा जिद्दी हो जाता है और कई बार माता-पिता की उपेक्षा भी करने लगता है। अपनी अपेक्षाओं को बच्चों पर थोपना ठीक नहीं। कई बार बच्चा आपकी अपेक्षाओं को पूरा करने की कोशिश में दबाव में जीना लगता है, अत: ऐसा करने से बचें। छुटपन से ही अपनी परवरिश में सख्ती और दुलार का संतुलन रखें, ताकि बच्चे को हमेशा से पता रहे कि उसकी सीमा रेखा क्या है।

बदलना होगा आपको

माता-पिता को पार्टी में जाना पसंद है, लेकिन जब बात बच्चे की आती है तो वे टफ बन जाते हैं। समय बदलाव का है। बच्चों को भी साथ ले जाए क्योंकि समय की जरूरत यही है। उसके दोस्त कहीं घूमने जाएंगे तो वह भी जाना चाहेगा। पर दिक्कत ये है कि माता-पिता अपनी सोच बदलें कैसे? इसका तरीका आसान है। बच्चे के दोस्तों के माता-पिता से मिलिए ओर जानिए क्या वो भी ऐसा ही करते हैं। आप जान पाएंगे कि बच्चों के लिए सामाजिक विकास जरूरी है और इसी विकास के लिए बाकी पेरेंट्स भी बच्चों को पार्टी में जाने देने को राजी हैं। ये उन्हें खूबसूरत यादें संजोने में मदद करेगा। नजर रखना जरूरी है, लेकिन हर बार पाबंदी गलत है।

बच्चे उन जैसे नहीं

हो सकता है कि माता-पिता साइंस के बहुत अच्छे स्टूडेंट रहे हों। हो सकता है कि स्पोर्ट्स आपकी खासियत हो। लेकिन जरूरी नहीं है कि उनके बच्चे के पास भी ये गुण हों। इस बात को वे जितनी जल्दी समझ लेंगे, उतनी जल्दी तानाशाह से पहले पेरेंट वाले रोल में आ जाएंगे। मतलब बच्चे को एहसास होगा कि आप उनको अपने हिसाब से नहीं चला रहे हैं, बल्कि उनकी ख्वाहिशों को भी अहमियत दे रहे हैं। इसके लिए आपको बच्चे की ख्वाहिश जाननी पड़ेंगी। फिर उसी और मेहनत भी करनी होगी। जैसे बच्चे को क्रिकेट खेलने का शौक है तो उसे उसी ओर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

संवाद के लिए जगह

माता-पिता ने बचपन में जो सीखा वही वे बच्चों को सिखाने की कोशिश करते हैं। पर अब पहले वाली बात नहीं। आज बच्चे इंटरनेट के माध्यम से समय से पहले सोच विकसित कर लेते हैं और इसी वजह से उनके पास हर मुद्दे से जुड़े सवाल भी होते हैं और तर्क भी। इसलिए जरूरी है कि बच्चों को सिर्फ कहा न जाए, बल्कि उन्हें सुना भी जाए। जब बच्चे को लगने लगेगा कि आप उसकी बात सुनते हैं तो वो सबसे पहले आपको अपनी बात बताएंगे।

हर बच्चा है अलग

खुशमिजाज और उत्साह से भरपूर बच्चे किसे अच्छे नहीं लगते। हर बच्चे का स्वभाव एक जैसा हो यह आवश्यक नहीं। यदि बच्चा संकोची है अथवा उसके मन में किसी प्रकार का डर है। तो बच्चे के लिए यही बेहतर होगा कि माता-पिता उससे प्यार से पेश आएं। ऐसे बच्चों पर उनके व्यवहार के कारण गुस्सा उतारने अथवा उसके व्यवहार को लेकर उसे चिढ़ाने, बेवकूफ अथवा भोंदू समझने के बजाय प्यार से पेश आएं। इस बात का भी विशेष ध्यान रखें कि उसके संकोची होने के कारण उसे स्कूल में या अन्य जगहों पर उसका मज़ाक तो नहीं बनाया जा रहा। इसके प्रति सतर्क रहना बेहद जरूरी है। दोस्ताना व्यवहार बच्चों में आत्मविश्वास का संचार करने में मदद करता है। जो बच्चे खुशमिजाज और उत्साह से भरपूर होते है ऐसे बच्चों की शैतानियों को लेकर माँ-बाप अक्सर परेशान रहते हैं। अभिभावक के लिए आवश्यक है कि ऐसे बच्चों की एनर्जी को सही दिशा दी जाए। उन्हें विभिन्न रचनात्मक गतिविधियां सिखाएं ताकि उनकी सृजनात्मकता का भरपूर विकास हो।

Narayan Sharma
94141 56756
Director

New Furnitures

Manufacturer, Interior Decorators & Labour Supervisor of Wooden Furniture & Aluminium Section

Ashish Sharma
97871 26503

SHARDA DESIGN STUDIO

Plywood, Mica, Hardware, Veneer and much more...

sharda.design.studio2019@gmail.com
instagram/sharda_design_studio

1-2, Court Chouraha, Udaipur - 313 001 (Raj.) Ph.: 0294-2412665 (S) 0294-2484212 (R)

अभी तो सूरज उगा है, दिन चढ़ने दो

वेदव्यास

पिछले सात साल से नया भारत अपनी पुरानी भारत/माता को दिल्ली के लाल किले पर चढ़कर ये समझा रहा है कि आसमान में सिर उठाकर, घने बादलों को चीरकर, रोशनी का संकल्प लें, अभी तो सूरज उगा है। दृढ़ निश्चय के साथ चलकर, हर मुश्किल को पार कर, घोर अंधेरे को उठाने, अभी तो सूरज उगा है। विश्वास की लौ जलाकर, विकास का दीपक लेकर, सपनों को साकार करने, अभी तो सूरज उगा है। न अपना न पराया, न मेरा न तेरा, सबका तेज बनकर, अभी तो सूरज उगा है। आग को समेटते, प्रकाश को बिखेरता, चलता और चलाता, अभी तो सूरज उगा है।

राष्ट्र ऋषि, परम तपस्वी, महामनीषी और महाकवि स्वामी नरेन्द्र मोदी की इस कविता को सुनकर भारत माता ने कहा-बेटा! तूने कई साल पहले कहा था कि अच्छे दिन आने वाले हैं लेकिन वो अब तक तो नहीं आए? फिर तूने कहा था कि मां, चिंता मत कर, पहले नोटबंदी कर देता हूं, ताकि कालाधान, आतंकवाद और भ्रष्टाचार की कमर टूट जाएगी? फिर तूने कहा था कि मां- इतनी जल्दी सब कुछ थोड़े ही बदल जाता है। 70 साल पुरानी बीमारी है इसलिए पहले कांग्रेस मुक्त भारत बना दूं ताकि न बांस रहे न बांसुरी बजे। फिर तूने कहा था कि पहले राम मंदिर बनवा दूं ताकि तेरा मन पूजा-प्रार्थना में लगा रहे और तेरा वंश अमर हो जाए। फिर तूने कहा था कि मां ऐसी भी क्या मुसीबत है? पहले कश्मीर को ठीक कर दूं। तीन तलाक का पाप मिटा दूं। एक गांव-एक श्मशान-एक मंदिर का संकल्प पूरा कर दूं। पहले गौरक्षा, गंगा आरती और गीता पाठ करवा दूं। ताकि मेरे सात जन्म को मोक्ष मिल जाए। क्योंकि अभी तो सूरज उगा है। दिन तो चढ़ने दे। भारत माता ऐसे प्रवचन से फिलहाल इतनी बेहाल हो गई है कि अब उसने बेरोजगारी, महंगाई, भ्रष्टाचार, महिला अत्याचार, किसानों की आत्महत्या, भय और नफरत के माहौल में सूरज के उगने का इंतजार ही छोड़ दिया है। झूठ और राम भरोसे राज के जाल में भारत माता- हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई हो गई है। विकास और हिन्दू राष्ट्रवाद की सूली पर चढ़कर वो पिछले एक साल से कोरोना की महामारी और लॉकडाउन के असाध्य रोग से इच्छा मृत्यु की कामना कर रही है। भाइयों और बहनों! भारत माता का ऐसा चीरहरण देखकर हमें लगता है कि 2021 का ये साल तो बीते 2020 के साल से भी ज्यादा मारक और हिंसक होगा। आप देख सुन ही रहे हैं कि दुनिया में 265 साल पुराने लोकतंत्र अमेरिका में उसके राष्ट्रपति ट्रंप ने चुनाव हारकर भी अपनी कुर्सी नहीं छोड़ने के अनेत जतन किए और अपने घर में ही मारधाड़ और बगावत का बिगुल फूंका हैं। इधर आत्मनिर्भर भारत माता को चीन, नेपाल, पाकिस्तान, बंगलादेश और श्रीलंका जैसे पड़ोसी भी धमका रहे हैं। बाजार और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने सरकारी खजाने की गर्दन पकड़ ली है और रुपये की कीमत घट रही है तो खाने-पीने का सामान महंगा होने जा रहा है।

अपने सूरज ने उगते ही ऐसा प्रकाश फैलाया है कि हिन्दू राष्ट्रवाद, लव जिहाद, धर्मान्तरण कानून, गौरक्षा और बोलने-सुनने की आजादी को ही देशद्रोह के अभियान में बदल दिया है। सरकार आंख मींचकर श्रमिक सुधार, शिक्षा सुधार, कृषि सुधार जैसे अध्यादेश बिना बहस और संवाद के गांव और गरीबों पर थोप रही है। सोशल मीडिया ने तो भारत माता को हिला दिया हैऔर गांधी-अम्बेडकर की आजादी और संविधान को भी पानी पिला दिया है।

अभी तो सूरज उगा है, इसीलिए आपको बता दूं कि भारत माता दुनिया के 193 देशों के बीच भुखमरी में 94वें स्थान पर है तो भ्रष्टाचार में पहले नंबर पर है, तो मानव विकास की दौड़ में 131वें नंबर पर है तो पर्यावरण सुधार के काम में 168वीं सीढ़ी पर बैठी है तो मीडिया की स्वतंत्रता को लेकर 142वें स्थान पर है तो साफ-सफाई और पीने के पानी के लिए 139वें नंबर पर है तो जैव-विविधता के मामलों में 148वें स्थान पर है तो प्रदूषण फैलाने में 145वीं पायदान पर है जबकि जाति-धर्म की साम्प्रदायिक राजनीति करने और नफरत फैलाने में पहले नंबर पर है। हमें सोचना होगा कि अब क्या ये ही हिन्दू राष्ट्रवाद का असली चेहरा, चाल और चरित्र है? जो विकास और आत्मनिर्भरता के दैनिक उपदेशों से नया भारत, नई संसद और नई पुलिस प्रशासन व्यवस्था बना रहा है? क्या अमेरिका के जिगरी दोस्त ट्रंप से भारत कुछ सबक ले रहा है? क्या वो सचमुच ये ही विकास कर रहा है? क्या सूरज उगा है तो कभी उबेगा नहीं? और 2024 के बाद क्या भारत-एक देश-एक लोकतंत्र नहीं रह सकेगा? ऐसे में भारत माता कब तक अपने किसान-मजदूर और 134 करोड़ बाल-बच्चों पर अत्याचार और गैर-बराबरी की राजनीति सहेगी? सावधान गरीब और भूखे नंगे भारत में अब डिजिटल इण्डिया से भी गरीब-अमीर की मुठभेड़ बढ़ेगी और हिन्दू-मुसलमान की सियासत से तो 21वीं शताब्दी कलंकित ही रहेगी।

आत्मनिर्भर भारत माता को चीन, नेपाल, पाकिस्तान, बंगलादेश और श्रीलंका जैसे पड़ोसी भी धमका रहे हैं। बाजार और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने सरकारी खजाने की गर्दन पकड़ ली है और रुपये की कीमत घट रही है तो खाने-पीने का सामान महंगा होने जा रहा है।

भंवरलाल नागदा
(पूर्व सरपंच, खरका)
Mob. 9460830849
रमेश नागदा
(बीमा अभिकर्ता)
Mob. 9414158306
हार्दिक शुभकामनाओं सहित
कैलाश नागदा
9799652244
ललित नागदा
9414685029
देवेन्द्र नागदा
9602578599
रवि नागदा
9929966942
रवि मेडिकल स्टोर, उदयपुर
महाराणा भूपाल चिकित्सालय (जनरल हॉस्पिटल)
के सामने, उदयपुर, फोन : 0294-2412464
सम्बन्धित फर्म : रवि मेडिकल स्टोर, सलूम्बर एवं लसाड़िया
दीपक नागदा
मो.: 9602578599
जय इलेक्ट्रीकल्स
लाइट फिटींग एवं इलेक्ट्रीक
सामान के रिटेल
एवं होलसेल विक्रेता
स्वामी नगर, 100 फीट रोड, पानेरियों की मादड़ी, उदयपुर

मां सरस्वती विद्या, बुद्धि, ज्ञान और वाणी की अधिष्ठात्री देवी हैं। शास्त्र ज्ञान को देने वाली है। भगवती शारदा का मूलस्थान अमृतमय प्रकाशपुंज है। जहां से वे अपने उपासकों के लिए निरंतर 50 अक्षरों के रूप में ज्ञानामृत की धारा प्रवाहित करती हैं। उनका विग्रह शुद्ध ज्ञानमय, आनन्दमय है। उनका तेज दिव्य एवं अपरिमेय है और वे ही शब्द ब्रह्म के रूप में पूजी जाती है।

सरस्वती की आराधना का पर्व वसंत पंचमी

भगवान प्रसाद गौड़

सृष्टि काल में ईश्वर की इच्छा से आद्याशक्ति ने अपने को पांच भागों में विभक्त कर लिया था। वे राधा, पद्मा, सावित्री, दुर्गा और सरस्वती के रूप में प्रकट हुई थीं। उस समय श्रीकृष्ण के कण्ठ से उत्पन्न होने वाली देवी का नाम सरस्वती हुआ। श्रीदुर्गा सप्तशती में भी आद्याशक्ति द्वारा अपने आपको तीन भागों में विभक्त करने की कथा है। आद्याशक्ति के ये तीनों रूप महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के नाम से संसार में जाने जाते हैं। भगवती सरस्वती सत्वगुणसंपन्न हैं। इनके अनेक नाम हैं, जिनमें से वाक्य वाणी, गिरा, भाषा, शारदा, वाचा, श्रीश्वरी, वागीश्वरी, ब्राह्मी, गौ, सोमलता, वाग्देवी और वाग्देवता आदि प्रसिद्ध हैं। ब्राह्मणग्रंथों के अनुसार वाग्देवी, ब्रह्मस्वरूपा, कामधेनु तथा समस्त देवों की प्रतिनिधि हैं। ये ही विद्या, बुद्धि और सरस्वती हैं। इस प्रकार देवी सरस्वती की पूजा एवं आराधना के लिए माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि वसंत पंचमी को ही इनका अवतरण दिवस माना जाता है।

वागीश्वरी जयंती एवं श्रीपंचमी के नाम से भी इस तिथि को जाना जाता है। इस दिन इनकी विशेष पूजा-अर्चना तथा व्रतोत्सव के द्वारा इनके सान्निध्य प्राप्ति की साधना की जाती है। सरस्वती देवी की इस वार्षिक पूजा के साथ ही बालकों के अक्षरारंभ एवं विद्यारंभ की तिथियों पर भी सरस्वती पूजन का विधान है।

भगवती सरस्वती की पूजा हेतु आजकल सार्वजनिक पूजा पंडालों की रचना करके उसमें देवी सरस्वती की मूर्ति स्थापित करने एवं पूजन करने का प्रचलन दिखाई पड़ता है, किन्तु शास्त्रों में वाग्देवी की आराधना व्यक्तिगत रूप में ही करने का विधान है।

भगवती सरस्वती के उपासक को माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को प्रात:काल में भगवती सरस्वती की पूजा करनी चाहिए। इसके एक दिन पूर्व माघ शुक्ल पूजा करनी चाहिए। शुक्ल चतुर्थी को वागुपासक संयम, नियम का पालन करें। इसके बाद माघ शुक्ल पंचमी को प्रात:काल उठकर घट की स्थापना करके उसमें वाग्देवी का आह्वान करें तथा विधिपूर्वक देवी सरस्वती की पूजा करें। किसी ज्ञानी कर्मकांडी या कुलपुरोहित से दिशा-निर्देश से पूजन कार्य संपन्न करें।

यूं करें पूजन

- स्नान आदि करे पीतांबर या पीले वस्त्र पहनें।
- माघ शुक्ल पूर्वविद्धा पंचमी को उत्तम वेदी पर वस्त्र बिछाकर अक्षत से अष्टदल कमल बनाएं।
- उसके अग्रभाग में गणेशजी स्थापित करें। पास में सरस्वती का चित्र या प्रतिमा स्थापित करें।
- वसंत, जौ व गेहूं की बाली के पुंज को जल से भरे कलश में डंठल सहित रखकर बनाया जाता है। लाल या केसरिया स्याही से सरस्वती यंत्र बनाएं।
- ध्यान करके विविध प्रकर के फल, पुष्प और पत्रादि समर्पण करें तो गृहस्थ जीवन सुखमय होता है। प्रत्येक कार्य को करने के लिए उत्साह प्राप्त होता है। सामान्य हवन के बाद केसर या हल्दी मिश्रित हलवे की आहुतियां दें।

- कलश की स्थापना करके गणेश, सूर्य, विष्णु तथा महादेव की पूजा करने के बाद वीणावादिनी मां सरस्वती की पूजा करनी चाहिए।
- इस दिन विष्णु-पूजन का भी महात्म्य है। कटु वचन बोलने से, किसी का मन दुखाने से बचना चाहिए।

मंगल कार्यों के लिए श्रेष्ठ

देवी सरस्वती के इस प्राकट्य पर्व को सर्वसिद्धिदायक पर्व माना जाता है। माघ माह में जब सूर्य देवता उत्तरायण रहते हैं ऐसे में गुप्त नवरात्रि के मध्य पंचमी तिथि को लोकप्रसिद्ध स्वयंसिद्ध मुहूर्त के रूप में माना जाता है।

सृष्टि का यौवन

शास्त्रों में कहा गया है कि यदि यौवन हमारे जीवन का वसंत है तो वसंत इस सृष्टि का यौवन है। गीता में भी कहा गया है कि वसंत ऋतु के रूप में भगवान कृष्ण प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होते हैं। शास्त्रों के मुताबिक वसंत पंचमी बहुत ही प्रभावी और शुभ फलदायी होती हैं। ज्योतिषीय दृष्टि से पांचवीं राशि के अधिष्ठाता भगवान सूर्य नारायण होते हैं इसलिए वसंत पंचमी अज्ञान का नाश करके प्रकाश की ओर ले जाती है। अबूझ मुहूर्त होने से इस दिन शादी-विवाह के लिए मुहूर्त की आवश्यकता नहीं होती।

ग्रीष्म और शीत का संधिकाल

संवत्सर चक्र का परिवर्तन वसंत पंचमी पर्व का मुख्य हेतु है। यह ग्रीष्म और शीत का संधिकाल है। हमारी सारस्वत शक्तियों के पुनर्जागरण के लिए इस पर्व का विशेष महत्व है। सृष्टि का संयोग इसी दिन से प्रारंभ होता है।

ऋतुओं में न्यारा वसंत

महादेवी वर्मा

स्वप्न से किसने जगाया? मैं सुरभि हूं.

छोड़ कोमल फूल का घर
ढूंढती हूं कुंज निर्झर.
पूछती हूं नभ धरा से-
क्या नहीं ऋतुराज आया?

मैं ऋतुओं में न्यारा वसंत
मै अग-जग का प्यारा वसंत.

मेरी पगध्वनि सुन जग जागा
कण-कण ने छवि मधुरस माँगा.

नव जीवन का संगीत बहा
पुलकों से भर आया दिगंत.

मेरी स्वप्नों की निधि अनंत
मैं ऋतुओं में न्यारा वसंत.

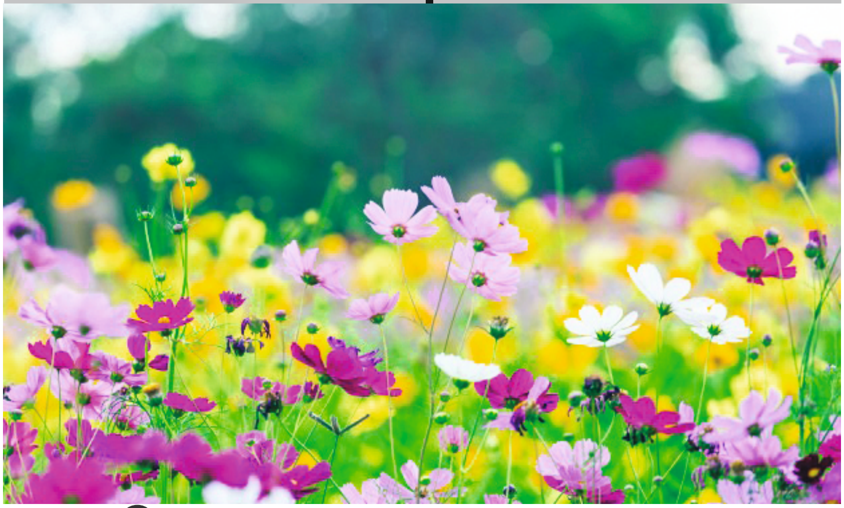

सेहत को लेकर ठीक नहीं लापरवाही

हमारी जीवनशैली और दैनिक व्यस्तता कई बार हमें स्वास्थ्य के बारे में सोचने का मौका ही नहीं देती। परिणाम यह होता है कि एक समय के बाद हॉस्पिटल के चक्कर लगाना मजबूरी बन जाती है। तो क्यों न नए साल में हम पांच सामान्य समस्याओं के बारे में जानें, ताकि उन बीमारियों की आशंका से दूर रह सके। इन स्वास्थ्य समस्याओं से दूर रहने के उपाय बता रही हैं शमीम खान

हम सभी अब अपनी सेहत को लेकर चिंतित रहने लगे हैं, क्योंकि अब स्वास्थ्य संबंधी अनेक समस्याएं सामने आने लगी हैं। हमारी जीवनशैली बदल गई है और हम ज्यादा आराम तलब हो गए हैं। ऑफिस में दिन भर कुर्सी पर बैठ कर काम करना, शारीरिक सक्रियता की कमी, जंक फूड का सेवन, तनाव का बढ़ता स्तर और अनिद्रा आदि लोगों के स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित कर रहे हैं। आधुनिक जीवनशैली लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर बना रही है, जिससे वे बीमारियों के आसान शिकार बन रहे हैं। डायबिटीज, ब्लडप्रेशर, हार्ट समस्याएं, मोटापा और कुपोषण की समस्याएं दबे पांव कब पास आ जाती हैं, कई बार पता भी नहीं चलता। तो क्यों न नए साल में कुछ बातों का ध्यान रखा जाए ताकि ये बीमारियां हम तक न पहुंच पाएं और हम स्वस्थ जीवन जी पाएं।

रक्तचाप

हर पांच में से एक का ब्लड प्रेशर असामान्य

रक्तचाप यानी ब्लड प्रेशर इससे निर्धारित होता है कि आपका हृदय कितनी मात्रा में रक्त पंप करता है और जब रक्त धमनियों में बहता है तो उसे कितने प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है। हृदय जितना ज्यादा रक्त पंप करेगा और धमनियां जितनी संकरी होगी, ब्लड प्रेशर उतना ही ज्यादा होगा। हर पांच में से एक व्यक्ति का ब्लड प्रेशर असामान्य होता है। ब्लड प्रेशर के प्रमुख कारणों में शारीरिक स्वास्थ्य, खानपान की आदतें और जीवन शैली प्रमुख हैं। यही नहीं मौसम में होने वाला बदलाव भी हमारे ब्लड प्रेशर को प्रभावित करता है। आमतौर पर सर्दियों में ब्लड प्रेशर अधिक और गर्मियों में कम होता है।

क्या है रिस्क फैक्टर

- ☞ आनुवंशिक कारण
- ☞ नमक का सेवन बढ़ाने से रक्त का दाब बढ़ जाता है।
- ☞ महिलाओं में मेनोपॉज एक प्रमुख वजह होती है।
- ☞ मोटापा और शारीरिक रूप से सक्रिय न रहना।
- ☞ तनाव।

लक्षण

- ☞ सिरदर्द
- ☞ चक्कर आना
- ☞ अचानक शरीर के एक हिस्से में कमजोरी आना
- ☞ बेहोश हो जाना
- ☞ सांस फूलना
- ☞ अनियमित धड़कनें।

क्या करें

- ☑ चोकरयुक्त आटे की रोटी खाएं
- ☑ अधिक से अधिक फल और सब्जियों का सेवन करें।
- ☑ उच्च रक्तचाप से पीड़ित लोग अपने भोजन में नमक की मात्रा कम और निम्न रक्तचाप से पीड़ित लोग अधिक रखें।
- ☑ घर का बना सादा खाना खाएं, जंक फूड नहीं।

हृदय रोग

युवाओं में बढ़ रहा हार्ट अटैक का खतरा

हृदय रोग का मतलब है हृदय की मांसपेशियों तक रक्त पहुंचाने वाली धमनियों में किसी भी कारण से रक्त के प्रवाह में रुकावट पैदा होना। इस कारण हृदय की मांसपेशियों को भोजन व ऑक्सीजन नहीं मिल पाती और वो मरने लगती हैं। कमजोर पड़ा हृदय शरीर में रक्त के प्रवाह को कायम नहीं रख पाता और जान जाने का खतरा पैदा हो जाता है। इस पूरी प्रक्रिया को हार्ट अटैक आना कहा जाता है। हार्ट अटैक को पहले वयस्कों की बीमारी माना जाता था, लेकिन अब यह तेजी से युवाओं की बीमारी बनती जा रहा है। आज इससे ग्रस्त होने की औसत उम्र 40 से घटकर 30 साल हो गई है।

क्या है रिस्क फैक्टर

- आनुवंशिक कारण, अगर माता-पिता को हृदय रोग हो
- ☞ शारीरिक रूप से सक्रिय न रहना, कोई व्यायाम-योग-चहलकदमी न करना
- ☞ खानपान की गलत आदतें जैसे अधिक कार्बोहाइड्रेट, कम प्रोटीन, उच्च वसा वाली डाइट्स
- ☞ रक्त में कोलेस्ट्रॉल और शुगर का उच्च स्तर
- ☞ रक्तदाब अधिक होना
- ☞ मेनोपॉज को पहुंच चुकी महिलाएं धूम्रपान और शराब का सेवन।

लक्षण

- ☞ छाती में दर्द
- ☞ घबराहट
- ☞ पसीना अधिक आना
- ☞ दिल की धड़कन तेज हो जाना।
- ☞ चलने और सीढ़ियों पर चढ़ने में छाती में दर्द होना, सांस फूलना
- ☞ आधी रात में सांस फूलना
- ☞ ठंडा पसीना आना
- ☞ डायबिटीज के रोगियों में ये लक्षण दिखाई नहीं देते हैं, ऐसे लोग साइलेंट हार्ट अटैक के शिकार होते हैं।

क्या करें

- ☑ तनाव न पालें, जीवन का आनंद लें
- ☑ व्यायाम करें, इससे मेटाबॉलिज्म बढ़ेगा, मोटापा व थकान कम होगी
- ☑ रक्त में शुगर के स्तर को नियंत्रित रखें
- ☑ संतुलित और पोषक भोजन सेवन करें
- ☑ ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखें
- ☑ ब्लड शुगर, कोलेस्ट्रॉल, बीपी जांच
- ☑ नियमित रूप से ईसीजी कराएं (अगर हृदय रोगों की आशंका हो तो ईको और टीएमटी कराएं)

मोटापा

मोटापा एक मेडिकल स्थिति है, जिसमें शरीर पर वसा की परतें इतनी मात्रा में जमा हो जाती है कि वो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो जाती हैं। इसकी वजह से डायबिटीज, हाइपरटेंशन, हार्ट फेलियर, अस्थमा, कोलेस्ट्रॉल, अत्यधिक पसीना आना, जोड़ों में दर्द, बांझपन आदि का खतरा बढ़ जाता है।

लक्षण

- ☞ भार बढ़ना
- ☞ बीएमआई 25 से अधिक हो जाना
- ☞ कपड़ों की साइज बढ़ जाना।

क्या करें

☑ भार नियंत्रित रखें ☑ संतुलित भोजन खाएं (उचित प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और वसा कम, ढेर सारे फल, सलाद और खूब सारा पानी पिएं) ☑ एक दिन में 600 ग्राम हरी सब्जियां खाने की कोशिश करें।

नई किताब

दाधीच का बालोपयोगी खण्डकाव्य

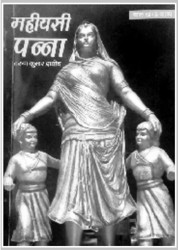

'**महीयसी** पन्ना' तरूण कुमार दाधीच का अनुपम प्रकाशन से सद्य प्रकाशित खण्ड काव्य है। उनके अनुसार मेवाड़ राजघराने की धाय पन्ना के त्याग, साहस, समर्पण, स्वामी भक्ति और पुत्र के बलिदान से नई पौध को परिचित कराने के लिए ही उन्होंने इस महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पात्र को लेकर खण्ड-काव्य की रचना की है। बच्चों की प्राय: कहानी सुनने में रूचि रहती है, लेकिन दाधीच ने उनके लिए एक प्रेरणास्पद ऐतिहासिक पात्र को लेकर काव्य की रचना की है, जिसके लिए उन्हें बधाई।

मेवाड़ में सत्ता के पारिवारिक संघर्ष में महाराणा संग्राम सिंह(सांगा)-कर्मवती के पुत्र उदय सिंह के लालन-पालन के लिए पन्ना नामक गुर्जर महिला को धाय नियुक्त किया गया था, क्योंकि रूग्ण माता शिशु उदय की ठीक से देखभाल करने में समर्थ नहीं थी। इसी दौरान उदयसिंह की हत्या कर बनवीर मेवाड़ के शासन को हस्तगत करने पर आमादा था। एक रात बनवीर ने दबे पांव पन्ना के कक्ष को खटखटाया तो पन्ना सिहर उठी। वह बनवीर का इरादा समझ चुकी थी। उसके सामने अब दो ही विकल्प थे या तो वह उदय को अपने सामने मरता देखे या उसे किसी तरह वहां से निकाल ले जाए। लेकिन यह संभव नहीं था। बाहर निकलने का कोई सुगम मार्ग भी न था। एकाएक उसकी आंखें चमक उठी। उसने उदय का वेश अपने इकलौते पुत्र चंदन को धारण करवा कर उदय को छिपा दिया। कक्ष में प्रवेश करते ही बनवीर ने उदय के वेश में सोए चंदन की हत्या कर दी। मां के सामने सुकुमार बेटे के तलवार से टुकड़े-टुकड़े हो गये पर उसके मुंह से उफ तक न निकली। बाद में वह उदयसिंह को बचा ले गई और कालान्तर में वह मेवाड़ का सफल शासक बना और अपने नाम से 'उदयपुर' नगर की स्थापना की। इसी सारे

लम्बी लड़ाई के बाद भी संघर्ष शेष

संयुक्त राष्ट्र में एशिया प्रशांत क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाली पहली किन्नर हैं, लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी। जिन्होंने जीवन की तमाम दुश्वारियों को झेलते हुए खुद के लिए एक मुकाम बनाया। वह मानवाधिकार कार्यकर्ता हैं, अभिनेत्री हैं और डांसर भी। पेश हैं उनके एक भाषण के अंश :

हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में रहते हैं। किन्नर या हिजड़ा समुदाय के साथ भेदभाव कोई नई बात नहीं है। बहुत बुरा लगता है, जब लोग हमें समाज से अलग समझते हैं, हमें अपना नहीं मानते। वैसे यह अच्छी बात है कि चुनाव आयोग ने किन्नरों को भी वोट डालने का अधिकार दिया है। वोटर लिस्ट में हमें 'अन्य' की श्रेणी में रखा गया है। सुकून है कि हमें भी बाकी नागरिकों की तरह सरकार चुनने का अधिकार दिया गया है। दोस्तों, आज जब मैं आप सबसे मुखातिब हूं, तो आपके लिए यह जानना जरूरी है कि आखिर हिजड़ा होने के बावजूद मैं कैसे इस मंच तक पहुंची। किन दिक्कतों का सामना करते हुए मैंने अपने हक की लड़ाई लड़ी।

मेरे सवाल, मेरा बचपन

जब मैं कुछ और बड़ी हुई, तो दिक्कतें बढ़ने लगीं। सहपाठी मुझे समलैंगिक कहने लगे। मुझे तो इस शब्द का मतलब भी नहीं पता था। मैंने डिक्शनरी में इस शब्द के मायने खोजने की कोशिश की। उन दिनों देश में एक ही समलैंगिक व्यक्ति मशहूर थे, जिनका नाम था अशोक राव काव।

मेरा बचपन सहज नहीं था। सहपाठी मुझ पर कमेंट करते थे, बहुत बुरा लगता था। तमाम दुश्वारियों के बीच मैंने पढ़ाई पूरी की। आज भी हिजड़ा समुदाय शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा के अधिकार से वंचित है। क्या समाज को हमारी मदद नहीं करनी चाहिए?

समलैंगिक समुदाय के लोग हर रविवार को उनसे मिलने महेश्वरी गार्डन में जुटते थे। अशोक राव उनके लिए गॉड मदर थीं। एक दिन मैं भी वहां पहुंच गई। मैंने उनसे कहा, मां क्या मैं सामान्य नहीं हूं। लोग मुझे अजीब या असामान्य क्यों मानते हैं? उन्होंने कहा - बेटा, तुम तो बिल्कुल सामान्य हो, लेकिन तुम्हारे चारों ओर जो यह दुनिया है, वह असामान्य है। इसलिए तुम्हें चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। उन्होंने मुझसे पूछा, तुम क्या करती हो? मैंने कहा, मैं पढ़ती हूं। उन्होंने सवाल किया, तुम्हारे शौक क्या हैं? मैंने कहा, मुझे डांस करना बहुत पसंद है। अशोक राव ने मेरे सवालों में दिलचस्पी दिखाई। मुझे पढ़ाई पर ध्यान देने और अच्छे अंक लाने के लिए प्रेरित किया। उनसे मिलकर मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया।

मैंने दुनिया भर का दौरा किया है। मैं तमाम देशों में गई और बहुत सारे लोगों से मिली हूं। मैंने बचपन में कभी नहीं सोचा था कि बड़े होकर मैं ऐसा कुछ पाऊंगी। क्लास में बाकी बच्चों से अलग थी। मुझे लगता था कि मैं दूसरे बच्चों जैसी नहीं हूं। कहने को तो मैं लड़का थी, पर मेरे चलने और बात करने का ढंग लड़कियों जैसा था। सहपाठी मुझ पर कमेंट करते थे। बुरा लगता, दुख भी होता था। जब बच्चे मुझे चिढ़ाते थे, तब मुझे समझ में नहीं आता था कि मेरे साथ क्या हो रहा है। मैं डांस बहुत अच्छा करती थी। मुझें लड़कियों की तरह संवरना भी बहुत पसंद था। मैं पढ़ाई में होशियार थी। टीचर को मुझ पर नाज था। पर मुझे एहसास था कि मुझमें कुछ तो गड़बड़ है।

आत्मविश्वास से भरपूर

धीरे-धीरे मेरे अंदर आत्मविश्वास बढ़ता गया। मैंने दूसरों की परवाह करनी छोड़ दी। स्कूल आते-जाते समय मैं बेफिक्र होकर सड़क पर चलने लगी, बिना यह फिक्र किए कि लोग मुझ पर क्या कमेंट कर रहे हैं। जीवन की दिक्कतें मुझे पढ़ाई करने से नहीं रोक पाई। मैंने कुलीन वर्ग की तथाकथित तहजीब सीख ली थी। अब मैं बढ़िया अंग्रेजी बोलने लगी थी। मैं आत्मविश्वास से भरपूर थी।

मैंने डांस सीखा और अपनी मां के नाम पर एक डांस एकेडमी खोली। हालांकि यह आसान नहीं था। मैं उत्तरप्रदेश के गोरखपुर इलाके से हूं। मेरा परिवार रूढ़िवादी था। उन दिनों डांस शो में मोहिनी या लक्ष्मी के किरदार में डांस करती थी। मेरे कपड़े लड़कियों की तरह होते थे। रिश्तेदारों को बुरा लगता था कि एक लड़का लड़कियों की तरह डांस कर रहा है। मैंने टीवी शो व फिल्मों में काम भी किया।

नया सफर

लोग मेरी प्रतिभा से प्रभावित थे, लेकिन मेरा किन्नर होना उन्हें अखरता था। वे अक्सर कहते थे कि इस लड़के के साथ कुछ तो गड़बड़ है। पर फिल्म में मुझे देखने के बाद उनका नजरिया बदलने लगा। इस बीच मेरी मुलाकात सबीना से हुई। वह हिजड़ा थीं। उन्होंने मुझे हिजड़ा समुदाय में प्रचलित गुरु–चेला परम्परा के बारे में बताया। सबीना मेरी गुरु बन गईं। मुझे याद है, एक बार मैंने सबीना से नववर्ष के जश्न में चलने के लिए कहा। उन्होंने मना कर दिया। उन्होंने कहा, लोग हम पर कमेंट करेंगे। पर मैंने कहा, हम आजाद भारत में रहते हैं, हम सार्वजनिक जगहों पर जा सकते हैं। हम वहां खाएंगे, पिएंगे और बिल का भुगतान करेंगे। हमें कोई नहीं रोक सकता। मैं सबीना को वहां जबरदस्ती ले गई। यकीनन लोग हम पर कमेंट कर रहे थे। लेकिन मुझे कोई फर्क नहीं पड़ा। हालांकि सबीना के चेहरे पर असहजता के भाव साफ थे।

'अस्तित्व' का गठन

सबीना बहुत पढ़ी–लिखी हैं। उस समय वह पीएचडी कर रही थीं। सबीना ने मुझे हिजड़ा संस्कृति के बारे में बताया। हम मानते हैं कि पूरी प्रकृति नारी है। पुरुष केवल एक है : विष्णु। विष्णु यानी नारायण के अलावा सारे इंसान नारी हैं। मुंबई में सात हिजड़ा परिवार हैं। हर परिवार का एक मुखिया होता है, जिसे हम नायक कहते हैं। फिर मैं हिजड़ा परिवार का हिस्सा बन गई। सबीना ने किन्नरों की मदद के लिए एक संस्था बनाई, मैंने इस काम में उनकी मदद की। इसके बाद मैंने 'अस्तित्व' नाम का संगठन बनाया। हिजड़ा समुदाय सदियों से अस्तित्व में हैं। हर धार्मिक ग्रंथ में हमारा जिक्र है। पर आज भी हम अपने बुनियादी अधिकारों से वंचित हैं। जब हिंजड़ा बच्चों को उनका परिवार अपनाने से इनकार कर देता है, तो क्या समाज को उनकी मदद नहीं करनी चाहिए? क्या किन्नरों को शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा का हक नहीं मिलना चाहिए? हमने काफी लम्बी लड़ाई लड़ी है और हम जानते हैं कि हमारा संघर्ष अभी बाकी है।

– प्रस्तुति : मीना त्रिवेदी

प्रत्यूष
प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने
के लिए सम्पर्क करें
75979 11992, 94140 77697

Pavan Roat
Director
94141 69583

नए गैस कनेक्शन
तुरन्त उपलब्ध है

HP GAS
SURYA GAS AGENCY

HP GAS

19 K.G. गैस सिलेण्डर
मांगलिक कार्यक्रम एवं
व्यवसायिक उपयोग हेतु
सम्पर्क करें।

12, Vinayak Complex,
Opp. Mahasatiya
Dainik Bhaskar Road,
Ayad, Udaipur

निवेश का बेहतर विकल्प है
एक और घर

एक और घर यानी सेकेंड होम। यह न सिर्फ नियमित रूप से आमदनी का स्रोत बनता है, बल्कि भविष्य को सुरक्षित करने के लिहाज से भी अहम है। बता रही हैं - कुसुमलता

अमन और आस्था आगरा के मूल निवासी हैं। दोनों दिल्ली की एक फर्म में अच्छे पद पर आसीन हैं। अमन-आस्था की मासिक आय इतनी है कि वे जीविका के लिए भरपूर खर्च करने के बाद भी अच्छी-खासी बचत कर लेते हैं। इस बचाई गई रकम को उन्होंने एक और मकान में निवेश करने की सोची। इस निवेश में उन्हें हर तरह से फायदा ही फायदा नजर आ रहा है।

जब खरीदें दूसरा घर

- सबसे पहले यह सुनिश्चित करें कि कौन सी लोकेशन में सेकेंड होम खरीदना बेहतर होगा। साथ ही अपने बजट, समय-सीमा आदि के बारे में भी सोचें कि आप कितना खर्च कर सकते हैं व कितने समय तक प्रॉपर्टी का होल्ड कर सकते हैं।
- प्रॉपर्टी का बाजार भाव पता करें और तुलना करें कि प्रॉपर्टी के रेट आपकी पहुंच में हैं या नहीं। इसके लिए रियल एस्टेट एडवाइजर से सलाह-मशविरा कर सकते हैं।
- सर्टिफाइड पब्लिक अकाउंटेंट और टैक्स एडवाइजर से बात करें। टैक्स से संबंधित कानून, लोन और उस पर ब्याज दर के बारे में सही-सही जानकारी प्राप्त कर लें।
- जिस जगह घर ले रहे हैं, वहां के बारे में जानकारी हासिल कर लें कि भविष्य में प्रॉपर्टी के रेट बढ़ेंगे या नहीं।
- अगर आप यह सेकेंड होम किराए पर देने के बारे में सोच रहे हैं, तो वहां मौजूद तथा भावी मूलभूत सुविधाओं के बारे में जान लें। आसपास अच्छे स्कूल, यातायात के विकल्प, रोजमर्रा की जरूरतों के लिए आवश्यक दुकानें, अस्पतालों आदि के साथ-साथ पुलिस व फायर ब्रिगेड के बारे में भी पर्याप्त जानकारी हासिल कर लें। इलाके में होने वाले अपराध की स्थिति भी भली प्रकार से जान लें।
- सेकेंड होम पर होने वाले खर्च की लिस्ट बनाएं। घर खरीदने के बाद आपको कितना खर्च प्रॉपर्टी टैक्स, बेसिक यूटिलिटीज आदि पर करना है, इसके बारे में पहले ही प्लानिंग कर लें।
- घर फाइनल कर लेने के बाद उसका बारीकी से निरीक्षण करना न भूलें। घर में किसी प्रकार की टूट-फूट तो नहीं है, यह ठीक प्रकार से जांच कर लेनी चाहिए।
- संपत्ति से संबंधित जोखिम को देखते हुए घर का इंश्योरेंस करा लें। इससे भूकम्प, बाढ़, आग जैसी आपदाओं में सहायता मिलती है।
- संपत्ति के कागजात ठीक प्रकार से जांच लें।

क्या हैं फायदे

टैक्स में कटौती : ऐसे कई प्रकार के टैक्स हैं, जिनकी कटौती में सेकेंड होम मदद करता है। प्रॉपर्टी टैक्स, मॉर्गेज इंटरेस्ट, मेंटेनेंस के खर्च, प्रॉपर्टी मैनेजमेंट आदि में सेकेंड होम आपकी काफी हद तक मदद करता है। इससे मिलने वाले रेंट से प्रॉपटी से जुड़े कई तरह के खर्चों का भार उठाया जा सकता है।

कुछ रूकावटें, कुछ तैयारी

फाइनेंस कराने में परेशानी : सेकेंड प्रॉपर्टी खरीदते समय कम-से-कम बीस प्रतिशत डाउन पेमेंट करनी होती है। एकमुश्त बड़ी रकम अदा करने में आपको परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। इसके लिए आपको तत्काल अच्छी रकम की जरूरत होती है।

मेंटेनेंस का खर्च : प्रॉपर्टी लेने के बाद उसके रखरखाव और देखभाल पर भी ध्यान देना होता है। इसमें आपका कीमती समय व पैसा दोनों ही लगते हैं।

ट्रैवल टाइम : अपनी प्रॉपर्टी की देखभाल के लिए आपको समय-समय पर वहां जाना भी होता है। इसमें लगने वाला समय आपको परेशान कर सकता है। इसीलिए अनुकूल लोकेशन पर ही प्रॉपर्टी लें।

बेचते समय परेशानी : मुमकिन है कि जिस समय आपको प्रॉपर्टी बेचनी हो, तब उसके अच्छे दाम न मिल पाएं।

रेडी टू शिफ्ट फ्लैट बेहतर

सेकेंड होम ऐसा ही लें, जो रहने के लिए तैयार हो। तभी आप इसे किराए पर दे सकते हैं। इससे आपकी मासिक आय में नियमित रूप से बढ़ोतरी होगी और प्रॉपर्टी के दाम भी समय के साथ जरूर बढ़ेंगे।

सुरक्षित भविष्य – सेकेंड होम से आर्थिक स्थिति काफी मजबूत हो जाती है। इससे भविष्य को काफी हद तक सुरक्षित बनाया जा सकता है। वजह यह है कि प्रॉपर्टी एक स्थाई और दीर्घकालीन निवेश है और प्रॉपर्टी के दाम आमतौर पर बढ़ते ही हैं, जिससे भविष्य में स्थिति और भी बेहतर हो जाती है।

बुढ़ापे का साथी – सेकेंड होम रिटायरमेंट के बाद आपका सहारा बनता है। इसके किराए से आने वाले पैसों से आपका खर्च तो चलेगा ही, साथ ही साथ आपको यह तसल्ली भी रहेगी कि बीमार पड़ने या आपातकाल में आपके पास सहारा है।

दो शहरों में भी हो सकता है आपका घर : मान लीजिए आप स्थायी तौर पर जयपुर के रहने वाले हैं लेकिन नौकरी करते हैं दिल्ली में। अगर दिल्ली में आप प्रॉपर्टी लेते हैं तो यह आपके लिए सुविधा ही होगी।

जब कभी भी सेकेंड होम लें, तो उसे पांच सालों तक होल्ड करें। पांच सालों में उसके दामों में आपको बढ़िया मुनाफा मिलेगा।

वर्तमान में धन-निवेश का यह बढ़िया विकल्प है, क्योंकि सोने-चांदी की तुलना में प्रॉपर्टी कहीं ज्यादा मुनाफा देती है।

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

Tara

तारा नेत्रालय – उदयपुर

में नई सुविधाओं की शुरूआत

ओमदीप चैरिटेबल हॉस्पीटल तथा डायग्नोस्टिक सेन्टर

कम खर्च में पूरा स्वास्थ्य

- बाजार से आधी कीमतों पर खून व मूत्र जाँच
- फिजीशियन (एम.डी. मेडिसिन) द्वारा निःशुल्क परामर्श, समय : 11 बजे से 2 बजे तक

पता : 236, हिरण मगरी, सेक्टर 6, उदयपुर (राज.)

सम्पर्क सूत्र : +91 7821855749

प्रत्यूष

मजबूत

भगवान अटलानी

निर्णय लेने के बाद चन्दन जी ने समेटना शुरू कर दिया। समितियों के तीनों सम्मेलनों के उपरांत सदस्यों को भेजे गए विस्तृत कार्यक्रम विवरण की प्रतियां निकलवाईं। अधिकरण की ओर से आयोजित कार्यक्रमों की समाचार पत्रों में प्रकाशित ख़बरों को फ़ाइल में रखा जाता था। फोटोग्राफ़ एल्बम में लगाए जाते थे। जिन कार्यक्रमों में चन्दन जी उपस्थित रहे उन समाचारों की छाया प्रति की फ़ाइल तैयार कराई। चन्दन जी जिनमें दिखाई देते थे, उन चित्रों की प्रतियां निकलवा कर अलग एल्बम में लगवाईं।

अधिकरण के पदाधिकारियों, सदस्यों और समिति सदस्यों का व्यक्तिश: नाम लिखवाकर कंप्यूटर से पत्र तैयार कराए। इन पत्रों पर हस्ताक्षर करने से पहले अपनी हस्तलिपि में शुभकामनाएं लिखकर व्यक्तिगत स्पर्श दिया। पहले दिन से लेकर कार्यकाल के अंतिम दिन तक संपन्न कराए गए और सुनिश्चित रूप से नियोजित किये गये आसन्न कार्यक्रमों की सूची बनवाई। कार्यक्रम के साथ दिनांक, स्थान और संयोजक के अलग-अलग स्तंभ बनवाकर इस सूची को छपवाया। छपे हुए पत्रक को चन्दन जी के व्यक्तिगत पत्र के साथ अधिकरण के पदाधिकारियों, सदस्यों और समिति सदस्यों को भिजवाया।

राज्य के प्रचार निदेशक सहित बीते तीन वर्षों में राजस्थान की जिन संस्थाओं से सहयोग लेकर कार्यक्रम कराए गए थे, उन्हें धन्यवाद देते हुए चन्दन जी के हस्ताक्षरित पत्र के साथ इस अवधि में संपन्न कार्यक्रमों का पत्रक भेजा गया। प्रायोजकों को भी उसी प्रकार पत्र और पत्रक भेजा गया। यही प्रक्रिया लेखकों, कलाधर्मियों, भाषा विदों, भाषा प्राध्यापकों व भाषा अध्यापकों के सन्दर्भ में अपनाई गई।

सूची के अनुसार, तीन वर्षों में भाषा अधिकरण की तेज़ रफ़्तार सबको चौंकाने वाली थी। चन्दन जी का कार्यकाल कुल एक हज़ार पिचानवे दिनों का था। इस दौरान भाषा अधिकरण की ओर से प्रदेश में बाईस स्थानों पर सात सौ सैंतालीस कार्यक्रम हुए। सच था कि राज्य के प्रत्येक ज़िले में अधिकरण नहीं पहुंच पाया किंतु अनेक आयोजन ऐसे भी थे जो एक ही दिन प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर संपन्न हुए। चन्दन जी की उपस्थिति में हुए कार्यक्रमों की तुलना में उनकी अनुपस्थिति में संपन्न आयोजनों की संख्या बहुत बड़ी थी।

नेतृत्व निर्माण और आत्मविश्वास सृजन होने के कारण 'हम भी कर सकते हैं' की भावना का विकास हुआ। दिशा निर्देश मिलते रहे। संबल प्रदान किया जाता रहा। चन्दन जी या अधिकरण के प्रतिनिधि की ग़ैर हाज़िरी रो । नहीं बन पाई। गणना की गई तो औसत डेढ़ दिनों में लगभग एक कार्यक्रम हुआ था। कहां चन्दन जी से पहले वर्ष में अधिकतम बारह अर्थात् तीन वर्षों में छत्तीस कार्यक्रम, कहां अब तीन वर्षों में, डेढ दिन में एक आयोजन? पहली बार चन्दन जी को अहसास हुआ कि विभिन्न प्रकार की बाधाओं को पार करते हुए जो मैराथन दौड़ उनके स्नायुओं पर लगातार तीन वर्ष हावी रही, वह कितनी उपलब्धिपरक थी?

प्रतिवर्षांत पर चन्दन जी राज्य के प्रचार निदेशालय की छत्रछाया में पत्रकार वार्ता आयोजित करते थे। कार्यकाल का तीसरा और अधिकरण में अध्यक्ष के नाते इस बार चन्दन जी का अंतिम वर्ष था। हमेशा की भांति पत्रकारों को दोपहर भोजन के साथ प्रचार निदेशालय में उन्होंने नहीं बुलाया। भविष्य पूर्ण विराम की तरह उद्वेग रहित था। आगामी योजनाओं के प्रचार के संदर्भ में उत्कंठा मौन थी। तीन वर्षों के लेखे-जोखे को अगर प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया ने यथेष्ट महत्त्व नहीं दिया तब भी विशेष अंतर पड़ने वाला नहीं था। पत्रकार वार्ता का समय दोपहर बाद चार बजे का रखा गया। केवल इसलिये क्योंकि यह समय भोजन नहीं, चाय की अपेक्षा करता था।

भाषा अधिकरण के अध्यक्ष के रूप में तीन वर्षों के कार्यकाल का अंतिम दिन चन्दन जी ने कार्यालय में व्यतीत करने का निर्णय लिया। अधिकरण में समर्पित भाव से मन लगाकर काम करने वाले एक कर्मचारी से चन्दन जी हमेशा प्रभावित रहते थे। काम अधिक होने की शिकायत अधिकरण में कार्यरत प्रत्येक कर्मी ने की थी। वह अकेला कर्मचारी था जिसने जल्दी आने, देर से जाने, स्थानीय स्तर पर कार्यालय से बाहर जाने या दूसरे शहर जाने के अचानक मिले आदेश को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करने में कभी हिचकिचाहट नहीं दिखाई।

अन्य कर्मचारी दुखी, आंदोलित या ईर्ष्यालु अनुभव न करें इसलिए चन्दन जी ने कार्यकाल के अंतिम दिन को चुना था उसे प्रशस्ति पत्र देने के लिए। कार्यालय जाकर, टाइप कराके जब अपने कक्ष में बुलाकर सचिव हेमंत जी और अधिकरण के स्टाफ की उपस्थिति में कर्मचारी को प्रशस्ति पत्र दिया तो वह अभिभूत था। अभिभूत होने का कारण स्वयं उसने बताया। उसने, सदैव हर अध्यक्ष के कार्यकाल में ऐसी ही निष्ठा, लगन और कर्त्तव्य परायणता से काम किया था। सबने उसका भरपूर उपयोग किया, मौखिक रूप से प्रशंसा की लेकिन लिखित में कभी कुछ नहीं दिया।

चन्दन जी सोच रहे थे, कार्यालयीन प्रक्रियाओं से परिचय और कोरी लफ़्फ़ाजी में यही अंतर होता है शायद। प्रशस्ति पत्र कर्मचारी की गोपनीय फ़ाइल में लगेगा। पदोन्नति में तो लाभ मिलेगा ही, काम देखने से पहले ही आने वाले अध्यक्ष को उसकी कर्मठता का परिचय मिल जाएगा।

दोपहर हो गई थी। नए अध्यक्ष की नियुक्ति के संबंध में अब तक कोई सूचना नहीं आई थी। चन्दन जी को याद आया, उनके नियुक्ति आदेश निर्धारित तिथि से पंद्रह दिन पहले ही जारी हो चुके थे। बाक़ायदा पुराने और नए अध्यक्ष के बीच कार्यभार सौंपने-संभालने की औपचारिकता पूरी हुई थी। इस बार आदेशों के अभाव में लगता था, चन्दन जी को कार्यभार संभलाए बिना ही भाषा अधिकरण को अलविदा कहना पड़ेगा। इतना ज़रूर था कि अधिकरण का अध्यक्ष पद रिक्त रहा हो इसके तो उदाहरण थे किंतु कार्यकाल समाप्त होने से पंद्रह दिन पूर्व नए अध्यक्ष के नियुक्ति आदेश ही गुम हैं। ऐसा कभी नहीं हुआ था।

पत्रकार वार्ता में अब तक पत्रकारों के साथ हुई तीन मुलाक़ातों की तरह अच्छी उपस्थिति थी। फ़ाइल में विज्ञप्ति व वार्षिक पत्रिका के साथ चन्दन जी के कार्यकाल में संपन्न अधिकरण की गतिविधियों का पत्रक भी था। उपाध्यक्ष और कोषाध्यक्ष चन्दन जी के साथ बैठे थे। चन्दन जी के प्रारंभिक वक्तव्य के पश्चात् प्रश्नोत्तर का दौर चला। अन्य प्रश्न जानकारी मूलक कहे जा सकते थे किंतु दो पत्रकारों ने खोजी प्रकार की जिज्ञासाएं रखीं।

जिस समाचार पत्र ने माउंट आबू में कराए गए महिला सम्मेलन के बारे में आक्रामक टिप्पणियां की थीं, उसके प्रतिनिधि का प्रश्न था, ''पिछले साल आप लोगों ने माउंट आबू में महिला सम्मेलन आयोजित किया था। भाग लेने वाली महिलाओं का चयन किस आधार पर किया गया था?''

सम्मेलन के बाद छपी टिप्पणी चन्दन जी को अच्छी तरह याद थी। टिप्पणी में उठाए गए बिंदुओं, लगाए गए आरोपों और आक्षेपों के उत्तर में स्वयं को जो कुछ उस समय उन्होंने कहा था, वह भी स्मरण था। लेकिन टकराने से कोई लाभ होने वाला नहीं था। इसलिए उन्होंने कहा, ''भाषा अधिकरण के पास महिलाओं के क्षेत्र में काम करने के लिए अलग तंत्र नहीं है। विभिन्न कार्यक्रमों के संचालन के लिए बनी समितियों के सदस्यों से हमने अनुरोध किया था कि जिन्हें उपयुक्त समझें उन महिलाओं को सम्मेलन के लिए नामित करें।

तुरंत प्रति प्रश्न हुआ, ''क्या अधिकांश सदस्यों ने अपने-अपने परिवार की महिलाओं के नाम की सिफ़ारिश की थी?''

सीधा उत्तर न देकर चन्दन जी ने टिप्पणी की, ''अधिकरण के कार्यक्रम संपादन में जिन महिलाओं ने योगदान दिया, सदस्यों ने उनके नाम अनुशंसित किए।''

चन्दन जी के उत्तर में पत्रकार से सहमति और परिवार की महिला के नाम की सिफ़ारिश को उचित ठहराने की बात के साथ यह कहने की कोशिश भी थी कि केवल परिवार की महिलाओं को महिला सम्मेलन में नहीं बुलाया गया था। उद्धरित किए बिना पत्रकार के पास नकारात्मक, सकारात्मक तथा तटस्थ हो जाने की सुविधा थी। पत्रकार से बहस में उलझ कर वातावरण ख़राब करने के स्थान पर उन्होंने प्रश्न पूछने को उत्सुक दूसरे पत्रकार की ओर देखा। प्रश्नों की श्रृंखला स्वयंमेव दूसरी दिशा में मुड़ गई।

एक प्रमुख समाचार पत्र के प्रतिनिधि ने शरारत से पूछा, ''आज की पत्रकार वार्ता आप तीन सालों के कार्यकाल के आरंभ में कर रहे हैं या अंत में?'' चन्दन जी ने तपाक से उत्तर दिया, ''अंत में।''

प्रश्न पूछने वाले पत्रकार ने फिर पूछा, ''सुनते हैं, राजस्व मंत्री और शिक्षा मंत्री आपका कार्यकाल बढ़ाने के हिमायती हैं?''

''हो सकता है, मगर मैं इसके लिए तैयार नहीं हूं।'' मुस्कराते हुए चन्दन जी उठ खड़े हुए और आगंतुकों को उस ओर चलने का संकेत दिया जहां खाद्य सामग्री और चाय की व्यवस्था थी। हमेशा की तरह वर्ष भर उपयोग के लिये तैयार कराये गये स्मृति चिह्न पत्रकारों को भेंट किए गए। दूसरे दिन समाचार माध्यमों में छपे व इलेक्ट्रानिक मीडिया पर दिखाए गए समाचारों को देखकर चन्दन जी को एक बार भी अफ़सोस नहीं हुआ कि पत्रकार वार्ता भोजन के साथ क्यों नहीं रखी गई थी।

कार्यकाल समाप्त हुए एक माह से अधिक समय व्यतीत हो चुका था। भाषा अधिकरण का अध्यक्ष पद राजस्व मंत्री के चुनाव क्षेत्र अजमेर के एक चिकित्सक के नाम हो गया था। एकाएक एक आयोजन में चन्दन जी का राजस्व मंत्री से आमना-सामना हो गया।

चन्दन जी ने नमस्कार किया तो राजस्व मंत्री ने पूछा, ''कैसे हैं चन्दन जी?''

''कृपा है। आप कैसे हैं?''

''हम ठीक हैं।'' वे जरा ठिठके, फिर बोले, ''कुछ भी हो यार, आप लेखक लोग होते बड़े मज़बूत हैं।''

चन्दन जी के होंठों पर मुस्कान थी।

(शीघ्र प्रकाश्य उपन्यास 'कामनाओं का कुहासा' का अंश)

Yoga Classes

SESSIONS WITH BIPIN MATHEW
YOGA AT YOUR PLACE

The Body Achieves What The Mind Beleives

Yoga For : Strength Gaining, Advance Yoga, Yoga for Kids, Weigth Loss, Diabetes, Thyroid Cardio.
Flexible Timing as per clients

For more details contact us - 7727974026

मिट्टी के विविध कलात्मक रूप

मीना अग्रवाल प्रियम

चाक में घूमा मिट्टी का लोंदा। मिट्टी से सने दो हाथ उसे आकार देने में व्यस्त है। चाक घूमता है और वे हाथ मिट्टी को आकार देने लगते हैं। यह कुम्हार ही है जो मिट्टी को नये-नये रूपों में हमारे सामने रख देता है। गर्मी के दिनों में घड़े हमारी प्यास बुझाते हैं तो दिवाली में मिट्टी के दिये घर को रोशन करते हैं। चलिये, हम देखते हैं कि कैसे कुम्हार मिट्टी को आकार देता है।

सबसे पहले कुम्हार खेतों से मिट्टी एकत्र करते हैं(यह मिट्टी उपजाऊ दोमट और बलुआ मिट्टी का मिश्रित रूप है।) फिर इसे कूट-पीस कर एकसार यानी महीन किया जाता है। अब भविष्य में आकार लेने वाली अनगढ़ मिट्टी को पानी में भिगोने के पश्चात् इस मिट्टी को आटे के सामान गूंथा जाता है। इसे हाथों से बहुत मिलाया जाता है, जिससे मिट्टी फिसलने की हद तक चिकनी हो जाती है। कई लोग इसमें भूसी और रुई भी मिलते हैं।

पात्र तैयार करने योग्य मिट्टी बना लेने के उपरांत, मिट्टी का एक बड़ा सा लोंदा चाक पर चढ़ाया जाता है, तत्पश्चात् कुंभकार अपने मजबूत हाथों से, एक डंडे की सहायता से चाक की गति तेज करता है। जब चाक में मनचाही ऊर्जा का संचार हो जाता है, तो शुरू होती है, मेहनतकश कलात्मक हाथों की बाजीगरी। एक-एक करके बर्तन चाक से उतरने लगते हैं। अंगूठे के सहयोग से, मनचाही-मनमोहक आकृतियां आकार लेती हैं। पहले बड़े पात्र यानी घड़े इत्यादि बनाये जाते हैं। पात्रों को अवरोह क्रम में बनाया जाता है। सुराही, झर-झर मिट्टी के गुल्लक-फूलदान, सकोरे, गुल्लक, मिट्टी के दीये और न जाने क्या-क्या ? ये सभी कुम्हार के कुशल हाथों के खिलौने हैं। इन्हें कुम्हार बड़ी नजाकत के साथ सूखने के लिए रखते हैं।

अब बारी आती हैं, इन्हें पकाने की। बर्तन पकाने के लिए कुम्हार एक बार में 500 से 1000 तक कंडे सुलगाते हैं। इन कलात्मक पात्रों को लाल होने तक आंच में पकाया जाता है। इस तरह मिट्टी की चीजें पककर मजबूत हो जाती हैं और बिक्री के लिए बाजार में आती हैं।

स्मृति शेष

कवि माधव दरक का निधन

कुंभलगढ़। राजस्थानी गीतों के रचयिता एवं साहित्यकार माधव दरक(86) का 2 जनवरी को निधन हो गया। 'मायड़ थारो वो पूत कठे', 'एड़ो म्हारो राजस्थान' 'एकलिंग दीवान कठे' जैसे गीतों की रचना की। दरक ने काव्य यात्रा के दौरान 7 गद्य-पद्य पुस्तकें लिखी थीं। जिनका प्रकाशन महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउंडेशन द्वारा किया गया। उनके निधन पर लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, सांसद दिया कुमारी, विधायक सुरेन्द्र सिंह राठौड़, पूर्व विधायक गणेश सिंह परमार व पूर्व प्रधान सूरत सिंह दसाना ने शोक व्यक्त किया।

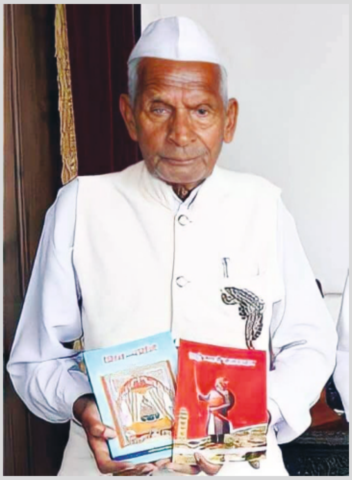

महापुरुषों की वाणी

पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक होता है। रत्न तो बाहरी चमक-दमक दिखाते हैं, जबकि पुस्तकें अंतःकरण को उज्ज्वल करती हैं।

- महात्मा गांधी

काम करने से पूर्व सोचना बुद्धिमता है। काम करते समय सोचना सतर्कता है। काम कर चुकने के बाद सोचना मूर्खता है।

- स्वामी शिवानंद सरस्वती

मनुष्य जिस संगति में रहता है, उसकी छाप उस पर पड़ती है। उसका निजगुण छिप जाता है। वह संगति का गुण प्राप्त कर लेता है।

- रंगनाथजी

सुख बाहर से मिलने की चीज नहीं वह तो हमारे अंदर ही मौजूद है। मगर अहंकार छोड़े बगैर उसकी प्राप्ति नहीं होने वाली।

- महात्मा गांधी

गुरु की डांट पिता के प्यार से अच्छी है।

- सादी

विश्वास और श्रद्धा में बड़ी शक्ति होती है।

- स्वामी रामकृष्ण परमहंस

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड

जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)

गणतंत्र दिवस

के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

MEMBER J.K. ORGANISATION

JK TYRE & INDUSTRIES LTD.

Ph. : 0294-2493357, 2493358
2494457, 2494458, 2494459
9829665739, 9680884172
8696333357, 8696904457
8696904458, 8696904459

Website : www.shreejproadlines, shreejppackersandmovers

King Of Mini Truck

प्रो. गौतम पटेल
9414471131
8696333358

॥ जय हनुमन्ते नमः॥

SJP ROADLINES

श्री J.P. Roadlines

प्लॉट नं. 1/200, प्रतापनगर सुखेर, बाईपास रोड,
सामुदायिक भवन के पास, प्रताप नगर, उदयपुर (राज.)

B.O. : No. 136, R.K. Puram Vill. Gokul, N.H. 8, Udaipur (Raj.)

सम्पूर्ण भारत के लिए मिनी ट्रक सेवा **TATA, 407, 709, 909, LPT,** केन्टर व आईशर दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, गुजरात एवं ऑल साउथ के लिए डोर टू डोर डिलीवरी हेतु उपलब्ध है।

Mahindra
Rise.
महिंद्रा ट्रैक्टर्स
टेक्नोलॉजी से तरक्की
नया महिंद्रा 275 DI XP PLUS
श्रेणी में पहली बार
माइलेज शानदार
पावर दमदार
Mahindra
475 DI XP Plus
नया मॉडल
Mahindra 275 DI XP PLUS
Mahindra 475 DI XP PLUS
FIRST TIME IN INDUSTRY
6 YEARS WARRANTY
ज़बरदस्त ताक़त | गहरी जुताई
ज़्यादा कवरेज | ज़्यादा आराम
Mahindra
275DI
XP PLUS
अधिकृत विक्रेता :
भूमिपुत्र ट्रैक्टर्स
महिन्द्रा ट्रैक्टर्स, सेल्स-सर्विस एण्ड इम्पलिमेन्ट्स
हेड ऑफिस: टोल प्लाजा के पास, N.H. 27, गोगुंदा, जिला-उदयपुर
ब्रांच ऑफिस : उदयपुर रोड, कोटड़ा
मो.: 9772326010, 9829262148

भारत में दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान का आरंभ

कोरोना पर जीत का निर्णायक सफ़र

रेणु शर्मा

देश में कोरोना महामारी से बचाव के लिए 11 जनवरी से शुरू हुआ टीकाकरण अभियान निश्चित ही एक बड़ा और महत्त्वपूर्ण कदम है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 16 जनवरी को पूरे देश में टीकाकरण अभियान की वर्चुअल शुरुआत की। उन्होंने कहा कि टीका सुरक्षित है और परीक्षण में सुरक्षित पाए जाने के बाद ही इसके उपयोग की अनुमति दी गई है। टीके की दो खुराक लेना अनिवार्य है और टीका लगने के बाद भी लोगों को कोरोना संबंधी दिशा-निर्देशों की पूरी तरह पालना करनी होगी। जिन्हें टीका नहीं लगा है उन्हें भी सावधानीपूर्वक दिशा-निर्देशों की पालना जारी रखना होगी। उन्होंने एक बार फिर दवाई भी, कड़ाई भी का मंत्र लोगों को याद दिलाया।

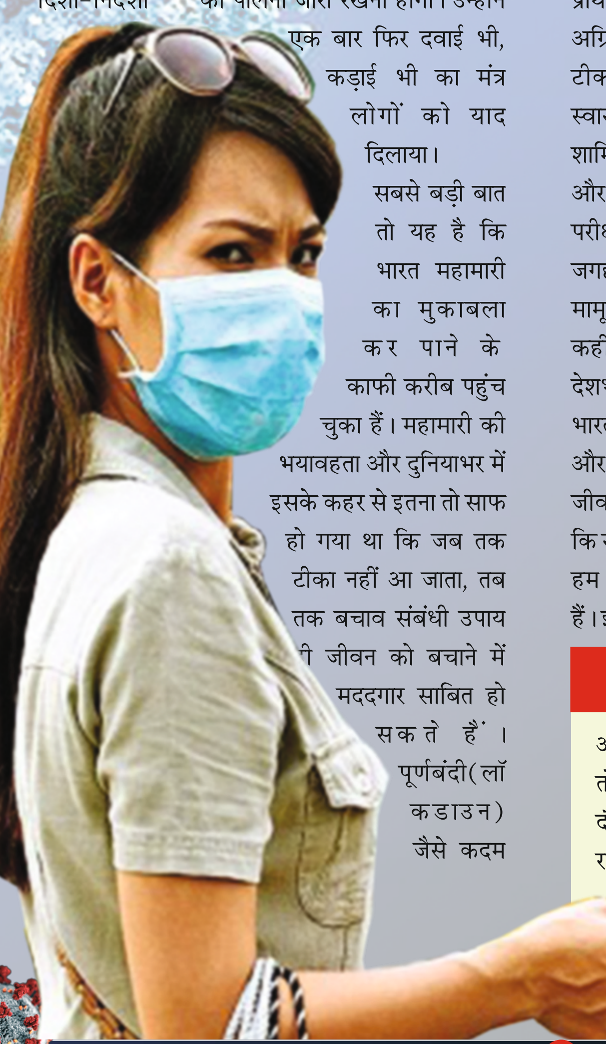

सबसे बड़ी बात तो यह है कि भारत महामारी का मुकाबला कर पाने के काफी करीब पहुंच चुका हैं। महामारी की भयावहता और दुनियाभर में इसके कहर से इतना तो साफ हो गया था कि जब तक टीका नहीं आ जाता, तब तक बचाव संबंधी उपाय ही जीवन को बचाने में मददगार साबित हो सकते हैं। पूर्णबंदी(लॉकडाउन) जैसे कदम भी इसीलिए उठाए गए थे, ताकि लोग घरों से न निकलें और संक्रमण का प्रसार न हो। इसलिए टीके को लेकर लंबे समय से इंतजार था। अमेरिका और यूरोप के ज्यादातर देशों की तस्वीर तो डराने वाली रही। भारत में भी संक्रमण से हुई मौतों का आंकड़ा डेढ़ लाख को पार कर चुका है। ऐसे में बिना किसी कारगर टीके के संभव ही नहीं था कि इस भयावह महामारी को हराया जा सके।

देश की आबादी को देखते हुए टीकाकरण का काम चुनौतीपूर्ण है। सबको जल्द ही एक साथ टीका लगा पाना किसी भी सूरत में संभव नहीं है। इसलिए इसके लिए प्राथमिकता तय की गई और फैसला हुआ कि अग्रिम मोर्चे पर जूझ रहे लोगों को सबसे पहले टीका दिया जाए। इनमें चिकित्सा और स्वास्थ्यकर्मियों से लेकर सुरक्षा बल तक शामिल हैं। आपात सेवाओं में लगे कर्मचारी और स्वयंसेवक भी हैं। टीके के लिए शोध, परीक्षण से लेकर इसके निर्माण और देश में जगह-जगह पहुंचाने का काम भी कोई मामूली नहीं है। टीकाकरण के काम में कहीं कोई चूक न हो जाए, इसके लिए देशभर में कई बार पूर्वाभ्यास किए हुए। भारत के वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, स्वास्थ्यकर्मियों और इस महाभियान से जुड़े लोगों ने जिस जीवटता के साथ काम किया, उसी का परिणाम है कि साल भर के भीतर ही कुछ गिने-चुने देशों के साथ हम भी टीका बनाने से लेकर उसे लगाने में सफल हो पाए हैं। इसे भी कम बड़ी उपलब्धि नहीं माना जाना चाहिए कि भारत में बने टीकों का दुनिया के दूसरे देशों में भी परीक्षण चल रहा है और जरूरत पड़ने पर भारत टीकों का निर्यात करने में भी सक्षम है। विभिन्न स्रोतों से मिल रही सूचनाओं की मानें, तो अभी 65-70 देश हमसे वैक्सीन मांग रहे हैं। विकसित देशों के लिए भी हम उम्मीद हैं, क्योंकि इतने बड़े पैमाने पर किसी राष्ट्र ने टीकाकरण अभियान नहीं चलाया है। जाहिर है, भारत अगुवाई वाला देश बन गया है, और टीकाकरण अभियान की सफलता से उसकी हैसियत में खासा इजाफा होगा। देश में सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के टीके कोविशील्ड और भारत बायोटेक के टीके कोवैक्सीन के आपात इस्तेमाल की मंजूरी दी गई है। हालांकि टीकों को लेकर कुछ विवाद भी खड़े हुए और इस कारण लोगों में भय और अविश्वास भी पैदा हुआ। लेकिन देश के चिकित्सा विशेषज्ञों और महामारी विशेषज्ञों ने टीके कारगर होने का भरोसा दिलाया है।

इन टीकों को मिली मंजूरी

फाइजर - बायोएनटेक	- ब्रिटेन, अमेरिका, बहरीन, कनाडा, सऊदी अरब, मेक्सिको, स्विट्जरलैण्ड, मलेशिया
मॉडर्ना	- अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा
स्पूतनिक - 5	- रूस, अर्जेंटीना
ऑक्सफोर्ड-एस्ट्राजेनका	- ब्रिटेन, भारत, अर्जेंटीना
सिनोफार्मा	- चीन, पाकिस्तान
भारत बायोटेक व सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया	- भारत

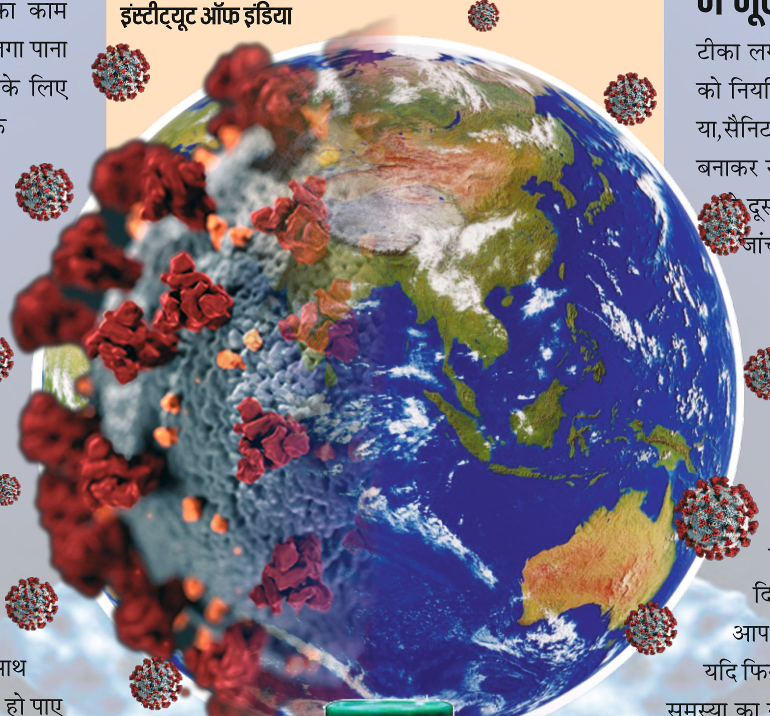

न भूलें 5 बातें

टीका लगने के बाद भी मास्क सही से पहनें, हाथों को नियमित रूप से साबुन व पानी से धोएं या,सैनिटाइजर का प्रयोग करें, परस्पर 6 फीट की दूरी बनाकर रखें, संक्रमण के लक्षण दिखने पर तुरन्त खुद दूसरों, से पृथक करें, लक्षण दिखने पर अपनी जांच अवश्य कराएं।

अभियान बहुत विशाल

यह अभियान कितना बड़ा है, इसका अंदाजा पहले चरण से ही लगाया जा सकता है। दुनिया में 100 से अधिक ऐसे देश हैं, जिनकी आबादी तीन करोड़ से कम है और भारत पहले चरण में ही तीन करोड़ लोगों का टीकाकरण कर रहा है। दूसरे चरण में से 30 करोड़ लोगों तक ले जाना है।

क्या करें, क्या नहीं करें

टीका लगवाने से पहले वैसे तो किसी खास एहतियात की जरूरत नहीं। हां, नाश्ता-खाना खाकर जाएं। यदि आपको कोरोना हुआ है तो ठीक होने के चार से छह हफ्ते बाद ही टीका लगवाएं। बुखार, खांसी, नजला हो तो उस दिन टीका न लगवाएं। यदि किसी बीमारी की पहले से दवा ले रहे हैं, तो उसे लेकर जा सकते हैं। टीका लगने के बाद टीकाकरण केन्द्र पर आधे घंटे इंतजार जरूर करें। क्योंकि कुछ लोगों में टीका लगने के बाद एलर्जी होती है। एक से दो दिन बाद बुखार, सूई लगने की जगह पर लाली या दर्द हो सकता है, लेकिन यह अपने-आप एक से दो दिन में ठीक हो जाता है। इससे परेशान होने की बिल्कुल जरूरत नहीं। यदि फिर भी कोई दिक्कत लगे तो हेल्पलाइन नंबर 1075 पर कॉल कर समस्या का समाधान ले सकते हैं। - **डॉ. प्रो. रणदीप गुलेरिया, निदेशक, अ.भा. आयुर्विज्ञान संस्थान(एम्स)**

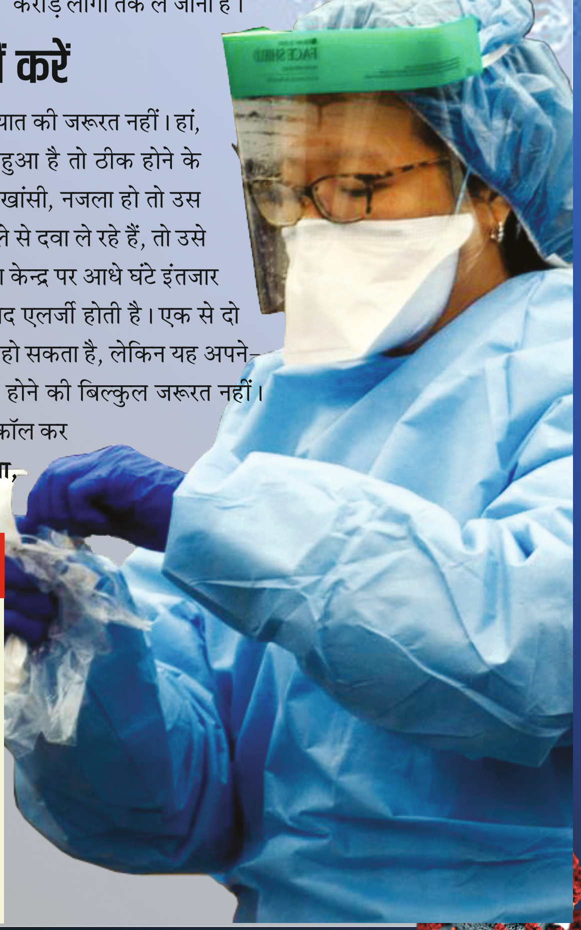

नहीं भूले कोरोना का वो दौर : मोदी

आज भारत जब अपना टीकाकरण अभियान शुरू कर रहा है, तो मैं उन दिनों को भी याद कर रहा हूं, कोरोना संकट का वो दौर, जब हर कोई चाहता था कि कुछ करे लेकिन उसको उतने रास्ते नहीं सूझते थे। सामान्य तौर पर बीमार व्यक्ति की देखभाल के लिए पूरा परिवार जुट जाता है, लेकिन इस बीमारी ने तो बीमार को ही अकेला कर दिया

- **नरेन्द्र मोदी**, प्रधानमंत्री

मिसाल पेश करेगा राजस्थान : गहलोत

वैक्सीन तैयार करने वाले वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों और अन्य कार्मिकों को बधाई। हमें उन पर गर्व है। जिस तरह राजस्थान ने कोरोना का बेहतरीन ढंग से मुकाबला किया है, उसी तरह टीकाकरण अभियान को भी सफल बनकर मिसाल पेश करेंगे।

- **अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान**

बीएन संस्थान ने मनाया 99वां स्थापना दिवस

उदयपुर। विद्या प्रचारिणी सभा भूपाल नोबल्स संस्थान का 99वां स्थापना दिवस संस्थान परिसर स्थित पौराणिक नर्बदेश्वर महादेव मन्दिर परिसर में हवन अनुष्ठान के साथ मनाया गया।

इसके बाद संस्था के संस्थापक महाराणा भूपालसिंह मेवाड़ और सहसंस्थापकों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण किया।

उल्लेखनीय है कि आजादी से पूर्व शैक्षणिक रूप से पिछड़े हुए राजस्थान प्रदेश के लिए महाराणा भूपालसिंह मेवाड़ ने 2 जनवरी 1923 को विद्या प्रचारिणी सभा(सोसायटी), भूपाल नोबल्स स्कूल की स्थापना की थी। संस्थान मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह आगरिया ने बताया कि संस्थान ने 98 वर्ष पहले एक स्कूल के रूप में अपनी शैक्षणिक यात्रा शुरू की और आज विवि के रूप में समाज और देश में ख्याति अर्जित कर रहा है।

नए अधिकारियों ने संभाला कार्यभार

सत्यवीरसिंह

डॉ. राजीव पचार

अशोक कुमार

उदयपुर। राज्य सरकार ने पिछले दिनों आईएएस, आईपीएस, आईएफएस और आरपीएस, आरएएस के बड़ी संख्या में तबादले कर दिए। जिसमें सत्यवीर सिंह को उदयपुर रेंज आईजी, डॉ. राजीव पचार उदयपुर एसपी एवं आरएएस अधिकारी अशोक कुमार(द्वितीय) को अतिरिक्त कलक्टर(सिटी) उदयपुर का कार्यभार सौंपा गया। नवनियुक्त अधिकारियों ने पिछले दिनों अपना कार्यभार संभाल लिया।

स्मार्ट टीवी की पहली डिलीवरी उदयपुर में

उदयपुर। लिबर्टी मार्केटिंग के शोभागपुरा 100 फीट रोड स्थित नए शोरूम पर एलजी की ओएलईडी 77 इंच स्मार्ट टीवी की प्रदेश में पहली डिलीवरी अर्थ डायग्नोस्टिक के सीईओ डॉ. अरविन्दर सिंह को दी गई। निदेशक गिरीश मनवानी एवं ब्रांच मैनेजर अनूप गुरतू ने डॉ. सिंह को स्मार्ट टीवी उपलब्ध कराया।

राज्यपाल ने लक्ष्यराजसिंह को किया सम्मानित

उदयपुर। पिछले दिनों राज्यपाल कलराज मिश्र ने मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ को समाजसेवा के सराहनीय काम के लिए राजभवन में सम्मान किया। लक्ष्यराज सिंह को कोरोना महामारी के दौरान निराश्रितों तक मदद पहुंचाने, मार्च 2019 में वस्त्रदान के तहत जरूरतमंदों को तीन लाख कपड़े दिलाने, 24 घंटे में 20 टन से ज्यादा स्टेशनरी छात्र-छात्राओं में वितरित कर दूसरा गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड और जनवरी 2020 में 20 सैकंड में 4035 पौधे लगाकर तीसरा गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने पर सम्मानित किया गया। लक्ष्यराज सिंह ने तीन लाख कपड़े भारत के अलावा ऑस्ट्रेलियां, यूएसए, ओमान, श्रीलंका, यूएई सहित अन्य देशों के 80 शहरों से एकत्र कर जरूरतमंदों तक पहुंचाए थे। इस मौके पर सिंह की पत्नी निवृत्ति कुमारी भी उपस्थित थी।

नंदावत अध्यक्ष, कोठारी सचिव मनोनीत

उदयपुर। जेएससी समता के पदाधिकारियों व सदस्यों की बैठक गुरुवार को हुई। वर्ष 2021-23 के लिए राकेश नंदावत अध्यक्ष, सीपी मारू उपाध्यक्ष, सुरेश कोठारी सचिव, सह सचिव नरेन्द्र बया, सुलोचना जैन कोषाध्यक्ष का मनोनयन किया गया, जबकि गणपत मादरेचा, भूपेन्द्र जैन, जया चौधरी, रेणु सिरोया सदस्य मनोनीत हुए। यह जानकारी संस्थापक डॉ. सुभाष कोठारी ने दी।

नीरजा मोदी स्कूल को एजुकेशनल अवार्ड

उदयपुर। नीरजा मोदी स्कूल उदयपुर को इंटरनेशनल एजुकेशन अवार्ड 2020 के तहत बेस्ट स्कूल ऑफ द ईयर अवार्ड से सम्मानित किया गया। आईइए के वर्चुअल कांफ्रेंस में नीरजा मोदी स्कूल उदयपुर को शिक्षण में सतत उत्कृष्टता के लिए यह पुरस्कार मिला। चेयरमैन डॉ. महेन्द्र सोजतिया ने सोजतिया चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से विद्यालय की निदेशिका साक्षी सोजतिया, प्राचार्य जॉर्ज ए. थॉमस एवं स्टाफ के कार्य की सराहना की।

राम मंदिरः निधि समर्पण का संकल्प

उदयपुर। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र निधि समर्पण अभियान के तहत सिख समाज ने भगवान श्रीराम के मंदिर के लिए निधि समर्पण का संकल्प व्यक्त किया। इस मौके पर पूर्व पार्षद तेजेन्द्रसिंह रोबिन, देवेन्द्र पाल सिंह, गुरप्रीत सिंह व समाज के अन्य वरिष्ठजनों ने अयोध्या में श्रीरामलला के मंदिर निर्माण के लिए निधि समर्पित की। इसके अलावा अभियान से जुड़े कार्यकर्ताओं की टोलियों का विभिन्न क्षेत्रों में सम्पर्क व आग्रह अभियान जारी। स्टेनवर्ड स्कूल में निधि समर्पण को लेकर बैठक हुई। बैठक में देवेन्द्र कुमावत, जगदीश अरोड़ा, दिलीपसिंह यादव, सुरेन्द्र रावल आदि उपस्थित थे। पंचवटी स्थित आलोक स्कूल में भारत विकास परिषद की एक विशेष बैठक गुणवंत सिंह कोठारी, प्रदीप कुमावत, जयराज आचार्य, राजश्री गांधी मौजूद थे।

विवाह कैसा हो

मोहनलाल दशोरा 'आर्य'

ईश्वर के विधान अनुसार सृष्टि के निर्माण संचालन में स्त्री-पुरुष का संयोग जरूरी है। मानव समाज में स्त्री-पुरुष को विवाह से जोड़ा जाता है। विवाह व्यवस्था(अरेंज्ड मैरीज) और प्रेम विवाह(लव मैरीज) दो प्रथाएं समाज में प्रचलित हैं। पहले शिक्षा की कमी व अवयस्क बालक-बालिकाओं का विवाह माता-पिता और रिश्तेदार ही तय कर देते थे। परन्तु अब शिक्षा व

बालिग विवाह अनिवार्य होने से लव मैरीज का प्रचलन बढ़ गया है। कहीं-कहीं तो माता-पिता लड़के-लड़की की सहमति से रिश्ता तय करते हैं और अधिकतर लड़के-लड़की की पसन्द सर्वोपरि होती है। यहाँ तक कि माता-पिता के न चाहने या विरोध करने पर भी कई प्रेमी जोड़े मन्दिर या कोर्ट या आर्य समाज में आवश्यक प्रमाण देकर आपसी रजामन्दी से विवाह कर लेते हैं। माता-पिता परिवार या सामाजिक दबाव में कई जोड़े घर से भाग जाते हैं। कई आत्महत्या कर लेते हैं। दोनों तरह से शादी तर्कसंगत है। जनम-जनम का नहीं परन्तु इस जीवन का तो साथी है जिस पर दो (युवक-युवती) का तथा आने वाले नए मेहमान(सन्तान) का भविष्य बनता है। अत: बहुत सोच-समझ कर ये रिश्ते तय होना चाहिये। माता-पिता का अनुभव(खानदान, संस्कार व स्तर की परख) काम करता है, वहीं लड़के-लड़की शारीरिक आकर्षण, लुभावने प्रेम-प्यार के वादे कस्बे व जॉब आदि के कारण शीघ्र साथी बनने को तैयार हो जाते हैं। कई पूर्व शादीशुदा या नाबालिग निकल जाते हैं। कई जगह जोर-जबर्दस्ती या दबाव में भी ये काम होते हैं। जो दो-चार वर्ष में तलाक या कोर्ट के दर पर पहुंच जाते हैं। आज कोर्टों में हजारों प्रकरण भरण-पोषण या तलाक के चल रहे हैं। सबसे अच्छा तरीका पसन्द भले ही लड़के-लड़की की हो परन्तु माता-पिता की अभिस्वीकृति(पसन्द) भी जरूरी है ताकि रिश्ता जीवन पर्यन्त रहे।

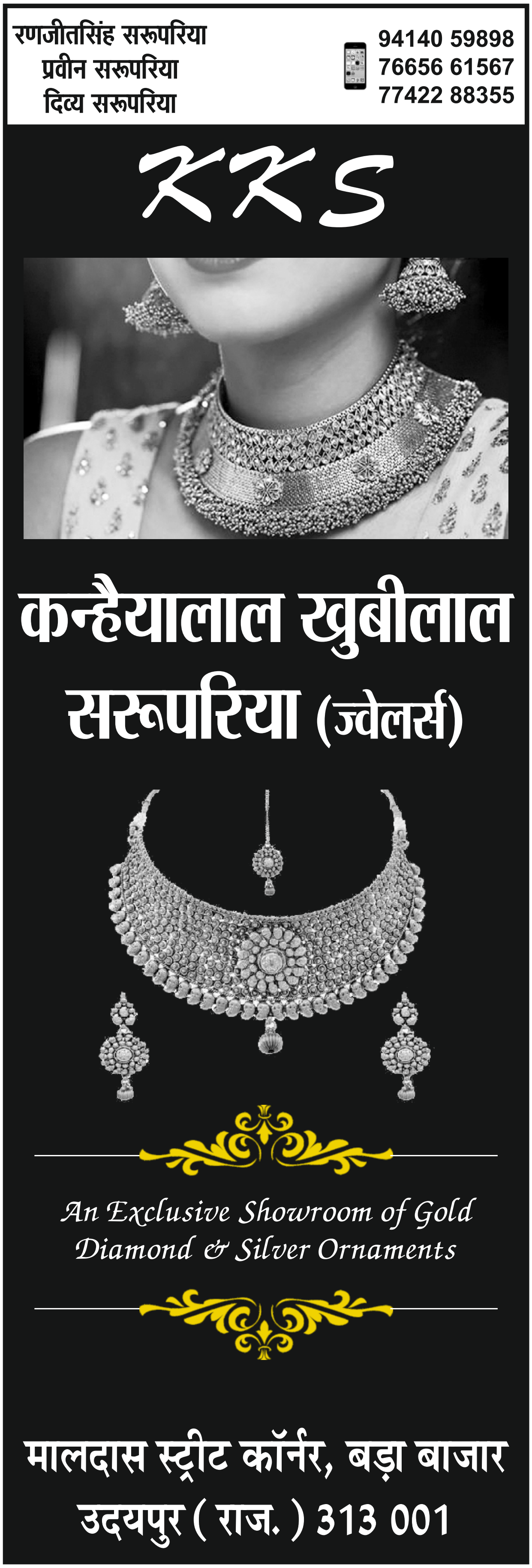

प्रत्यूष

'कोरोना' से राहत मिली तो 'बर्ड फ्लू' ने दी दस्तक

शिल्पा नागदा

2020 के आखिरी दिनों में जब लोग कोरोना की दहशत से धीरे-धीरे उबरते हुए नए साल के जश्न की तैयारी कर रहे थे, तभी कुदरत ने फिर आंखें तरेरी। हिमाचल से जंगली गीज, राजस्थान और मध्यप्रदेश से कौओं, केरल से बतखों और हरियाणा से मुर्गियों के रहस्यमय ढंग से मरने की खबरें आने लगीं। इससे घबराहट होना स्वाभाविक था। यूं तो 'बर्ड फ्लू' या 'एवियन इंफ्लूंजा' की मौजूदगी दुनिया में सदियों से है और इससे पक्षियों की बड़ी पैमाने पर मौत भी होती रही है, लेकिन पहले यह कभी पक्षियों से इंसानों में नहीं फैलता था या फैलता भी रहा हो भी तो शायद इन्सान को इसकी जानकारी नहीं थी। भारत में एक बार फिर बर्ड फ्लू का खतरा मंडरा रहा है। जागरूकता और सावधानी जरूरी है। लक्षण दिखते ही चिकित्सकीय परामर्श जरूरी है।

कोविड-19 का खतरा अभी बना ही हुआ है कि देश में बर्ड फ्लू ने दहशत और बढ़ा दी है। इस बीच, कई राज्यों से पक्षियों की मौत के मामले सामने आए हैं। पक्षियों की अचानक से होने वाली मौत से हर तरफ भय का माहौल है। इसे देखते हुए केन्द्र और राज्य सरकारों ने कई एहतियाती कदम उठाए हैं।

बर्ड फ्लू भी सामान्य फ्लू की ही तरह है। यह बीमारी 'एवियन इन्फ्लूएंजा' विषाणु(एच5 एन1) की वजह से होती है। यह विषाणु पक्षियों के अलावा इंसानों को भी शिकार बना सकता है। बर्ड फ्लू का संक्रमण मुर्गा, मोर और बत्तख जैसे पक्षियों में तेजी से फैलता है। बर्ड फ्लू का मुख्य कारण पक्षियों को ही माना जाता है। हालांकि कई बार यह इंसान से इंसान को भी हो जाता है।'एवियन इन्फ्लूएंजा' के शिकार इंसान पर मौत का खतरा भी होता है। इंसान से इंसान में बर्ड फ्लू के संक्रमण का जोखिम कम है, पर पक्षियों के संपर्क में न आएं।

जानलेवा बीमारी

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अलावा दुनिया भर के स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि यह बहुत खतरनाक बीमारी है। इसमें संक्रमितों की मृत्यु दर 60 फीसद तक है, यानी हर दस में से 5-6 लोगों की जान जाती है। बर्ड फ्लू के अब तक 11 विषाणुओं का पता चला है। इनमें से पांच इंसानों के लिए जानलेवा हैं। ये हैं - एच5एन1, एच7एन3, एच7एन7, एच7एन9, एच9एन2।
इन जानलेवा विषाणुओं को 'हाईली पैथोजेनिक एवियन इंफ्लूएंजा' (एचपीएआइ) कहा जाता है। इनमें सबसे खतरनाक एच5एन1 विषाणु है। यही पहला बर्ड फ्लू विषाणु था जिसने इंसानों को भी संक्रमित किया। दुनिया भर में जंगली पक्षियों की आंतों में भी ये विषाणु होते हैं, लेकिन आमतौर पर ये पक्षी उनसे बीमार नहीं होते हैं। हालांकि, बर्ड फ्लू मुर्गों और बत्तखों समेत कुछ पक्षियों को बीमार बना सकते हैं, जिससे उनकी जान भी जा सकती है। ऐसी ही स्थिति इन दिनों कई जगहों पर है।

पहला मामला

एच5एन1 से पहली बार मनुष्य के संक्रमण होने की घटना ज्यादा पुरानी नहीं है। इसका पहला मामला साल 1997 में हांगकांग में आया था। यह अब तक दुनिया में चार बार बड़े पैमाने पर फैल चुका है। यह 60 से ज्यादा देशों में महामारी का रूप भी ले चुका है। 2003 से अब तक लगातार यह किसी न किसी देश में अपना असर दिखाता रहा है। अमेरिकी हेल्थ एजेंसी(फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन) ने कुछ साल पहले इसके लिए एक टीके के प्रारूप को मंजूरी दी थी, लेकिन अभी वह लोगों के लिए उपलब्ध नहीं है। यह आमतौर पर पानी में रहने वाले पक्षियों में होता है, लेकिन ये पोल्ट्री फार्म में पलने वाले पक्षियों में भी आसानी से फैल सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक अभी तक ये सबूत नहीं मिले हैं कि पके हुए पोल्ट्री फूड से किसी इंसान को बर्ड फ्लू हो सकता है। यह विषाणु तापमान के प्रति संवेदनशील है और खाना पकाने के दौरान तेज आंच पर नष्ट हो जाता है। लिहाजा अनावश्यक रूप से खानपान को लेकर भयभीत होने की जरूरत नहीं है।

कुछ जरूरी बातें

इंसानों में बर्ड फ्लू का विषाणु आंख, नाक और मुंह के जरिए प्रवेश करता है। इस वजह से इसका बचाव यही है कि संक्रमित पक्षियों खासकर मरे हुए पक्षियों से दूर रहे। पके हुए पोल्ट्री फूड खाने से बर्ड फ्लू होने का भले कोई सबूत न हो, तो भी ऐहतियातन जब तक इस तरह के संक्रमण का खतरा बना हुआ है तब तक मांस और अंडा खाने से बचना चाहिए।

कोरोना की तरह बर्ड फ्लू के भी कई अलग-अलग स्ट्रेन होते हैं। हालांकि, इंसान से इंसान में इस विषाणु के पहुंचने का जोखिम बेहद कम है। एच5एन1 से संक्रमित पक्षी करीब 10 दिनों तक मल या लार के जरिए विषाणु फैलाते हैं।

यह विषाणु किसी सतह के जरिए भी इंसानों को संक्रमित कर सकता है। लिहाजा, विशेषज्ञों की राय यह भी कि पक्षियों से सीधे सम्पर्क में न आया जाए। उनकी बीट को न छुएं।

वे लोग जो पक्षियों के संपर्क में आते हैं, उन्हें बचाव के सारे तरीके कोरोना वाले ही अपनाने चाहिए। इसके लक्षण दिखने के बाद तुरन्त चिकित्सक से संपर्क करें, अस्पताल में दाखिल हो जाएं या खुद से एकांतवास में चले जाएं।

भारत अपनी गर्म जलवायु के कारण दुनियाभर के प्रवासी पक्षियों को अपनी तरफ आकर्षित करता है। ये प्रवासी पक्षी दुनिया के हर देश से भारत की तरफ आते रहते हैं, चूंकि ये पक्षी पूरे देश के आसमान से उड़ते हुए अलग-अलग पानी के ठिकानों तक पहुंचते हैं, तो एक तो पानी के ठिकानों के आसपास मौजूद दूसरे पक्षियों को संक्रमित कर देते हैं, इससे भी बड़ी बात यह है कि जब ये प्रवासी पक्षी आसमान के रास्ते से देश के एक कोने से दूसरे कोने तक दाना पानी की चाह में उड़ते हैं, तो उड़ते हुए ये जो मल करते हैं, वह मल तमाम पक्षियों को बीमारी कर देता है। इन बीमार पक्षियों के नजदीक आने पर इंसान भी बीमार हो जाता है। हालांकि अभी तक यह माना जाता था कि अगर कोई इंसान बर्ड फ्लू की चपेट में आकर बीमार हो जाता है या उसकी मौत भी हो जाती है तो भी वह दूसरे इंसानों के लिए खतरा नहीं होता, क्योंकि बर्ड फ्लू का वायरस एक इंसान से दूसरे इंसान में नहीं फैलता।

पद लालित्य में श्रेष्ठ महाकवि माघ का 'शिशुपालवधम्'

मेघराज श्रीमाली

संस्कृत साहित्य में माघ चमकते नक्षत्र के समान है। उनकी कीर्ति एकमात्र महाकाव्य 'शिशुपालवधम्' ही है। भारती की किरातार्जुनीय, माघ की शिशुपालवधम् और श्री हर्ष की नैषधीयचरित संस्कृत साहित्य के वृहत्रयी महाकाव्य माने जाते हैं जिनमें माघ की रचना को मझोली हैसियत हासिल है। शिशुपालवधम् में माघ का ज्ञान पग-पग पर झलकता है। माघ सिद्धहस्त कवि ही नहीं थे बल्कि प्रकाण्ड पंडित भी थे। उनकी जैसी बहुज्ञता और बहुश्रुता दूसरे संस्कृत कवियों में दुर्लभ है। भिन्न-भिन्न शास्त्रों और विधाओं की बारीकी का जिस निपुणता और सौंदर्य के साथ उन्होंने चित्रण किया है। उसी से पता चलता है कि उन सब पर उनका विलक्षण अधिकार था।

संस्कृत साहित्य के किसी एक काव्य ग्रंथ में विविध शास्त्रीय और लौकिक विषयों पर इस तरह रचना करने की सफलता केवल माघ को ही मिली। व्याकरण, दर्शन, राजनीति, कूटनीति, सामाजिक जीवन, धर्मशास्त्र, कामशास्त्र, संगीतशास्त्र, पशु-पक्षी विज्ञान, वृक्षायुर्वेद, आयुर्वेद, ज्योतिष, सैन्य शास्त्र, गजशास्त्र, अश्वविद्या, युद्ध विज्ञान, मंत्र, पुराण, गाथा, वर्णाश्रम-मर्यादा, अलंकार, छंद शास्त्र- इन सब पर माघ की गहरी पकड़ थी। माघ ने संगीत की तीन विधाओं-गायन, वादन और नृत्य का कई तरह से वर्णन किया है। छठे और सातवें सर्ग में उन्होंने पक्षियों के संगीत और नृत्य तथा भ्रमर-भ्रमरी के गुंजार संगीत का मनोहारी चित्रण किया है।

काव्य संरचना में माघ को अनूठा रचनाकार माना गया है। आलोचकों ने उपमा के लिए कवि कालिदास को श्रेष्ठ माना है तो महाकवि भारवी को अर्थगौरव यानी अभिव्यंजना और अभिव्यक्ति में।

नैषधीयचरित्र को पद लालित्य में श्रेष्ठ माना गया है लेकिन माघ तो तीनों गुणों में श्रेष्ठ हैं। माघ की काव्य प्रतिभा के कारण ही कहा जाता है कि - काव्येषु माघः कवि कालिदासः। इनकी

माघ ने कुछ सनातन सत्यों को उजागर किया, जो न केवल विलक्षण है बल्कि वास्तव में व्यापक हैं। इनमें सर्वश्रेष्ठ तो उनकी सौंदर्य की अमिट अमर

इकलौती रचना शिशुपालवधम् ही है जिसमें रस, भाव, अलंकार काव्य वैचित्र, बहुलता आदि सभी हैं। माघ की कविता में हृदय और मस्तिष्क का अनोखा मिश्रण है। इनके काव्य में भाव गांभीर्य भी है। कला पक्ष की दृष्टि से माघ एक परिपक्क कवि हैं।

माघ ने अपनी कला की कसौटी दी है - 'क्षणे-क्षणे यन्नवता, मुपैति, तदैव रूपं रमणीयताया: अर्थात रमणीय वही है जो प्रतिक्षण नए रूप में आकृष्ट करती हो।' यह महाकवि माघ का कितना विलक्षण सौंदर्यबोध है। सौंदर्य की ऐसी परिभाषा विश्व साहित्य में दुर्लभ है। जो प्रतिक्षण नवीनता प्राप्त करता रहे वहीं सौंदर्य हैं। यहां कीट्स के इस कथन को उद्धृत किया जा सकता है 'सौंदर्य-वस्तु तो सदा आनंददायक होती है।' 'हिस्ट्री ऑफ क्लासिकल संस्कृत लिटरेचर' की लेखिका सुकुमारी भट्टाचार्य का मत है, 'माघ ने कुछ सनातन मूल्यों को उजागर किया, जो न केवल विलक्षण हैं बल्कि वास्तव में व्यापक हैं। इनमें सर्वश्रेष्ठ तो उनकी सौंदर्य की अमिट अमर परिभाषा है। बाद के असंख्य कवियों पर उनकी गहरी छाप पड़ी है। यहां तक कि शिशुपालवधम् का नवमसर्ग पढ़ लिया तो फिर नए शब्द साहित्य में नहीं मिलेंगे। माघ के काव्य को पढ़कर कवियों को हीनताबोध होता है। माघ मास की भांति माघ कवि से किसको कंपन नहीं होता।'

डॉ एस के डे के मुताबिक बाद के कवियों पर माघ का असर इस सीमा तक पड़ा है कि उनकी दृष्टि में माघ का स्थान कालिदास और भारवि से भी ऊंचा है। यह साफ नहीं है कि माघ ने इतना ज्ञान कैसे पाया। लेकिन उनके पितामह सुप्रभदेव के वचनों को राजा श्रीवर्मल भगवान बुद्ध के उपदेशों को ग्रहण करने वाले भक्तों के समान ही ग्रहण करते थे। माना जाता है कि सुप्रभदेव विद्वान थे और उन्होंने अपने पुत्र दत्तक को भी शास्त्रों का ज्ञान दिया होगा और दत्तक ने अपने बेटे माघ को ज्ञान की यह विरासत सौंपी होगी।

माघ औघड़ दानवीर भी थे। दानशीलता के कारण दरिद्र हो गए थे। उनकी पत्नी भी उनके समान दानशीला थी। एक श्लोक पर राजा भोज से मिली एक लाख स्वर्ण मुद्राओं को भी उनकी पत्नी ने मार्ग में भिखारियों को बांट दिया। संस्कृत भाषा, साहित्य, व्याकरण, दर्शनशास्त्र के इतने महान विद्वान और तत्वज्ञ माघ ने ही एक ही ग्रंथ क्यों लिखा? इसका उत्तर कहीं नहीं मिलता लेकिन दंत कथा है कि माघ जब रचना करते थे और अपना ही रचित श्लोक या पद उन्हें दूसरे दिन ठीक नहीं लगता था तो वह उसे काट देते थे। जिससे कोई रचना पूरी नहीं होती थी। इस दंतकथा का कोई प्रामाणिक आधार नहीं है लेकिन यह भी सच है कि इतने महान विद्वान ने एक ही ग्रंथ क्यों लिखा? इस एक ही ग्रंथ में उन्होंने नाना विषयों का समावेश

दंत कथा है कि माघ जब रचना करते थे और अपना ही रचित श्लोक या पद उन्हें दूसरे दिन ठीक नहीं लगता था तो वह उसे काट देते थे। जिससे कोई रचना पूरी नहीं होती थी। इस दंतकथा का कोई प्रामाणिक आधार नहीं है लेकिन यह भी सच है कि इतने महान विद्वान ने एक ही ग्रंथ क्यों लिखा?

किया है। माघ भारतीय जीवन दर्शन की एक ऐसी धरोहर हैं जिसे विस्मृत नहीं किया जा सकता है।उनका समय सातवीं-आठवीं शताब्दी के संधि बिन्दु पर माना जाता है। उनका जन्म श्रीमालनगर(भीनमाल-जालोर मारवाड़) में हुआ था। उनके पिता का नाम दत्तक था। संस्कृत साहित्य की यह विडम्बना हैं कि कवियों ने कहीं भी अपना परिचय नहीं दिया। माघ की लिखी 'शिशुपालवधम्' में थोड़ा बहुत संकेत मिलता है। इससे पता चलता है कि माघ भीनमाल के निवासी थे। भीनमाल का ही दूसरा नाम श्रीमाल है। यह पहले गुजरात में था और अब राजस्थान में है। भोज प्रबंध और प्रबंध चिंतामणि में ब्यौरा मिलता है कि महाकवि माघ बड़े उदार और दानी व्यक्ति थे। उनका विवाह माल्हण देवी के साथ हुआ था। माघ के धर्म या इष्टदेव का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता लेकिन ग्रंथ के आरंभ में ही 'श्रिय: पति' शब्द का प्रयोग करने से भगवान विष्णु के प्रति उनकी आस्था व्यक्त होती है। इसके आधार पर उन्हें वैष्णव मान सकते हैं। माघ के कुछ समालोचक तो यहां तक दर्शाते हैं कि अगर मुरारी यानी भगवान कृष्ण की आराधना करनी हो तो माघ काव्य का अध्ययन करें। शायद श्री कृष्ण की आराधना करने के लिए ही माघ ने शिशुपालवधम् की रचना की थी। शिशुपालवधम् के अंत में कविवंश वर्णनम् के प्रथम पद्य में 'देवो पर:' शब्द प्रयुक्त हुआ है। इसका शाब्दिक अर्थ दूसरा देव है जो ब्राह्मण का पर्याय माना जाता है। क्योंकि ब्राह्मणों को भूमिदेवा कह कर देव कोटि माना गया है। महाकवि भारवी ने भी ब्राह्मणों को भूमिदेवा कहा है। पद्यानुसार माघ के पितामह ब्राह्मण थे। प्रबंध चिंतामणि में वर्णित माघ की कथा से उनका श्रीमाल निवासी ब्राह्मण होने का संकेत मिलता है।

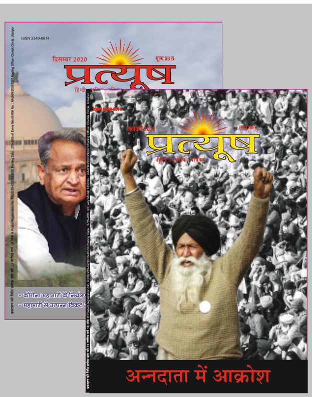

कैसा लगा यह अंक

इस अंक में कौन सा आलेख आपको ज्यादा पसंद आया। आप किन विषयों पर आलेख पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे? किस विषय पर आप हमें अपना मौलिक आलेख, शोध, कविता, कहानी भेजना चाहेंगे। कृपया हमें लिखें। आपके रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत होगा।

pankajkumarsharma2013@gmail.com

Dilip Galundia
Director

NPL

NANO POLYPLAST PRIVATE LIMITED

A-104, 1st Floor, GLG Complex, Dr. Shurveer Singh Marg,
Fatehpura, Udaipur - 313004 (Rajasthan)) India
Ph.: +91 294 2452626/27, Mobile: +91 98290 95489
Fax: +91 294 2452005 Website: www.galundiagroup.com
E-mail: sales@galundiagroup.com, nanoplast@yahoo.co.in

राजस्थान का रणथम्भौर नेशनल पार्क दुनियाभर में प्रसिद्ध है। यहां पर्यटक बाघ एवं वन्यजीवों को एक बेहतरीन प्राकृतिक माहौल में देखकर रोमांचित तो होते ही हैं साथ ही रणथम्भौर किले के रूप में ऐतिहासिक विरासत एवं हरीतिमा से भरपूर वन क्षेत्र हर व्यक्ति का मनमोह लेता है।

वन्यजीवों एवं प्राकृतिक हरीतिमा से भरपूर

रणथम्भौर नेशनल पार्क

गौरव शर्मा

राजस्थान जिस तरह एक से बढ़कर एक ऐतिहासिक किलों और महलों के लिए दुनियाभर में प्रसिद्ध है, उसी तरह वह वन्यजीवों वाले नेशनल पार्कों के लिए भी दुनियाभर के पर्यटकों में खासा लोकप्रिय है। लेकिन यहां भी कुछ ऐसी जगहें हैं, जहां ऐतिहासिक किले तो हैं ही, वन्य जीवों की भी प्राकृतिक दुनिया है। ऐसा ही एक जिला है सवाईमाधोपुर, जहां रणथम्भौर नेशनल पार्क के साथ प्राचीन किला भी दर्शनीय है।

यूं तो पर्यटक यहां खासकर पार्क और वहां के जीवन यानी वन्यजीवों को देखने आते हैं, लेकिन रणथम्भौर किले को भी देखे बिना नहीं रह पाते। समुद्र की सतह से 401 मीटर की ऊंचाई पर बसा रणथम्भौर किला ऐतिहासिक महत्व के किले के रूप में प्रसिद्ध रहा है, जिसके लिए कई शासकों ने लड़ाइयां लड़ीं। इस किले के लिए कई शासकों का उत्कर्ष और पतन हुआ। बाद में मुगलों ने इस पर कब्जा कर लिया और मुगल शासक शाह आलम ने 1754 में महाराजा सवाई माधोसिंह प्रथम को पुरस्कार स्वरूप यह किला दे दिया। तब से यह उनके शिकार के लिए सुरक्षित रहा।

1754
में मुगल शासक शाह आलम ने रणथम्भौर का किला महाराजा सवाई माधोसिंह प्रथम को दिया

1981
में बना नेशनल पार्क

392
वर्गकिमी में फैला पार्क

401
मीटर की ऊंचाई पर बसा रणथम्भौर किला समुद्र की सतह से

साल में 9 माह यहां आते है पर्यटक

अरावली और विंध्याचल पहाड़ियों से घिरे इस किले की तलहटी में यह पार्क स्थित है। लगभग 392 वर्ग किलोमीटर में फैला यह पार्क एक घना जंगल है, जहां अनेक जानवर, पक्षी आदि एक प्राकृतिक माहौल में रहते हैं। इस पार्क का मुख्य क्षेत्र लगभग 274 वर्ग किमी में फैला है। इस क्षेत्र में बाघ तो हैं ही, तेंदुआ, हिरण, चीतल, नीलगाय आदि भी काफी संख्या में निवास करते हैं। तरह-तरह की चिड़ियों को देखना बेहद ही आनन्द का पल होता है।

यही वजह है कि वन्यजीवों में दिलचस्पी लेने वाले पर्यटकों के बीच यह पार्क अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है, जहां साल के नौ माह(बरसात को छोड़कर) पर्यटकों का आना जारी रहता है। पार्क के महत्व को देखते हुए 1981 में इसे नेशनल पार्क बना दिया गया। किला और उद्यान तक पहुंचने के लिए सिंह द्वार तक एक ही रास्ता है। यहां आकर आप किले के अवशेष और किले के अंदर स्थित कुछ प्रमुख मंदिरों को देख सकते हैं। यहां हिन्दू-जैन मंदिर तो हैं ही, मस्जिद और फकीर की दरगाह के भी अवशेष हैं।

खासकर यहां का गणेश मंदिर आज भी श्रद्धालुओं के बीच आकर्षण का केन्द्र है। इस किले की तलहटी में जोगी महल बना हुआ है, जो आज वन विभाग का रेस्ट हाउस है। यह रेस्ट हाउस ऐसे अति विशिष्ट लोगों के ठहरने का काम आता है, जो इस पार्क में घूमने आते हैं। महारानी एलिजाबेथ द्वितीय और एडेनबर्ग के ड्यूक तो यहां ठहर ही चुके हैं, पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी भी इस पार्क को देखने आ चुके हैं।

पार्क में पर्यटको को घुमाने के लिए अच्छी-खासी व्यवस्था है, रास्ते हैं और खुली जीप आदि की भी अच्छी व्यवस्था है। पहले इस जंगल में पर्यटकों को घुमाने के लिए चार मार्ग थे, लेकिन पर्यटकों की संख्या और बाघों में पर्यटकों की खास दिलचस्पी को देखते हुए मार्गों की संख्या सात कर दी गई है। हालांकि अब भी कोई निश्चित नहीं कि बाघ आपको झलक दिखला ही दें। लेकिन तीन घंटे की पार्क की यात्रा से आप इतने रोमांचित हो जाएंगे कि बाघ के न दिखने पर भी निराश नहीं होंगे।

कोडिंग में कॅरियर की संभावनाएं

A to Z

आज के समय में बिना टेक्नोलॉजी के दुनिया की कल्पना करना भी मुश्किल है। इसलिए कोडिंग सीखना बहुत जरुरी है। कोडिंग सीखना इतना भी मुश्किल काम नहीं है। वह लोग जो आईटी और कंप्यूटर बैकग्राउंड से नहीं है वह भी बड़े आसानी से कोडिंग सिख सकते है और आज के समय में हर व्यक्ति को प्रोग्रामिंग के बारे में थोड़ा बहुत नॉलेज होना जरुरी है क्योंकि प्रोग्रामिंग सिखने के बहुत सारे फायदे है।

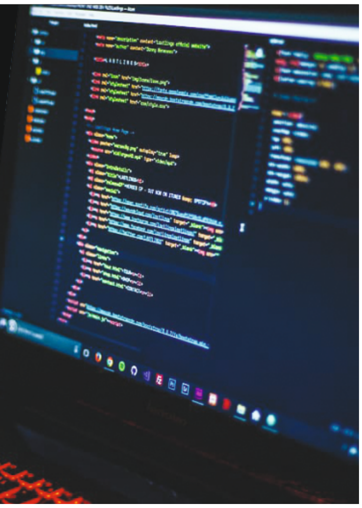

जगदीश सालवी

कोडिंग मूल रूप से कंप्यूटर की भाषा है जिसका उपयोग ऐप्स, वेबसाइट और सॉफ्टवेयर विकसित (Develop) करने के लिए किया जाता है। इसके बिना, हमारे पास कोई भी सबसे लोकप्रिय तकनीक नहीं है, जिस पर हम भरोसा करना चाहेंगे जैसे कि फेसबुक, हमारे स्मार्टफोन जिस ब्राउज़र को हम अपने पसंदीदा ब्लॉग या यहां तक कि स्वयं ब्लॉग को देखने के लिए चुनते हैं। यह सब कोड पर चलता है।

इसे बहुत सरलता से कहने के लिए कोड वह है जो आपके कम्प्यूटर को बताता है कि क्या करना है। थोड़ा और गहराई में जाने के लिए, कंप्यूटर शब्दों को नहीं समझते हैं। वे केवल On और Off की अवधारणाओं को समझते हैं। एक कंप्यूटर की क्षमताओं को स्विच और ट्रांजिस्टर On और Off द्वारा निर्देशित किया जाता है। बाइनरी कोड 1 और 0. अंकों के रूप में। इन On और Off ट्रांजिस्टर का प्रतिनिधित्व करता है। इन कोड के संयोजन की एक अनंत संख्या आपके कंप्यूटर को चलाने का काम करती है। बाइनरी कोड को प्रबंधनीय बनाने के लिए, कंप्यूटर प्रोग्रामिंग भाषाओं (Programming language) का गठन किया गया था। ये भाषाएं (Language) अलग-अलग उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं, लेकिन वे सभी प्रोग्रामर को महत्वपूर्ण आदेशों को बाइनरी कोड में अनुवाद (translate) करने की अनुमति देते हैं।

प्रत्येक कंप्यूटर एप्लिकेशन को यह जानने के लिए एक उचित लिखित कोड की आवश्यकता होती है। अधिकांश सॉफ्टवेयर में हज़ारों से लेकर लाखों कोडित पाठ (coded text) और संख्याएँ (numbers) होती हैं। कोड कम्प्यूटर को कार्य करने के तरीके के बारे में चरण-दर-चरण मार्गदर्शिका (Step by step guide) देता है। कंप्यूटर हर ऑनलाइन और ऑफलाइन कार्य को निष्पादित (Executed) करने के लिए कोड को पढ़ने के माध्यम से गति करता है। आज की डिजिटल दुनिया में, मोबाइल फोन से लेकर स्मार्ट टीवी और कार तक सब कुछ कोडेड सॉफ्टवेयर का उपयोग करके चलता है। उदाहरण के लिए, कोड कंप्यूटर को एक छवि इनपुट (Image input) करने और उसे स्पिन करने के लिए कह सकता है। 404 Error पॉप-अप और सॉफ्टवेयर क्रैश से बचने के लिए निर्दोष कोड बनाना आवश्यक है। कोडिंग मुद्दों को प्रकट करने और ठीक करने के लिए डिबगिंग कोड हमेशा अंतिम चरण होता है।

क्या कोड को सीखना मुश्किल है?

कोडिंग तकनीक-प्रेमी लोगों के लिए कठिन नहीं है, जो धैर्यपूर्वक सीखने के प्रयास में समय लगाते हैं। कोडिंग को उन लोगों से अनावश्यक रूप से खराब प्रतिष्ठा मिलती है जो इसके लिए पर्याप्त अभ्यास नहीं करते हैं। सबसे आसान कोडिंग भाषाओं में केवल कुछ सौ नियमों को याद रखना शामिल है। किसी बोली जाने वाली विदेशी भाषा को सीखने की तुलना में यह एक छोटा थप्पड़ है। कई प्रोग्रामिंग भाषाएं कंप्यूटर एप्लिकेशन को कोड और डीबग करने के लिए समान तरीकों का उपयोग करती हैं।

कोड शुरू करने वाले शुरुआती लोगों के पास सफल होने के लिए कुछ कौशल होने चाहिए। कोडित पाठ (Coded text) की लंबी लाइनों के विस्तार पर ध्यान देना अनिवार्य है। नए कोडर्स को यह सोचने के लिए abstract thinking skills की आवश्यकता है कि लिखित कोड क्या बन जाएगा। सहज तार्किक तर्क कौशल कोडर्स को सही ढंग से यह निष्कर्ष निकालने में मदद करते हैं कि कोई कोड सही काम क्यों नहीं कर रहा है। अच्छा Writing skills code बनाने के लिए महत्वपूर्ण है जो उचित रूप से इच्छित संदेश देता है। कंप्यूटर प्रोग्राम के साथ निडर होकर काम करने के लिए तकनीक कौशल भी एक स्पष्ट आवश्यकता है।

कोडिंग सीखने के फायदे

प्रोग्रामिंग के बिना टेक्नोलॉजी का कोई मतलब ही नहीं और बिना टेक्नोलॉजी के इस दुनिया की कल्पना भी अब मुश्किल है। इसलिए कोडिंग सीखना बहुत जरुरी है! कोडिंग सीखना इतना भी मुश्किल काम नहीं है। वह लोग जो आईटी और कंप्यूटर बैकग्राउंड से नहीं है वे भी बड़े आसानी से सिख सकते है और आज हर व्यक्ति को प्रोग्रामिंग के बारे में थोड़ा बहुत ज्ञान होना जरुरी है क्योंकि प्रोग्रामिंग सीखने के बहुत सारे फायदे है।

- कोडिंग और प्रोग्रामिंग कॅरियर में आप बहुत ज्यादा पैसे कमा सकते हैं। बाकी करियर की तुलना में प्रोग्रामिंग में ज्यादा पैसे कमाने की संभावना है।
- प्रोग्रामिंग करने वालों को उच्च वेतन वाली नौकरियां आसानी से मिल जाती है क्योंकि इसकी मांग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।
- कोडिंग की मदद से किसी भी मॉडर्न प्रॉब्लम का समाधान निकाला जा सकता है।
- कोडिंग की मदद से आप खुद के सॉफ्टवेयर प्रोडक्ट्स बना सकते हैं।

ऑफलाइन कोडिंग कैसे सीखे?

ऑफलाइन कोडिंग सीखने के लिए आप प्रोग्रामिंग की किताबें खरीद कर पढ़ सकते है लेकिन इसमें आपको समझने में कई सारी दिक्कतें आ सकती हैं इसलिए आप आपके एरिया में कोई ट्यूशन क्लास भी ज्वाइन कर सकते है जहां पर प्रोग्रामिंग सिखाई जाती हो। आजकल आसानी से प्रोग्रामिंग और कम्प्यूटर क्लासेस मिल जाते हैं। अगर आपको आपके क्षेत्र में प्रोग्रामिंग क्लासेस ढूढने में प्रॉब्लम आ रही है तो गूगल की सहायता से सर्च करें इसके लिए आपको सिर्फ गूगल पर जाकर टाइप करना है "programming classes near me" और सर्च करना है।

ऑनलाइन कोडिंग कैसे सीखें?

ऑफलाइन की तरह ही आप ऑनलाइन भी कोडिंग सिख सकते हैं। ऑनलाइन में आपको कोडिंग सीखने के लिए ज्यादा options available होते है यहाँ पर आप कोर्स खरीद कर भी कोडिंग सिख सकते हैं और फ्री में भी।

ऑनलाइन कोडिंग सीखने के लिए हम आपको suggest करेंगे www.w3schools.com यह beginners के लिए बहुत अच्छी वेबसाइट है जहा पर आप फ्री में कोडिंग सीख सकते हैं।

अगर आप अपने एंड्राइड स्मार्टफोन से एप की मदद से कोडिंग सीखना चाहते हैं तो आप sololearn यह ऐप डाउनलोड करके कोडिंग सीख सकते है।

इंटरनेट पर आपको और भी कई सारी ऐसी websites, Apps मिल जायेंगे जिन पर आप फ्री में कोडिंग सीख सकते है . नीचे हम कुछ websites के नाम बता रहे है जहां से आप फ्री में कोडिंग सीख सकते है।

www.tutorialspoint.com
www.programiz.com
www.javatpoint.com
www.geeksforgeeks.org
beginnersbook.com

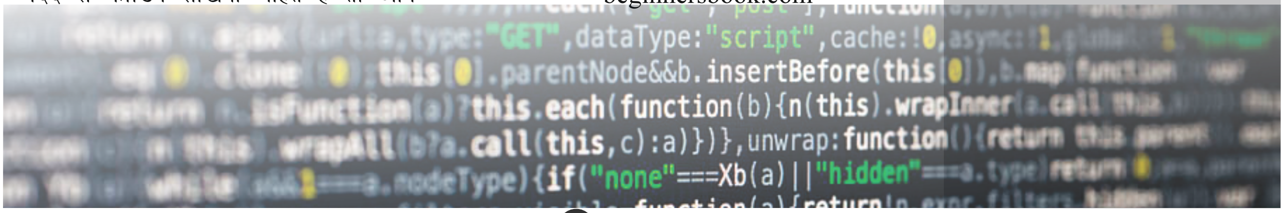

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस की नई कार्यकारिणी घोषित

7 उपाध्यक्ष, 8 महासचिव और 24 सचिव

मुख्यमंत्री के साथ प्रदेशाध्यक्ष डोटासरा

- भगवान सोनी

जयपुर। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव के. सी. वेणुगोपाल ने 6 जनवरी को कांग्रेस अध्यक्ष की स्वीकृति से राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कार्यकारिणी की घोषणा कर दी। जिसमें 7 उपाध्यक्ष, 8 महासचिव एवं 24 सचिवों की नियुक्ति की गई है। नई कार्यकारिणी में जातिगत, धार्मिक एवं राजनीतिक आधार पर संतुलन साधने की पूरी कोशिश की हुई है।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत खेमे से नाराज चल रहे सचिन पायलट गुट के लोगों को भी कार्यकारिणी में शामिल कर उनकी नाराजगी दूर करने की कोशिश की गई है। पार्टी ने सचिन पायलट प्रकरण से सबक लेते हुए भविष्य में बड़े नेताओं की टकराहट को टालने के लिहाज से इस बार कार्यकारिणी में किसी बड़े चेहरे को शामिल नहीं किया है। नई कार्यकारिणी की घोषणा की काफी समय से प्रतीक्षा थी। ज्ञातव्य है कि पिछले साल पायलट गुट की गहलोत गुट से असंतुष्टि को पार्टी से बगावत मानते हुए कांग्रेस हाईकमान ने प्रदेश कार्यकारिणी, समस्त विभागों एवं प्रकोष्ठों को भंग कर दिया गया था। उसके बाद से नए अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा अकेले कार्य कर रहे थे।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी को धन्यवाद देते हुए नवगठित कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारियों को बधाई देते हुए उनसे प्रदेश अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा के नेतृत्व में पार्टी की नीतियों, कार्यक्रमों, सिद्धांत एवं विचारधारा को गांव-गांव तक पहुंचाने का आह्वान किया। डोटासरा एवं पूर्व उपमुख्यमंत्री पायलट ने भी नियुक्त सभी पदाधिकारियों को बधाई दी।

नई कार्यकारिणी

उपाध्यक्ष : गोविन्द राम मेघवाल, हरिमोहन शर्मा, डॉ. जितेन्द्र सिंह, महेन्द्रजीत सिंह मालवीय, नसीम अख्तर इंसाफ, राजेन्द्र चौधरी, रामलाल जाट।

महासचिव : जीआर खटाणा, हाकिम अली, लखन मीणा, प्रशांत बैरवा, राकेश पारीख, रीटा चौधरी, वेद सोलंकी एवं मांगीलाल गरासिया।

सचिव : भूराराम सिरवी, देशराज मीना, गजेन्द्र सांखला, जसवंत गुर्जर, जिया-उर-रहमान, ललित तूनवाल, ललित यादव, महेन्द्र खेड़ी, महेन्द्र गुर्जर, मुकेश वर्मा, निम्बाराम गरासिया, फूलचंद ओला, प्रशांत शर्मा, प्रतिष्ठा यादव, पुष्पेन्द्र भारद्वाज, राजेन्द्र मूंड, राजेन्द्र यादव, राखी गौतम, रामसिंह कस्वां, रवि पटेल, सचिन सरवटे, शोभा सोलंकी, श्रवण पटेल, विशाल जांगिड़।

मेवाड़ से मालवीया व गरासिया शामिल

नई कार्यकारिणी में पूर्व मंत्री एवं बागीदौरा से विधायक महेन्द्रजीत सिंह मालवीया तथा गोगुन्दा से पूर्व विधायक एवं पूर्व मंत्री मांगीलाल गरासिया को शामिल किया गया है। मालवीय को उपाध्यक्ष व गरासिया को महासचिव बनाया गया है।

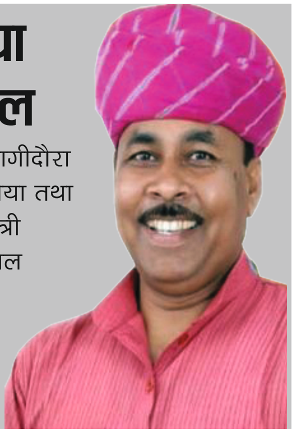

प्रभारी भी किये नियुक्त

प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने कार्यकारिणी गठन के साथ ही कार्यकारिणी सदस्यों को संभाग व जिलेवार जिम्मेदारियां बांटी हैं। उपाध्यक्षों को संभाग प्रभारी बनाया गया है। श्रीगोविन्दराम मेघवाल को जयपुर, हरिमोहन शर्मा को अजमेर, जितेन्द्र सिंह को भरतपुर, महेन्द्रजीत सिंह मालवीया को उदयपुर, नसीम अख्तर को बीकानेर, राजेन्द्र चौधरी को कोटा और रामलाल जाट को जोधपुर का प्रभारी बनाया गया है। सह प्रभारियों में रीटा चौधरी को जयपुर, जसवन्त गुर्जर को अलवर, महेन्द्र गुर्जर को दौसा, विशाल जांगिड़ को सीकर, फूलसिंह ओला को झुंझुनू, हाकिम अली को अजमेर, महेन्द्र खेड़ी को टोंक, गजेन्द्र सांखला को नागौर, मुकेश वर्मा, वेद प्रकाश को भरतपुर, ललित यादव को धोलपुर-करौली, देशराज मीणा को सवाईमाधोपुर, लखन मीणा को उदयपुर, मांगीलाल गरासिया को चित्तौड़गढ़ व प्रतापगढ़, सचिन सरवटे को डूंगरपुर, प्रशान्त शर्मा को बांसवाड़ा, पुष्पेन्द्र शर्मा को राजसमंद,राकेश पारीख को बीकानेर, राजेन्द्र मूंड को चूरू, जिया-उर-रहमान को गंगानगर व हनुमानगढ़, जी आर खटाना को कोटा, राजेन्द्र यादव को बारां, प्रतिष्ठा यादव को बूंदी, राखी गौतम को झालावाड़, प्रशान्त बैरवा को जोधपुर, निम्बाराम गरासिया को पाली, शोभा सोलंकी को सिरोही, भूराराम सिरवी को जालोर, रवि पटेल को बाड़मेर और श्रवण पटेल को जैसलमेर का सहप्रभारी बनाया गया है। श्रीराम सिंह कस्वां और ललित टूनवाल को मुख्यालय प्रभारी बनाया है।

RAMADA®
UDAIPUR RESORT & SPA

Rampura Circle, Kodiyat Road, Udaipur - 313 001
Tel. : 0294 3053800,9001298880 | Fax : 0294 3053900
reservations@ramadaudaipur.com | www.ramadaudaipur.com

स्वाद और सेहत का खजाना बाजरे के व्यंजन

बाजरे का नाम तो आपने सुना ही होगा। देश के कई हिस्सों में बाजरा प्रमुख खाद्यान्न के रूप में प्रयोग किया जाता है। बाजरा न सिर्फ पाचन क्रिया को ठीक करता है, बल्कि कई बीमारियों को भी आपसे दूर रखता है। इस आलेख में हम बाजरे के कुछ ऐसे व्यंजन बनाने के तरीके बता रहे हैं, जिससे न केवल आपके खाने का स्वाद दोगुना होगा, अपितु आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा।

मीठी पूरी

सामग्री : गुड 3 कप, पानी आवश्यकतानुसार, बाजरे का आटा 1 कप, सफेद तिल 2 बड़े चम्मच, घी तलने के लिए।

विधि : गुड़ के पानी में अच्छे से घोल लें। अब एक कटोरे में बाजरे का आटा और सफेद तिल को अच्छी तरह से मिला लें। अब इसमें गुड़ का पानी डालें और आटा गूंथ लें। इस आटे को 16 बराबर भागों में बांटें और एक गीले कपड़े से ढकें जिससे यह सूखे नहीं। एक कड़ाही में घी गरम करें और एक लोई लें और उसे डेढ़ इंच के गोले में बेलें। अब इस पूरी को गरम घी में डालें और हल्के से कल्छी से दबाएं। पूड़ी को दोनों तरफ से लाल होने तक मध्यम आंच पर तलें।

पुआ

सामग्री : बाजरे का आटा 1 कप, गेहूं का आटा - एक चम्मच, गुड आधा कप, मोयन के लिए तेल 1 चम्मच, सफेद तिल-एक चौथाई चम्मच, तेल तलने के लिए।

विधि : गुड़ तोड़कर गुनगुने पानी में भिगो दें। दोनों आटे और तिल को मिलाकर 1 चम्मच तेल डालकर गूंथ लें। अब छोटे-छोटे पुए बेलकर डीप फ्राई करें और सर्व करें। गर्मागर्म पूए सर्व करें।

चूरमा

सामग्री : गुड 160 ग्राम, घी 80 ग्राम, काजू 8-10, इलायची 3-4

विधि : बाजरे के आटे को एक बर्तन में निकाल लें और 1 चम्मच घी डाल कर अच्छी तरह मिला लें। गुनगुने पानी की सहायता से सख्त आटा गूंथ कर तैयार कर लें। गूंथे हुए आटे से दो लोई बनाकर तैयार कर लें। एक लोई को हाथ से गोल करें और दोनों हथेलियों के बीच में रखें और दबाकर चपटा कर लें और इसे सूखे गेहूं के आटे में लपेटकर चकले के ऊपर रख कर मोटा परांठा बेल लें। तवा गरम करें और गरम तवे पर थोड़ा सा घी लगाकर चारों और फैला दें और बेले हुए परांठे को नीचे की ओर हल्का सिकने पर

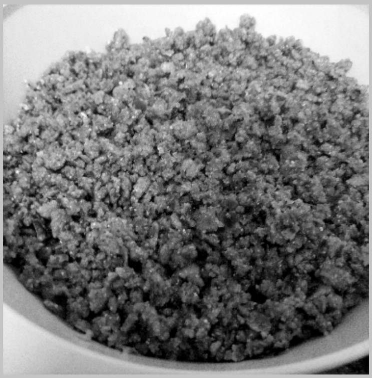

दूसरी तरफ पलट दें और जब परांठे के दूसरे भाग में सुनहरी चित्ती आने लगे तो परांठे के पहले वाले भाग के ऊपर थोड़ा सा घी डालकर इसको चारों तरफ अच्छी तरह से फैला लें। परांठे को दूसरी तरफ पलटे तथा इस भाग पर थोड़ा सा घी डालकर इसको अच्छी तरह से चारों और फैला दें। परांठे को पलट-पलट कर और दबा कर दोनों ओर सुनहरी चित्ती आने तक अच्छे से सेक लें तथा इसको एक प्लेट में निकालकर रख लें। इस तरह से दूसरा परांठा बनाकर तैयार कर लें। परांठे के ठंडा हो जाने पर तोड़ कर बारीक कर लें। काजू को छोटा-छोटा काट लें, इलायची को छील कर पाउडर बना लें और बारीक किए हुए परांठे में डालें और गुड़ को भी एकदम बारीक तोड़कर डाल दें और 1 चम्मच घी डालकर सभी चीजों को अच्छे से मिला दें। स्वादिष्ट चूरमा तैयार है।

हलवा

सामग्री : बाजरे का आटा आधा कप, चीनी 100 ग्राम, घी 80 ग्राम, काजू 8-10, किशमिश 20-25, नारियल 1 टेबल स्पून, इलायची 4-5

विधि : पैन में घी डाल कर गरम करें। घी के हल्का गरम होने पर बाजरे का आटा डाल दें। धीमी और मध्यम आंच पर आटे को लगातार चलाते हुए हल्का ब्राउन होने तक और अच्छी महक आने तक भून लें। अब इसमें 1 कप पानी डाल दें और चीनी डाल कर अच्छी तरह से मिला दें और मध्यम आग पर पकने दें। तब तक पकाएं जब तक कि हलवा गाढ़ा न हो जाए। काजू को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें। इलायची छिलकर कूट कर पाउडर बना लें।

हलवे के गाढ़ा होने पर इसमें काजू, किशमिश, कटा हुआ नारियल और इलायची का पाउडर डालकर सभी चीजों को अच्छी से मिला दें और 2 मिनिट के लिए और पका लें। बाजरे के आटे का स्वादिष्ट हलवा बनकर तैयार है। ऊपर से थोड़ा सा घी और कटे हुए काजू डालकर सजाएं।

टिक्की

सामग्री : बाजरे का आटा 400 ग्राम, गुड 150 ग्राम, तिल 100 ग्राम, तेल तलने के लिए।

विधि : एक कप पानी गरम करें और गुड़ डाल कर घोल लें। किसी बर्तन में बाजरे का आटा छान लें। आटे में तिल और 2 चम्मच तेल मिला दें। गुड़ के घोल की सहायता से नरम आटा गूंथ लें। भारी तले की कढ़ाईमें तेल डाल कर गरम करें और गूंथे हुए आटे से थोड़ा सा आटा निकाल कर, आटे को हथेली की सहायता से मसल कर मुलायम करें। जब आटा मुलायम हो जाता है तब एक छोटे नींबू के बराबर आटा तोड़कर लोई बना लें। इस लोई को हथेलियों से दबाकर टिक्की बना लें। अब टिक्की को गरम तले में डाल कर पलट-पलट कर धीमी और मीडियम आग पर अच्छी ब्राउन होने तक तल लें। टिक्कियां तल जाने के बाद इन्हें प्लेट में निकाल लें। गरमा-गरम बाजरे की टिक्की खाइए और खिलाइए।

UDAIPUR HOTEL

(APPROVED BY GOVT. OF RAJASTHAN)

SPECIALITY & FACILITIES

- Parking
- A/C & Cooler Rooms
- Situated in Heart of City
- T.V. With Cable Connection
- Homely Atmosphere
- Near to bus & Railway Station
- Rooms Connected with Telephone

Surajpole, Udaipur-313001 (Raj.)

Telephone Number :- 0294-2417115-116

विधायक शक्तावत का निधन

उदयपुर। वल्लभनगर के कांग्रेस विधायक एवं पूर्व संसदीय सचिव गजेन्द्र सिंह शक्तावत 48) का 20 जनवरी को नई दिल्ली के एक अस्पताल में निधन हो गया। स्वतंत्रता सेनानी एवं राज्य के पूर्व गृहमंत्री स्व. गृहमंत्री गुलाब सिंह शक्तावत के पुत्र गजेन्द्र सिंह पिछले एक माह से दिल्ली के एक अस्पताल में पीलिया का उपचार करवा रहे थे और इसी बीच कोरोना भी हो गया था। उनका अंतिम संस्कार 21 जनवरी को पैतृक नगर भीण्डर के मोक्षधाम में किया गया। बड़े भाई देवेन्द्र सिंह शक्तावत एवं पुत्र विंध्यराज सिंह शक्तावत ने अंतिम रस्में पूरी की।

निवास से मोक्षधाम के लिए निकली यात्रा के दौरान गली-मौहल्ले के बाहर खड़े लोगों ने अश्रुपूरित नेत्रों से शक्तावत को अंतिम विदाई दी।

राज्यपाल कलराज मिश्र, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास, विधानसभाध्यक्ष डॉ. सी. पी. जोशी, पूर्व

गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया, राष्ट्रीय प्रवक्ता पवन खेड़ा, गोपाल कृष्ण शर्मा, पूर्व प्रदेश सचिव पंकज शर्मा सहित अनेक नेताओं एवं विभिन्न संस्थाओं ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट, चिकित्सा मंत्री डॉ. रघु शर्मा, सीडब्ल्यूसी सदस्य रघुवीर मीणा, कैबिनेट मंत्री उदयलाल आंजना, परिवहन मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास, पीसीसी उपाध्यक्ष महेन्द्रजीत सिंह मालवीय, विधायक हेमाराम चौधरी, सुरेश मोदी, मसूदा विधायक राकेश पारीक, विराटनगर विधायक हरीश मीणा, खेरवाड़ा विधायक दयाराम परमार, दौसा विधायक मुरारीलाल मीणा, सुरेश मोदी, बी. आर. खटाना, पी. आर. मीणा, वेदप्रकाश सोलंकी, श्री माधोपुर विधायक दीपेन्द्र सिंह शेखावत, पूर्व विधायक प्रकाश चौधरी, विवेक कटारा, दिनेश श्रीमाली, सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत, पूर्व विधायक रणधीर सिंह भीण्डर, सांसद सी पी जोशी, जिला प्रमुख ममता पंवार, पूर्व विधायक गौतम दक, श्रीचंद कृपलानी, चंद्रभान सिंह आक्या, कलेक्टर चेतन देवड़ा, एसपी राजीव पचार सहित कांग्रेस व अन्य राजनीतिक दलों के वरिष्ठ नेता उनके अन्तिम संस्कार में मौजूद थे।

शक्तावत अपने पीछे व्यथित हृदय पत्नी श्रीमती प्रीति कुंवर, बड़े भ्राता देवेन्द्र सिंह, पुत्र विंध्यराज सिंह, पुत्रियां हितैषी व गौरवी सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

यह माह आपके लिए शुभ रहेगा। संतान पक्ष की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होने के साथ आपकी भाग्यवृद्धि में सहायक सिद्ध होगा। शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति के साथ-साथ प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। ससुराल पक्ष से लाभ। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

वृषभ

वैवाहिक सम्बन्धों में बाधाएं संभव, सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी, धन का सुनियोजित निवेश करें, रुका हुआ कार्य पूरा होने की संभावना है। भूमि तथा शेयर सौदे लाभकारी होंगे, स्थाई सम्पत्ति पर खर्च होगा, श्वास रोगी को ज्यादा सावधानी बरतने की आवश्यकता है, आय पक्ष उत्तम रहेगा।

मिथुन

आय प्राप्ति के नए योग, स्वास्थ्य में सुधार अपेक्षित है। लेखन, पत्रकारिता तथा शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों को प्रबल लाभ की संभावना, प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्ति की संभावना, माह के मध्य यात्रा का योग बनेगा, जीवन साथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, अविवाहितों के विवाह योग बनेंगे, संतान पक्ष श्रेष्ठ।

कर्क

व्यय की अधिकता रहेगी, सम्पत्ति पर वाद-विवाद से कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगाने पड़ सकते हैं, रुका हुआ धन प्राप्त होगा, स्थाई सम्पत्ति का क्रय-विक्रय भी सम्भव, मातृ पक्ष से लाभ की संभावना, जल्दबाजी एवं क्रोध पर नियंत्रण रखें। विद्यार्थियों को शिक्षा एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी।

सिंह

कोई नया काम प्रारंभ कर सकते हैं। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा प्रशासनिक कार्यों में सफलता मिलेगी। अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें, हड्डियों से संबंधित कष्ट हो सकता है। माह के मध्यान्तर में दुर्घटना या वाद-विवाद की प्रबल संभावना, पुराने मित्रों के सहयोग से लाभ मिलेगा। जीवन साथी से मतभेद हो सकता है।

कन्या

आय के नये स्रोत बनेंगे। लेखन एवं फिल्म जगत से जुड़े लोगों को लाभ, घर से दूर रोजगार की तलाश पूरी होगी। बच्चों एवं किसी शुभ कार्य पर खर्च की संभावना, सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि, माह का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिए श्रेष्ठ, परन्तु उत्तरार्द्ध में सावधानी आवश्यक।

तुला

स्वभाव में चिड़चिड़ापन, जीवन साथी का सहयोग मिलेगा, चोट-मोच लगने की संभावना, वाहन चलाने में सावधानी बरतें, घर की सुख-सुविधाओं में वृद्धि, आय की अपेक्षा व्यय अधिक होने की संभावना, पुरुषार्थ से कार्यों में सिद्धी एवं भाग्य में वृद्धि होगी। आत्मसंयम रहना श्रेष्ठकर होगा। शेयरों में सावधानी से निवेश करें।

माह के प्रमुख उत्सव

दिनांक	तिथि	पर्व/त्योहार
11 फरवरी	माघ अमावस्या	मौनी अमावस्या
16 फरवरी	माघ शुक्ल पंचमी	बसंत पंचमी
19 फरवरी	माघ शुक्ल सप्तमी	शिवाजी जयन्ती, देवनारायण ज.
23 फरवरी	माघ शुक्ल एकादशी	बेणेश्वर मेला प्रारम्भ
25 फरवरी	माघ शुक्ल त्रयोदशी	विश्वकर्मा जयन्ती
27 फरवरी	माघ पूर्णिमा	होलिकारोपण, गुरु रविदास ज.

वृश्चिक

खर्च की अधिकता, कर्ज बढ़ने की संभावना, धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, यात्रा के योग बनेंगे, राजनैतिक महत्वाकांक्षा पूरी होगी, भाइयों का सहयोग प्राप्त होगा, प्रोपर्टी क्रय-विक्रय से लाभ, कार्यों में रुकावटें आ सकती हैं, धैर्य से काम लें। माता के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें, संतान सुख उत्तम।

धनु

कार्यों में जल्दबाजी से बचें, मित्र-बांधव से धोखे की संभावना, खर्च पर नियंत्रण रखें। धनागम होगा, परन्तु रुकेगा नहीं। प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। जीवन साथी का भरपूर सहयोग, पैतृक सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है, स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

मकर

कार्यस्थल पर सतर्कता बरतें, वाद-विवाद हो सकता है, स्वास्थ्य का ध्यान रखें, प्रेम में धोखा हो सकता है। माह का उत्तरार्द्ध विशेष फलदायी होगा एवं लाभान्वित होंगे, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी, सन्तान की असफलताओं से निराशा, मानसिक परेशानियां प्रकट हो सकती हैं, आलस्य से बचें।

कुम्भ

पुराने मित्र के सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे। नौकरी में पदोन्नति, कला, संगीत एवं फैशन के क्षेत्र में लाभ प्राप्ति, अनियोजित खर्च, प्रोपर्टी क्रय-विक्रय से लाभ, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नौकरी की तलाश वाले जातकों को मेहनत करनी होगी, शासकीय कार्य पक्ष में रहेंगे।

मीन

धैर्यशीलता में कमी, मान-सम्मान प्रतिष्ठा में वृद्धि, धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, लेखन एवं बौद्धिक कार्यों से लाभ मिलेगा। जीवन साथी के साथ वैचारिक भिन्नता से मनमुटाव सम्भव, नौकरी में तरक्की एवं कार्य क्षेत्र का विस्तार होगा। संतान पक्ष से सुखद समाचार, लम्बित कार्य पूर्ण होंगे।

राजकवि राव मोहन सिंह को मरणोपरांत डिलिट

उदयपुर। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ(डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय) उदयपुर का 12वां दीक्षांत समारोह 29 दिसम्बर को ऑनलाइन हुआ। इसमें मेवाड़ के अंतिम राजकवि राव मोहन सिंह को पृथ्वीराज रासो के सम्पादन एवं अनुवाद के लिए मरणोपरांत डि. लिट की उपाधि प्रदान की गई। उपाधि कवि राव के प्रपौत्र नरेन्द्र सिंह एवं गजराज सिंह ने प्राप्त की। कुलपति प्रो. बलवंत एस. जॉनी ने कहा कि विद्यापीठ ने नई शिक्षा नीति लागू करने का काम शुरू कर दिया है। इसमें संस्कृति रक्षण और धरोहर को सुरक्षित रखने पर जोर दिया जाएगा। मुख्य वक्ता साहित्यकार डॉ. राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी ने कहा कि लोकभाषा में बिखरे पड़े साहित्य को सहेज कर सम्पादित और प्रकाशित करने का काम अत्यन्त दुष्कर है जिसे राज राव मोहन सिंह जैसे विद्वान ही कर सकते हैं। समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने बताया कि सिंह के अधूरे पड़े साहित्य प्रकाशन के काम को पूरा करने में 3 साल का समय और लगेगा। समारोह को गोविन्द गुरु जनजाति विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा के पूर्व कुलपति प्रो. कैलाश सोडाणी, डॉ. उग्रसेन राव ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर राजस्थान विद्यापीठ के कुल प्रमुख भंवरलाल गुर्जर, रजिस्ट्रार डॉ. हेमशंकर दाधीच, पीजी डीन प्रो. जी.एम. मेहता सहित कई पदाधिकारी मौजूद थे।

ज्वैलरी फेस्ट का दीपावली ड्रा

उदयपुर। सोजतिया ज्वैलरी फेस्ट का दीपावली ड्रा कोर्ट चौराहा स्थित सोजतिया ज्वैलर्स पर ग्राहकों की मौजूदगी में बड़ाला क्लासेस के सीए राहुल बड़ाला एवं सोजतिया ज्वैलर्स के निदेशक डॉ. महेन्द्र सोजतिया ने खोला। इस बार सातवीं कार नरेन्द्रपाल सिंह के नाम खुली। नेहल सोजतिया ने बताया कि हाल ही में शोरूम पर गोल्डन वॉलेट स्कीम लॉन्च की गई है, जिसके अन्तर्गत ग्राहक पुराना सोना जमा करवा कर 10 माह बाद बिना किसी मेकिंग चार्ज के 916 हॉलमार्क की नई ज्वैलरी प्राप्त कर सकते हैं।

सावित्री फुले जयंती पर शिक्षिका दिवस

उदयपुर। भारत की प्रथम महिला शिक्षिका व समाज सुधारक सावित्री बाई फुले की जयंती पर 3 जनवरी को पुरोहितों की मादड़ी में सावित्री बाई फुले जयंती समारोह समिति की ओर से महिला शिक्षिका दिवस आयोजित किया गया। संस्थान निदेशक दिनेश माली ने बताया कि मुख्य अतिथि गिर्वा प्रधान श्रीमती सज्जन कटारा व विशिष्ट अतिथि हरिलाल सालवी थे। अध्यक्षता हरकलाल चांगवाल ने की। कार्यक्रम में महिला प्रतिभाओं का सम्मान किया गया।

वॉयलिन-बांसुरी के सुरों ने किया आल्हादित

उदयपुर। 58वें अखिल भारतीय महाराणा कुम्भा संगीत समारोह की शुरुआत ऑनलाइन प्लेटफार्म पर 25 दिसम्बर को हुई। पहले दिन कथक प्रस्तुत हुई, इसमें नृत्य, वाद्य यंत्रों की जुगलबन्दी ने संगीत प्रेमियों को आनन्दित किया। महाराणा कुम्भा संगीत परिषद की ओर से शुरू हुए समारोह में जयपुर के प्रोजेक्ट गंगानी दल ने कथक प्रस्तुति दी। इसमें वाद्य व नृत्य के साथ चेहरे की भाव-भंगिमा और लय ताल का संगम देखने को मिला। शुरुआत में दल ने शिव स्तुति के बोल 'शंकर अति प्रचण्ड नाचत कर डमरू बाजे...' पर शानदार प्रस्तुति देकर सभी का मन मोह लिया। तबले पर मोहित गंगानी, निषिध गंगानी, गायन में विजय परिहार, पखावज पर आशीष गंगानी, नृत्य में संजीत गंगानी, ईत्सा नरूला, कंचन नेगी व अश्मिता आयच ने सहयोग दिया। इससे पूर्व जयपुर के उदियमान कलाकार यतीन्द्र सक्सेना ने कथक प्रस्तुति दी। प्रारम्भ में परिषद के मानद सचिव डॉ. यशवंतसिंह कोठारी ने आयोजन की जानकारी दी। दूसरे दिन 26 दिसम्बर को मुंबई की प्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका अर्चिता भट्टाचार्य के भजन व गजल का समागम हुआ। संगीत प्रेमियों ने प्रस्तुतियों को खूब सराहा। उपाध्यक्ष डॉ. प्रेम भण्डारी ने बताया कि अर्चिता भट्टाचार्य ने कार्यक्रम की शुरुआत राग शुद्ध सारंग में विलम्बित खयाल व मध्य लय की दो बंदिश से की। इससे पूर्व कुंभा संगीत रत्न से पुरस्कृत जयपुर के उभरते शास्त्रीय गायक सौरभ वशिष्ठ का शास्त्रीय गायन हुआ। अंतिम दिन 27 दिसम्बर को मुंबई की प्रसिद्ध वॉयलिन वादक पद्मभूषण एन. राजम, उनकी पौती रागिनी शंकर के वॉयलिन वादन से रंग जमाया। बूंदी के प्रसिद्ध तबला वादक हरिकृष्ण वर्मा व उदयपुर की उदीयमान कलाकार भारती सिसोदिया के बांसुरी वादन ने रोमांचित किया।एन. राजम की पौत्री रागिनी शंकर ने भी वॉयलिन पर साथ दिया। वॉयलिन वादन का समापन राग भैरवी से किया। तबले पर अजित पाठक ने संगत की। बांसुरी वादक भारती सिसोदिया ने राग वृंदावनी सारंग में विलम्बित, मध्य एवं द्रुत लय में प्रस्तुति दी। तबले पर पंकज बनावत ने संगत की।

मेवाड़ी पंचांग का विमोचन

चित्तौड़गढ़। चित्तौड़गढ़ अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लि. के प्रधान कार्यालय में निर्माण सोसायटी कपासन द्वारा प्रकाशित नववर्ष के मेवाड़ी पंचांग-2021 का बैंक के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. आई. एम. सेठिया के मुख्य आतिथ्य एवं चेयरपर्सन श्रीमती विमला सेठिया की अध्यक्षता में विमोचन किया गया।

सेठिया ने कहा कि मेवाड़ी भाषा अपनी आंचलिक संस्कृति से जुड़ी होने के कारण मानव समाज में श्रेष्ठ संस्कार पैदा करती है। इस भाषा में मेवाड़ की भक्ति, शक्ति, त्याग और बलिदान की गाथा का गहरा जुड़ाव है। मुख्य वक्ता डॉ. सुशीला लड्ढा ने कहा कि जब तक आंचलिक भाषा और संस्कृति का पुनर्उत्थान नहीं होगा तब तक हम अपने पुराने इतिहास को सुरक्षित नहीं रख सकेंगे। समारोह अध्यक्ष विमला सेठिया ने मेवाड़ी साहित्य निर्माण में सोसायटी द्वारा किये जा रहे कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम को प्रान्तीय मुख्य निदेशक मुकेश योगी, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. केशव पथिक एवं प्रबन्ध निदेशक श्रीमती वन्दना वजीरानी ने भी सम्बोधित किया।

एसबीआई की केशवनगर में नई ब्रांच

उदयपुर। शहर के केशवनगर में भारतीय स्टेट बैंक की नई शाखा का शुभारंभ गत दिनों एसबीआई के महाप्रबंधक (दक्षिणी राजस्थान) शिव ओम दीक्षित ने किया। दीक्षित ने ग्राहकों को बैंक द्वारा प्रदत्त सभी उत्पादों एवं सेवाओं के बारे में बताया। इस अवसर पर प्रशासनिक कार्यालय के उप महाप्रबंधक दिनेश प्रताप सिंह तोमर एवं क्षेत्रीय व्यावसायिक कार्यालय उदयपुर के क्षेत्रीय प्रबंधक अमरेन्द्र कुमार सुमन व शाखा प्रबंधक प्रतीक जैन उपस्थित थे।

एजुकेशन वर्ल्ड रैंकिंग में सीपीएस अव्वल

उदयपुर। एजुकेशन वर्ल्ड मैग्जीन की ओर से अवार्ड ऑन विल्स कार्यक्रम के तहत स्कूल रैंकिंग में न्यू भूपालपुरा स्थित सेन्ट्रल पब्लिक सी सै स्कूल, उदयपुर में प्रथम, राजस्थान में तृतीय व देशभर में 26वें स्थान पर रहा। सीपीएस ने लगातार तीसरे वर्ष यह उपलब्धि हासिल की। कार्यक्रम में फ्लिपलर्न के क्षेत्रीय प्रबंधक विकास खण्डेलवाल ने विद्यालय की चेयरपर्सन अलका शर्मा को सम्मान प्रदान किया।

परिणय सूत्र में बंधे 11 निर्धन व दिव्यांग जोड़े

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के लियो का गुड़ा स्थित मुख्यालय पर संस्थान की ओर से आयोजित 35वें सामूहिक विवाह समारोह में दिव्यांग और वंचित वर्ग के 11 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे। संस्थान परिसर में सजे भव्य पांडाल में पंडितों के मंत्रोच्चार के बीच जोड़ों ने सात फेरे लिए। इसके बाद दानदाताओं ने सभी विवाहित जोड़ों के लिए कन्यादान के रूप में घरेलू उपकरण और उपहार स्वरूप वस्तुएं भेंट की। जोड़ों को नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक कैलाश मानव ने भी आशीर्वाद प्रदान किया। कोविड-19 गाइडलाइंस की पालना में समारोह में केवल माता-पिता, सीमित संख्या में रिश्तेदारों को ही प्रवेश दिया गया। संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि संस्थान के प्रयासों से 2098 जोड़े सुखी और संपन्न वैवाहिक जीवन बिता रहे हैं।

नि:शुल्क रेटिना शिविर

उदयपुर। तारा संस्थान के तारा नेत्रालय में पिछले दिनों नि:शुल्क रेटिना जांच शिविर आयोजित किया गया। उद्घाटन जेआर नागर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस एस सारंगदेवोत ने किया। संस्थान अध्यक्ष कल्पना गोयल ने बताया कि तारा नेत्रालय में प्रतिमाह में एक बार रेटिना रोगियों की नि:शुल्क जांच की जाती है। इस अवसर पर सीओ दीपेश मित्तल व निदेशक विजयसिंह चौहान भी मौजूद थे।

हिन्दी आशुलिपि पुस्तक का विमोचन

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक डॉ. कैलाश मानव ने गत दिनों तारा संस्थान के विजय सिंह चौहान द्वारा लिखित 'हिन्दी आशुलिपिक उच्च गति वर्धक वाक्यांश' नामक पुस्तक का विमोचन किया। इस दौरान डॉ. मानव ने कहा कि आशुलिपि सीखना अपने आप में कठिन कार्य है। नव प्रकाशित पुस्तक में 8000 से अधिक नवीन रेखा कृतियों के साथ ही कोरोना से संबंधित रेखा कृतियों को भी सम्मिलित किया है। कार्यक्रम में तारा संस्थान की अध्यक्ष कल्पना गोयल व सीओ दीपेश मित्तल भी उपस्थित थे।

होंडा एक्टिवा के दो नए मॉडल लॉन्च

उदयपुर। होंडा मोटर साईकिल इंडिया प्रा. लि. ने अपनी 20वीं वर्षगांठ के अवसर पर होंडा एक्टिवा के दो मॉडल बाजार में लांच किए। ब्लेक व ब्राउन रंग के साथ आकर्षक गोल्डन एलबम, गोल्डन ग्राफिक्स और ब्लेक इंजन, पहियों के साथ उदयपुर में होंडा के अधिकृत विक्रेता लेकसिटी होंडा, टाउनहॉल रोड और रतनदीप होंडा, हिरणमगरी, सेक्टर 4 शोरूम पर उपलब्ध है। लॉंचिंग के बाद 4 वाहनों की डिलीवरी दी गई।

जेके टायर ने जीता नेशनल वाटर अवार्ड

उदयपुर। टायर बनाने वाली प्रमुख कंपनी जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लि. को ऊर्जा के उपयोग में अपनी अग्रणी स्थिति बनाये रखने एवं कार्बन फुटप्रिंट कम करने के बेहतर प्रयासों को देखते हुए कंफेडरेशन ऑफ इंडियन इण्डस्ट्री(सीआईआई) से दो प्रतिष्ठित पुरस्कारों के साथ सम्मानित किया गया। कांकरोली स्थित जेके टायर के प्लांट को जल संरक्षण के क्षेत्र में '3एम' अप्रोच-मेजर, मॉनिटर एण्ड मैनेजमेन्ट के उत्कृष्ट प्रयासों हेतु नेशनल वाटर अवार्ड से सम्मानित किया गया। वहीं कंपनी के चेन्नई स्थित प्लांट को 2015 से लगातार छठी बार 'एनर्जी एफिशियेन्ट यूनिट' को खिताब मिला है। इसके अलावा प्लांट ने सीआईआई द्वारा 21वें नेशनल अवार्ड फॉर एक्सीलेंस इन एनर्जी मैनेजमेन्ट 2020 फोरम के दौरान 'नेशनल एनर्जी लीडर' पुरस्कार के लिए भी क्वालिफाई किया है। जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लि. के मैन्युफैक्चरिंग डायरेक्टर अनिल मक्कड़ ने कहा कि जेके टायर ने कार्बन फुटप्रिंट कम करने और संसाधनों के बेहतर उपयोग के लिये अपने प्रयासों से अन्य उद्योगों के लिए भी नए मापदंड स्थापित किए हैं। इसके अलावा प्लांट के 4 पॉइंट्स में वर्षाजल संचय के पॉइंट्स लगाए गए हैं, जिससे तालाब के पानी की खपत 620 केएलडी से घटकर 348 केएलडी हो गई और ताजे पानी के कुल उपयोग में वर्षाजल की खपत 13.6 प्रतिशत बढ़ी है।

इन्दिरा आईवीएफ के 94वें सेन्टर की शुरूआत

उदयपुर। संतानहीन अभिभावकों को संतान सुख दिलाने की दिशा में कार्य करने वाली देश की सबसे बड़ी फर्टिलिटी चेन इंदिरा आईवीएफ ने नोएडा के सेक्टर 18 स्थित कॉम्पलेक्स नम्बर 17 में नए सेन्टर की शुरूआत की। ग्रुप के चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया ने बताया कि इंदिरा आईवीएफ मे नि:संतानता का इलाज अत्याधुनिक तकनीक और विशेष प्रशिक्षण प्राप्त चिकित्सकों की टीम करती है। इंदिरा आईवीएफ ग्रुप का उत्तरप्रदेश में 14वां और देश में 94वां सेन्टर नोएडा में खुला है। ग्रुप के सीईओ डॉ. क्षितिज मुर्डिया ने कहा कि हमारा उद्देश्य संतान की चाह रखने वाले हर दंपती को रियायती दरों पर उच्चस्तरीय आईवीएफ उपचार मुहैया करवाना है ताकि वे संतान सुख पा सकें।

डॉ. तुक्तक कोरोना वॉरियर के रूप में सम्मानित

उदयपुर। फर्स्ट इंडिया न्यूज की ओर से कोरोना वॉरियर्स को सम्मानित करने के लिए उदयपुर में सेल्यूट फर्स्ट कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर पीटीआई संवाददाता एवं जार के जिला अध्यक्ष डॉ. तुक्त भानावत को उदयपुर सांसद अर्जुनलाल मीणा, संभागीय आयुक्त विकास सीताराम भाले, जिला कलेक्टर चेतन देवड़ा, रवीन्द्रनाथ टैगोर मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. लाखन पोसवाल, नगर निगम के उपमहापौर पारस सिंघवी और कांग्रेस के पंकज कुमार शर्मा ने शॉल, उपरना एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। डॉ. रवि शर्मा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

जीएसटी पर पुस्तक का विमोचन

उदयपुर। सीए यशवंत मंगल की जीएसटी व कस्टम्स पर लिखी पुस्तक का पिछले दिनों नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया, मावली विधायक धर्मनारायण जोशी, पूर्व मेयर

चन्द्रसिंह कोठारी, यशवंत कोठारी, दिनेश कावड़िया, पूर्व नपा चेयरमेन फतह नगर कल्याण सिंह पोखरना, नरेन्द्र सिंह आसोलिया, नितिन सेठिया, अशोक मोर, विनोद धर्मावत, मांगीलाल सांखला, ऋतु अग्रवाल ने विमोचन किया।

डॉ. व्यास को बाल साहित्य पुरस्कार

उदयपुर। उदयपुर निवासी पूर्व शिक्षा उपनिदेशक एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. श्याम मनोहर व्यास को उनकी कृति 'एक लाख का दोहा' बाल लोककथा के लिए डॉ. परशुराम शुक्ल द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार के अन्तर्गत उन्हें नगद राशि एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि डॉ. व्यास के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से लेखन प्रकाशित होने के साथ-साथ विविध विधाओं में सौ पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

चौबीसा एवं मूंदड़ा जार की प्रदेश कार्यकारिणी में सदस्य मनोनीत

उदयपुर। जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान(जार) की प्रदेश कार्यकारिणी के जयपुर में गत दिनों हुए चुनाव में उदयपुर के भूपेन्द्र कुमार चौबीसा एवं मुकेश मूंदडा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मनोनीत किए गए। सहायक चुनाव अधिकारी रिछपाल पारीक ने बताया कि चुनाव में हीरावल्लभ मेघवाल को पुन: निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया जबकि कार्यकारिणी में दीपक शर्मा प्रदेश महासचिव और राजेन्द्र कुमार न्याती को प्रदेश कोषाध्यक्ष चुना गया।

गुजराती समाज की बैठक

उदयपुर। गुजराती समाज उदयपुर के मंगल हॉल में पिछले दिनों साधारण सदस्यों की बैठक हुई। जिसमें वरिष्ठजन तथा कक्षा 10 व 12 के छात्रों को मेरिट के अनुसार सम्मानित किया गया। गुजराती समाज में कैन्टीन निर्माण के लिए गुजराती समाज ट्रस्ट बोर्ड के अध्यक्ष नयन गांधी ने अनुदान देने की घोषणा की। बैठक में गुजराती समाज अध्यक्ष नानजीभाई पटेल, सचिव राजेश बी मेहता, कोषाध्यक्ष जयेश जोशी, गुजराती समाज ट्रस्ट बोर्ड के चेयरमैन नयन गांधी, गुजराती समाज ट्रस्ट बोर्ड के उपाध्यक्ष रमेश पटेल आदि मौजूद थे।

सुषमा अध्यक्ष, रागिनी महासचिव

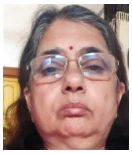

उदयपुर। रोटरी क्लब वसुधा द्वारा 2021-22 के लिए नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। क्लब अध्यक्ष मीना मंडोत ने बताया कि डॉ. सुषमा अरोड़ा अध्यक्ष एवं गरिमा बोर्दिया को सचिव मनोनीत किया गया।

साहू अध्यक्ष, कंडा संरक्षक

उदयपुर। बापू बाजार व्यापारी संघ के चुनाव चेम्बर ऑफ कॉमर्स के मंत्री सुरेन्द्र बाबेल के निर्देशन में 1 जनवरी को सम्पन्न हुए। इसमें सर्वसम्मति से सुखलाल साहू निर्विरोध अध्यक्ष चुने गए। वहीं सुखचैन सिंह कण्डा को संरक्षक व नरेन्द्र जैन को महामंत्री बनाया गया।

चित्तौड़ा ने बनाई छोटी पतंग

उदयपुर। शहर के प्रसिद्ध सूक्ष्म पुस्तिका निर्माता चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा ने मकर संक्राति के अवसर पर कागज की विश्व की सबसे छोटी पतंग बनाई। जो 9 नम्बर की सुई के छेद से भी निकल जाती है। चित्तौड़ा ने इसे विश्व की सबसे छोटी पतंग होने का दावा करते हुए विश्व रिकॉर्ड बुक के लिए अपना दावा पेश किया है। चित्तौड़ा ने बताया कि मात्र 1 × 1 मिमी की पतंग में लकड़ी का ठड्डा, चंद्राकार, फूंदा भी बनाकर लगाया। इसे लेंस की सहायता से देखा जा सकता है।

उदयपुर सिटी सोसायटी ने कलेक्टर से की सौन्दर्यीकरण पर चर्चा

उदयपुर। शहर के विकास के मुद्दों पर निरंतर मंथन कर उसे अमलीजामा पहनाने के लिए प्रयास करने वाली उदयपुर सिटीजन सोसायटी ने जिला कलेक्टर से मुलाकात करते हुए शहर के सौन्दर्यीकरण पर संक्षिप्त चर्चा की और अपना दृष्टिकोण रखा। सोसायटी अध्यक्ष क्षितिज कुम्भट ने बताया कि उदयपुर सिटीजन सोसायटी से शहर के प्रबुद्धजन जुड़े हैं जो शहर के चहुंमुखी विकास के विषयों पर निरंतर मंथन करते हैं। इस मौके पर सचिव कमल नाहटा, पीयूष कच्छावा, गणपत अग्रवाल, सुनील लड्ढा आदि भी मौजूद थे।

रेलवे स्टेशन पर भोजनालय का शुभारंभ

उदयपुर। आईआरसीटीसी की ओर से 15 जनवरी को रेलवे स्टेशन पर कोरोना के बाद से बंद भोजनालय का शुभारंभ किया गया। उद्घाटन नन्हीं बालिका व क्षेत्रीय अधिकारी मुकेश श्रीवास्तव ने किया। आईआरसीटीसी की ओर से खानपान अधीक्षक अजयसिंह, करणसिंह, स्टेशन अधीक्षक मुकेश जोशी, आरपीएऊ थाना प्रभारी प्रमिला मीणा उपस्थित रहे। भोजनालय शुरू होने के बाद यात्रियों को भोजन के लिए परेशान नहीं होना पड़ेगा।

बक्शी जिला टेनिस एसोसिएशन के अध्यक्ष

उदयपुर। उदयपुर जिला टेनिस एसोसिएशन के चुनाव कृषि महाविद्यालय के 10 जनवरी को हुए। चुनाव अधिकारी सुविवि के खेल अधिकारी डॉ. दीपेन्द्र सिंह चौहान ने बताया कि इसमें चौथी बार सुधीर बक्शी अध्यक्ष और दीपांकर चक्रवर्ती मानद सचिव चुने गए।

प्रवीण सुथार राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

उदयपुर। लोटस हाईटेक इण्डस्ट्री के निदेशक व युवा उद्यमी प्रवीण सुथार को राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं बाल विकास आयोग ट्रस्ट का उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। इस दौरान संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष गोविन्द जांगिड़ मौजूद रहे। संगठन के राष्ट्रीय महासचवि एवं पूर्व राज्य मंत्री असरार अहमद खान ने बताया कि संगठन सामाजिक स्तर पर आमजन से जुड़े कार्य के साथ ही समाज में फैली बुराइयों की रोकथाम के लिए कार्य करेगा।

कमल जीतो उदयपुर चेप्टर के मुख्य सचिव

उदयपुर। जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन (जीतो) के उदयपुर चेप्टर के नवनिर्वाचित अध्यक्ष राज सुराणा ने कमल नाहटा को मुख्य सचिव मनोनीत किया है। इसी के साथ मार्गदर्शक व कार्यकारी परिषद की भी घोषणा की गई। वर्ष 2020-22 के लिए मार्गदर्शक परिषद में 18 सलाहकार शामिल किए गए हैं। जीतो प्रवक्ता डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि अध्यक्ष राज सुराणा ने कार्यकारी परिषद में निवर्तमान अध्यक्ष शांतिलाल मेहता सहित उपाध्यक्ष पद पर दिलीप तलेसरा, पीयूष मारू, शांतिलाल वेलावत, मुख्य सचिव पद पर कमल नाहटा, सचिव पद पर सीए प्रतीक हिंगड़, श्रुति खींचा, सीए प्रीति नाहर, कोषाध्यक्ष पद पर सीए राजेन्द्र जैन को शामिल किया गया है। परिषद में अर्जुनलाल खोखावत, अनिल नाहर, आलोक पगारिया, दिनेश जैन, देवेन्द्र कच्छारा, निर्मल पोखरना, नितुल चंडालिया, राजेश खमेसरा, राजेश जैन, राजेश खमेसरा (द्वितीय), प्रतीक नाहर सदस्य चुने गए हैं।

विनोद अध्यक्ष, मनीष महामंत्री मनोनीत

उदयपुर। महावीर युवा मंच संस्थान की साधारण सभा की 15 जनवरी को हुई बैठक में मुख्य संरक्षक राजकुमार फत्तावत ने आगामी 2021-22 के लिए विनोद फान्दोत को अध्यक्ष एवं मनीष गलुण्डिया को महामंत्री मनोनीत किया गया। अध्यक्ष फान्दोत ने कार्य समिति का विस्तार करते हुए रमेश दोशी एवं कीर्ति जैन को उपाध्यक्ष, राकेश छाजेड़, आत्मप्रकाश जैन सहमंत्री, दीपेश जैन को कोषाध्यक्ष व अभिषेक संचेती को अंकेक्षक मनोनीत किया गया।

डॉ. वसीम बने अध्यक्ष

उदयपुर। फैडरेशन ऑफ राजस्थान टीचर एजुकेशन कॉलेज की साधारण सभा की बैठक में डॉ. वसीम खान को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। वहीं डॉ. प्रभात शर्मा को संगठन मंत्री का दायित्व दिया। इस उपलब्धि के लिए दीक्षा इंटरनेशनल बचपन प्ले स्कूल की निदेशक नीमा खान सहित पदाधिकारियों ने बधाई दी।

बाल कल्याण पुस्तिका का विमोचन

उदयपुर। जिला बाल कल्याण समिति की ओर से प्रकाशित पुस्तिका का विमोचन कलेक्टर चेतन राम देवड़ा और जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव रिद्धिमा शर्मा ने किया। बाल संरक्षण के लिए कार्यरत कार्यकर्ताओं ने प्राधिकरण सचिव का अभिनंदन किया। पुस्तिका का संपादन जिला बाल कल्याण समिति अध्यक्ष ध्रुव कुमार काव्या की ओर से किया गया। एडिशनल एसपी दिनेश सिंह, डीवाईएसपी चेतना भाटी, उपनिदेशक सामाजिक न्याय अधिकारिता विभाग मानदाता सिंह, सहायक निदेशक मीना शर्मा की मौजूदगी रही। इस मौके पर अजीत पांड्या, के के चंद्रवंशी, बीना मेहरचंदानी, भरत पूर्बिया को सम्मानित किया गया। नगर निगम पार्षद गिरिश भारती, संस्था संचालक भोजनराज सिंह मौजूद थे। संचालन महीप डीडी चारण ने किया।

शोक समाचार

उदयपुर। गोगुन्दा के पूर्व प्रधान देवीसिंह झाला का 30 दिसम्बर को आकस्मिक निधन हो गया। वे 94 वर्ष के थे। देहात जिला कांग्रेस कमेटी के निवर्तमान अध्यक्ष लालसिंह झाला के पिता देवीसिंह झाला गोगुन्दा में कांग्रेस के आधार स्तम्भ रहे। वे तीन बार प्रधान एवं सरपंच रहे। उनके निधन पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी. पी. जोशी, सीडब्ल्यूसी सदस्य रघुवीर मीणा, उदयपुर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के निवर्तमान अध्यक्ष गोपाल कृष्ण शर्मा एवं पूर्व प्रदेश सचिव पंकज कुमार शर्मा ने दु:ख व्यक्त किया है।

उदयपुर। जड़ियों की ओल निवासी शहर जिला कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ नेता श्री पुरूषोत्तम जी जोशी का 17 जनवरी को आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री, डॉ. गिरिजा व्यास, उदयपुर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गोपाल कृष्ण शर्मा, पूर्व प्रदेश सचिव पंकज कुमार शर्मा सहित अनेक राजनीतिक संगठनों के नेताओं ने उनके निधन पर गहरा दु:ख व्यक्त किया। जोशी अपने पीछे पुत्री रंजना एवं पौत्र-पौत्रियों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

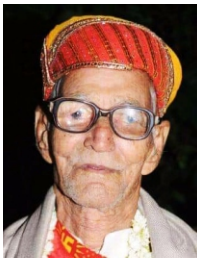

उदयपुर। नगर निगम में पूर्व नेता प्रतिपक्ष दिनेश श्रीमाली के पिता श्री भंवरलाल जी श्रीमाली (दुर्गावत) का 3 जनवरी को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र दिनेश, कुन्दनलाल, भगवती प्रसाद, ललित, राजेन्द्र तथा पौत्र-पौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। सरदारपुरा निवासी डॉ. वल्लभदास पारीख की धर्मपत्नी श्रीमती इन्दुदेवी पारीख का 20 दिसम्बर को निधन हो गया। धर्मपरायण श्रीमती इन्दुदेवी अपने पीछे पुत्र जयेश एवं रितेश, पुत्री प्रीति सहित पौत्र-पौत्रियों एवं दोहित्री का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। जीवन्ता चिल्ड्रन हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. सुनील एम. जांगिड़ की माताजी श्रीमती चंदा देवी जांगिड़ का 26 दिसम्बर को निधन हो गया। वे अपने पीछे एक पुत्र एवं पुत्रियां संतोष, मैना, तुलसी एवं सुनीता सहित पौत्र-पौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। स्वतंत्रता सेनानी स्व. कनक मधुकर की पुत्रवधु एवं प्रमुख चिकित्साविद् डॉ. नवनीत कुमार अग्रवाल की धर्मपत्नी श्रीमती शोभा(मंजू) अग्रवाल का दिनांक 10 जनवरी को निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र अंकित एवं पुत्री गुंजन का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। एडवोकेट विमल कालानी की धर्मपत्नी श्रीमती वनिता कालानी का गत 24 दिसम्बर को निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र ध्रुव सहित सगे-सम्बन्धियों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। सेवानिवृत्त लेखाधिकारी श्री सज्जनलाल जी संगावत का 24 दिसम्बर को निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र प्रदी व अनिल तथा पुत्रियां ज्योति, मीनू सहित पौत्र-पौत्रियों एवं दोहित्र का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए।

उदयपुर। केशवनगर निवासी सप्तम प्रतिमाधारी ब्रह्मचारिणी श्रीमती मोहन बाई जी का 2 जनवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पुत्र अंकुर एवं कमल तथा पुत्री ज्योत्सना का भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। मावली निवासी धर्मपरायण श्रीमती लेहरी बाई का गत 7 जनवरी को निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र कन्हैयालाल व कृष्णगोपाल (सरपंच व पूर्व उपप्रधान) तथा पुत्री दुर्गा का भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। आयड़ निवासी शहर के प्रमुख व्यवसायी एवं वरिष्ठ कांग्रेसी नेता श्री नरेश चित्तौड़ा(तितरड़िया) का 16 जनवरी को आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन पर विभिन्न स्वयंसेवी एवं राजनीतिक संगठनों की ओर से शोक व्यक्तकिया गया। चित्तौड़ा अपने पीछे पत्नी डॉ. प्रमिला चित्तौड़ा एवं पुत्री हिमानी का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।।

उदयपुर। वरिष्ठ कांग्रेसी नेता एवं राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य सुरेश श्रीमाली के भ्राता रावजी का हाटा निवासी श्री नाथूलाल जी श्रीमाली का 18 जनवरी को निधन हो गया। वे अपने पीछे मनीष एवं दीपक तथा पुत्री ज्योति सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

भारत टेंकर ट्रांसपोर्ट कम्पनी

प्रोपराईटर : पंडित लक्ष्मीनारायण गौड़

पण्डित एण्ड संस कोन्ट्रेक्टर्स

सभी प्रकार के एसिड व केमीकल के ट्रांसपोर्टेशन का कार्य टेंकरों द्वारा समस्त भारत में करते हैं।
भारी मशीनरी व एक्सीडेन्टल गाड़ियों को उठाने के लिये क्रेनें हर समय उपलब्ध रहती हैं।
हैवी अर्थमूविंग मशीनें (टाटा-हिटाची, एल. एण्ड टी.-सी.के.-90, पोकलेन, डोजर, डम्पर) किराये पर उपलब्ध हैं।

35—ए, सेन्ट्रल एरिया, आवरी माता मंदिर के सामने, उदयपुर (राज.)
दूरभाष : 2584501, 2583334 (ऑ.) 2584502 (नि.) केबल : पंडित जी

ब्रांच : बडौदा, वापी, अंकलेश्वर

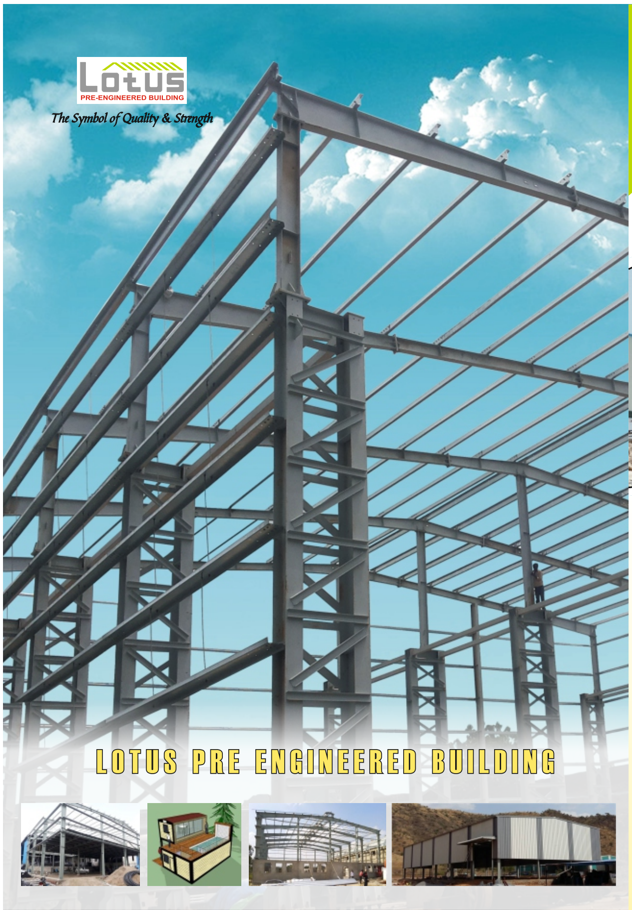

Quality, Honesty & Integrity Guaranteed

Lotus
PRE-ENGINEERED BUILDING

The Symbol of Quality & Strength

w w w . l o t u s h i t e c h . c o m

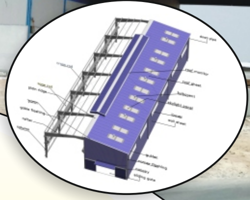

We are specialised with experience in the field of Structural Work of Pre Engineered Building System

We Provide :

- PEB
- Turnkey solution for Industries
- Machinery / Side work
- Interior & Exterior
- Manufacturing & Supplier
- Erection services

Lotus hi-tech Industries

An ISO 9001 : 2015 Certified Company

F-34 A, Road No.5, M.I.A., Madri, Udaipur (Raj.) 313003
Phone : 9001970333, Mob.:9314141715, 9829048372
E-mail : lotusremson@gmail.com, Website : www.lotushitech.com

TMTL

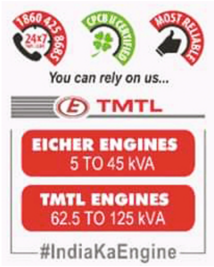

TMTL
SOLAR

PROGRESSIVE SOLAR AND POWER SOLUTIONS PVT. LTD.

Group Company of SACHIN MOTORS PVT. LTD & SUBHASH MOTORS

46-A, Panchwati, Opp. Div. Commissioner Office, UDAIPUR - 313 001 (Raj.)

Mobile: 9619281494, E-mail : sachinsinghvi@gmail.com

Sandeep
Director
94142 45355

Kapil
Director
77377 07447

D.S. Paneri
Director
92146 88612

Quality in Reasonable Price

All Kind of Home Furniture

SHUBHAM FURNITURE PLAZA

An ISO 9001-2008 Certified Co.

Tekri Madri Main Road, Near 100 Fit Subcity Centre Road, Udaipur (Raj.)

E-mail: shubham.furnitureplaza@gmail.com

SUPER™ ROLL FORMING

+91 9829023969
+91 93525 03186

SUPER Rollforming

www.superrollforming.com

ROLLFORMING MACHINE EXPERT

Raw Material Available

All type and Sizes Raw Material Strip Coils and Bottom Plates are Available

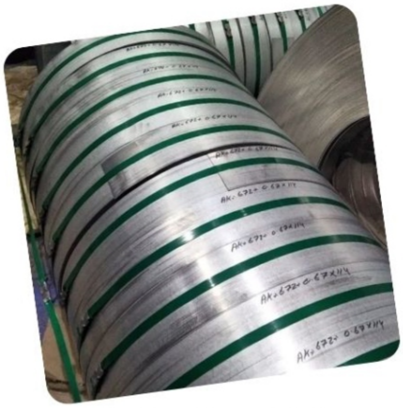

Shutter Strip Coils

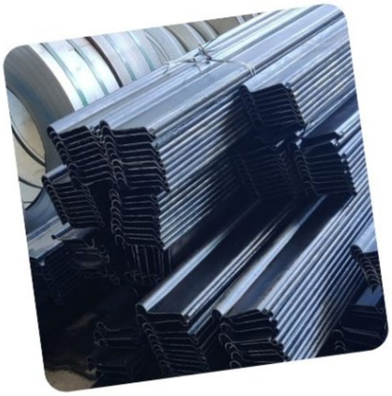

Super Bottom

MSME
MICRO, SMALL & MEDIUM ENTERPRISES
सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम

Mob: +91 9829023969 ,+91 93525 03186
27, Jhariya Marg Hathipole, Udaipur(Raj.)313001
Email: superrollforming@gmail.com info@superrollforming.com
www.superrollforming.com www.superrollforming.in

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय)

GRADE 'A' ACCREDITED BY NAAC

सरस्वती देवयन्ते हवन्ते

प्रतापनगर उदयपुर – 313001 (राजस्थान) फोन एवं फैक्स : 0294–2492440

E-mail : admissions@jrnrvu.edu.in

प्रवेश प्रारम्भ 2020-21

Admission for session 2020-21

NAAC Accredited 'A' Grade University

FIRST TIME IN UDAIPUR

- **B.Sc. (Data Science)** — 3 Years
- **PG Diploma in Data Science** — 1 Year

ALSO RUNNING SINCE 1996

- **BCA** — 3 Years
- **MCA** — 2 Years
- **M.Sc. (CS)** — 2 Years
- **PGDCA** — 1 Year

● Scholarship as per the state government & university norms.

Department of Computer Science & IT

Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth (Deemed-to-be University)

Airport Road, Pratap Nagar, Udaipur (Raj.) - 313001

Established Under Section 3 of the UGC Act. 1956 vide Notification no. F.9-5/84-U3, Dated: 12.01.1987 of Govt. of India

dcsit.jrnrvu@gmail.com | www.jrnrvu.edu.in

Prof. Manju Mandot Director - 9414737125

9829588286 | 9461260408 | 9928025433 | 9829935072

SHIVA

FACULTY OF MANAGEMENT STUDIES

Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth (Deemed-to-be University)

NAAC Accredited 'A' Grade

Airport Road, Pratap Nagar, Udaipur-313001 (Raj.)

ADMISSION NOTIFICATION : 2020-21

MBA — MASTER OF BUSINESS ADMINISTRATION

AN AICTE APPROVED PROGRAMME, SINCE - 1996

MHRM — MASTER OF HUMAN RESOURCE MANAGEMENT

Applications are invited for admission in MBA and MHRM regular programmes.

SEATS : MBA-60 Seats & MHRM 30 Seats. Reservation as per norms.

ELIGIBILITY	:	Graduation in any discipline
For MBA	:	At least 50% marks for General category & 45% for SC/ST/ OBC.
For MHRM	:	At least 48% marks for General category & 43% for SC/ST/ OBC.
ADMISSION FORM	:	By Rs. 500/- Cash from office between 10.00 am to 5.00 pm.

Note : (1) Those who are awaiting final year result of graduation and CAT/CMAT / MAT appeared may also apply.
(2) Scholarship to ST / SC / OBC / Minority as per Govt. norms.
(3) Specialization offered in Marketing, Finance, Human Resource, Production and Operations, International Business, Retail, I.T., Agri. Business, Family Business.
(4) MBA dual specialisation can also be persued.

Contact : - 0294-2490632, 9461260408, 9414161889, 9782049628, 9001556306

SHIVA

विज्ञान संकाय (FACULTY OF SCIENCE)

माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय

टाउन हॉल रोड़, उदयपुर – 313001 (राजस्थान)

प्रवेश प्रारम्भ

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय)
(NAAC से 'A' ग्रेड प्राप्त विश्वविद्यालय)

प्रवेश प्रारम्भ

विश्व स्तर पर हुई सभी विश्वविद्यालयों की यूनी रैकिंग–2020 में

प्रथम स्थान उदयपुर संभाग में	**7वां स्थान राजस्थान में** 70 विश्वविद्यालयों में से	**142वां स्थान भारत में** 873 विश्वविद्यालयों में से

B.Sc. स्नातक

● भौतिक शास्त्र, गणित, रसायन शास्त्र Physics, Mathematics, Chemistry	● भौतिक शास्त्र, गणित, कम्प्यूटर विज्ञान Physics, Mathematics, Computer Science
● भौतिक शास्त्र, गणित, सांख्यिकी Physics, Mathematics, Statistics	● वनस्पति शास्त्र, प्राणि शास्त्र, रसायन शास्त्र Botany, Zoology, Chemistry
● जैव प्रौद्योगिकी, प्राणि शास्त्र, रसायन शास्त्र Biotechnology, Zoology, Chemistry	● जैव प्रौद्योगिकी, वनस्पति शास्त्र, रसायन शास्त्र Biotechnology, Botany, Chemistry

M.Sc. स्नातकोत्तर — रसायन शास्त्र, गणित, भौतिक शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, प्राणि शास्त्र (Chemistry, Mathematics, Physics, Botany, Zoology)

SHIVA

सम्पर्क करें : डॉ. रक्षित आमेटा (निदेशक), मो. 9461179656, 9461109371

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय), उदयपुर

(NAAC द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त विश्वविद्यालय)

माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय

टाउन हॉल रोड़, उदयपुर – 313001 (राजस्थान)

विधि संकाय

बार काउंसिल ऑफ इण्डिया द्वारा मान्यता

SHIVA

विश्व स्तर पर हुई सभी विश्वविद्यालयों की यूनी रैकिंग–2020 में

प्रथम स्थान उदयपुर संभाग में	**7वां स्थान राजस्थान में** 70 विश्वविद्यालयों में से	**142वां स्थान भारत में** 873 विश्वविद्यालयों में से

पाठ्यक्रम	B.A. LL.B.	LL.B.	LL.M.	CYBER LAW PGDCL	LAW & FORENSIC SCIENCE PGDLFS	LABOUR LAW PGDLL
अवधि	5 वर्ष/10+2	3 वर्ष	2 वर्ष	1 वर्ष	1 वर्ष	1 वर्ष

सम्पर्क करें : 9414343363, 7014201473 Email : law.college@jrnrvu.edu.in

Note : For more information about the admission in various courses like minimum percentage, fee structure etc. please go through our website **www.jrnrvu.edu.in**, respective prospectus or contact concerned department

रजिस्ट्रार